हिन्दी–गोंड़ी (कांकेर) एवं संस्कृत

कक्षा – 3

सत्र 2019–20

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढे एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे → **App** की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता **Profile** का चयन करें।

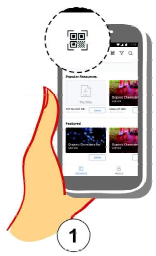

1 पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

2 मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

3 सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

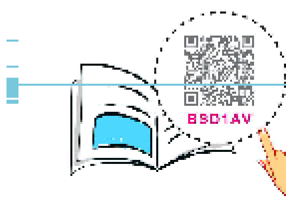

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

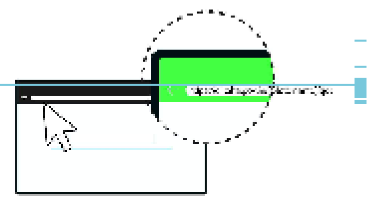

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

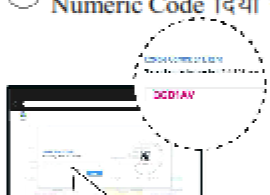

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

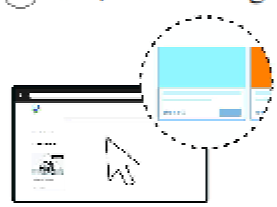

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

प्रकाशन वर्ष 2019

मार्गदर्शन

डॉ. हृदयकांत दीवान, विद्या भवन, उदयपुर

संयोजक

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

मुख्य समन्वयक

श्री आर. के. वर्मा

विषय समन्वयक

बी. आर. साहू, विद्या डांगे

लेखक मण्डल

हिंदी	गोंडी (कांकेर क्षेत्र)	संस्कृत
डॉ. सी.एल.मिश्र, बी. आर. साहू, दिनेश गौतम, विनय शरण सिंह, गजानन्द प्रसाद देवांगन, शोभा शंकर नागदा, प्रीति भट्टनागर,	शेरसिंह आचला, चन्द्रकुमार ध्रुव, बालाराम सिन्हा, लेखसिंह कुलदीप, देवसिंह दर्रो, मनीष हिड़को, सुगदू पोटाई, सोमारूराम गावड़े, प्रेमसिंह कुमेटी, कु. मनोत्री उसेण्डी श्री एस.एल. ओगरे	डॉ. सुरेश शर्मा, बी.पी. तिवारी,(समन्वयक) डॉ. कल्पना द्विवेदी, ललित कुमार शर्मा, डॉ. संध्यारानी शुक्ला, डॉ. राजकुमार तिवारी

चित्रांकन

राजेन्द्र सिंह ठाकुर, रेखराज चौरागड़े, समीर श्रीवास्तव, प्रशांत, गिरिधारी साहू

आवरण पृष्ठ एवं ले–आउट

रेखराज चौरागड़े

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

प्राक्कथन

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़, रायपुर को सत्र 2002–03 में छत्तीसगढ़ शासन की ओर से प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम तैयार करने तथा उस पर आधारित पाठ्यपुस्तकों की रचना करने का दायित्व सौंपा गया। यह निर्णय भी लिया गया था कि नवरचित पाठ्यपुस्तकों का दो वर्षो तक राज्य के विभिन्न अंचलों के चयनित विद्यालयों में क्षेत्र–परीक्षण किया जाएगा और फिर विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रधान अध्यापकों, पालकों और विषय विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर उनमें संशोधन उपरांत राज्य के समस्त विद्यालयों हेतु उपलब्ध कराया जाएगा। तदनुसार सत्र 2007–08 से कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक को राज्य के समस्त विद्यालयों में अध्ययन हेतु उपलब्ध कराया जा रहा है।

इस पुस्तक को अंतिम रूप देते समय विषय के विशेषज्ञों द्वारा क्षेत्र के विद्यालयों में भ्रमण कर विद्यार्थियों, शिक्षकों और भाषा के अन्य विशेषज्ञों से चर्चा की गई और विद्यार्थियों के ज्ञान के स्तर, शिक्षकों तथा समुदाय से प्राप्त सुझावों को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक संशोधन, परिवर्तन किया गया है।

भाषा–शिक्षण का मूल उद्देश्य है–सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान, भाषा प्रयोग तथा सृजनात्मकता का विकास करना। इस पुस्तक में इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति करने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक के द्वारा हमने विद्यार्थियों को साहित्य की विभिन्न विधाओं–निबंध, कहानी कविता, पत्र, आत्मकथा, एकांकी आदि से परिचित कराया है। साहित्य की इन विधाओं का परिचय उनकी अभिरुचि को परिष्कृत करके उनको श्रेष्ठ साहित्य के अध्ययन की ओर प्रेरित करेगा, यह हमारा विश्वास है।

इस पुस्तक में जिन विचारों और मानवीय मूल्यों पर अधिक बल दिया गया है उनमें पारस्परिक सद्भाव, सामाजिक सहयोग, साहस, पर्यावरण चेतना को विशेष स्थान दिया गया है। पुस्तक को स्तरानुकूल और रोचक बनाने में राज्य तथा राज्य के बाहर के अनेक शिक्षकों, विद्वानों, शिक्षाविदों का महत्वपूर्ण योगदान है। पाठों के चुनाव करने में हमें डॉ. हृदयकान्त दीवान विद्याभवन, उदयपुर एवं प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली का विशेष रूप से मार्गदर्शन मिला है। परिषद् उनके बहुमूल्य सहयोग के लिए आभारी है। लेखक मंडल के सदस्यों ने जिस कर्मठता और लगन से इस पुस्तक को अंतिम रूप प्रदान किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। पुस्तक में जिन कवियों/लेखकों की रचनाएँ संकलित की गई हैं, हम उनके या उनके उत्तराधिकारियों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षाविदों द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों से कुछ बातें

शिक्षक मित्रो! हिंदी कक्षा–3 आपके हाथ में है। यों तो इसका प्रायोगिक संस्करण वर्ष–2005–06 में ही प्रकाशित हो गया था, किंतु वह राज्य के मात्र दो सौ विद्यालयों में ही प्रचलन में था। क्षेत्र परीक्षण के दौरान विद्यार्थियों को आई कठिनाइयों, अपने राज्य के तथा राज्य के बाहर के शिक्षाविदों तथा राज्यस्तरीय पाठ्यपुस्तक समिति के सुझावों के उपरांत प्रायोगिक संस्करण में आवश्यक सुधार करके प्रस्तुत संस्करण का स्वरूप प्रदान किया गया है। फलस्वरूप वर्तमान संस्करण में आपको काफी परिवर्तन दिखाई पड़ेगा।

इस संस्करण में हमने गतिविधियों पर काफी बल दिया है। प्रत्येक पाठ को पढ़कर विद्यार्थी परस्पर मौखिक प्रश्न पूछें और उनके उत्तर दें। इससे विद्यार्थियों में प्रश्न गढ़ने की कला विकसित होगी और पाठों के प्रति उनकी समझ विकसित होगी। विद्यार्थियों के परस्पर प्रश्नोत्तर के बाद आप भी कुछ मौखिक प्रश्न उनसे पूछें। इससे आपको भी यह परीक्षण करने का अवसर मिलेगा कि विद्यार्थी पाठ को आत्मसात कर पाए हैं या नहीं।

अभ्यास में दिए गए प्रश्न कई तरह के हैं। कुछ प्रश्न तो सीधे–सीधे सूचना आधारित प्रश्न हैं, जो सीधे पाठ से खोजे जा सकते हैं; कुछ प्रश्न कार्य–कारण संबंध वाले हैं तथा कुछ अन्य प्रश्न कल्पना व सृजनात्मकता वाले हैं। ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने में बच्चों को सोचना पड़ेगा; अतः ऐसे प्रश्नों से वे अधिक सीख सकेंगे। बच्चों को सोचने के लिए प्रोत्साहित करें। इसी प्रकार के प्रश्नों के उत्तर यदि बच्चे अपनी भाषा में दें या लिखें तो अच्छा है।

विद्यार्थियों के उच्चारण पर भी आप ध्यान दें। विद्यार्थी बहुधा श–स; छ–क्ष, र, ऋ के उच्चारण में भेद नहीं कर पाते। इन वर्णों से बने शब्दों का अधिक–से–अधिक उच्चारण कराएँ। निरंतर अभ्यास से उच्चारण दोष अवश्य दूर होते हैं।

यही प्रक्रिया शब्दार्थ के संबंध में भी अपनाई गई है। शब्द का अर्थ विद्यार्थी की समझ में आ गया, यह तभी सही माना जाएगा, जब विद्यार्थी उस शब्द को वाक्य में प्रयोग कर सकेगा। बच्चे इन शब्दों का उपयोग कर जितने वाक्य बता सकेंगे उतना ही अच्छा है।

उच्चारण दोष के साथ–ही–साथ विद्यार्थियों के वर्तनी संबंधी दोषों को दूर करने के लिए श्रुतिलेखन पर भी प्रस्तुत पुस्तक में बल दिया गया है। श्रुतिलेख की जाँच के लिए बच्चों को परस्पर एक दूसरे की अभ्यासपुस्तिका देखने को दें। ये अभ्यासपुस्तिकाएँ बच्चे आपके मार्गदर्शन में देखेंगे। इससे उन्हें शब्दों के शुद्ध और अशुद्ध रूप को पहचानने में सहायता मिलेगी। श्रुतिलेख के द्वारा बच्चों को सुधार लेख लिखने का भी अभ्यास होगा।

योग्यता–विस्तार के अंतर्गत कुछ ऐसे अभ्यास दिए गए हैं जिनमें बच्चों की सृजनशीलता का विकास होगा। ये अभ्यास अलग– अलग प्रकार के हैं, जैसे कहीं बच्चों से ढूँढ़कर या पूछकर या सोचकर कुछ लिखने को कहा गया है। कहीं चित्र या टिकटें या पत्तियाँ संग्रह करने को कहा गया है; कहीं किसी पक्षी या पशु के बिंदु–चित्र से उसका पूरा चित्र बनाने के लिए कहा गया है; कहीं किसी घटना का कक्षा में या बालसभा में वर्णन करने को कहा गया है। ऐसे क्रियाकलापों से बच्चों का

रचनात्मक और सृजनात्मक विकास होगा। समय–समय पर कक्षा या बालसभा में वादविवाद, अंत्याक्षरी, चित्र–निर्माण आदि का आयोजन करने से या उन्हें ऐतिहासिक स्थलों पर भ्रमण करवाने और उस पर लेख लिखवाने के क्रियाकलापों से भी बच्चों की क्षमताओं का विकास होगा। आपको यह देखना है कि इन क्रियाकलापों में सभी विद्यार्थियों की सहभागिता रहे। शिक्षण के क्षेत्र में पाठ्यपुस्तक, सहायक सामग्री तथा अन्य शैक्षिक गतिविधि कोई भी इतना सुझाव नहीं दे सकती जितना एक सुयोग्य शिक्षक दे सकता है। वह शिक्षक ही है जो, नीरस विषयवस्तु को सुगम और सरस बना देता है। हमें विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक के शिक्षण में राज्य के सभी संबंधित शिक्षक अपनी इस प्रतिभा का सही उपयोग करेंगे।

प्रत्येक शिक्षक अपने ढंग से शिक्षण–पद्धति को अपनाता है। शिक्षण की उसकी अपनी शैली रहती है। फिर भी हम अपेक्षा करते हैं कि हमारे इन सुझावों पर आप विचार करेंगे और यदि इन सुझावों को उपयोगी समझें तो अवश्य अपनाएँगे।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

विषय–सूची

हिंदी

क्र.	पाठ	पृष्ठ
	हिन्दी	
1.	सीखो	1–4
2.	सच्चा बालक	5–9
3.	कांयकेर जिल्लालंग खड़कंग अन् गोद्रंग (गोंड़ी कांकेर)	10–16
4.	बंदर बाँट	17–22
5.	मीठे बोल	23–25
6.	कबूतर और मधुमक्खियाँ	26–30
7.	चाँद का कुरता	31–35
8.	गेहगेड़ मुद्यल अन मूस्क्ना मया (गोंड़ी कांकेर)	36–41
9.	आदिमानव	42–46
10.	चुहिया की शादी	47–51
11.	दादा जी	52–56
12.	हाथी	57–62
13.	मावा क्कोटुम (गोंड़ी कांकेर)	63–67
14.	कौन जीता	68–71
15.	मैं हूँ महानदी	72–76
16.	अगर पेड़ भी चलते होते	77–80
17.	असुर्र मुद्याल (गोंड़ी कांकेर)	81–86
18.	जंगल में स्कूल	87–90
19.	तेल का गिलास	91–95
20.	अब बतलाओ	96–101
21.	हट्टोंग (गोंड़ी कांकेर)	102–105
22.	क्या तुम मेरी अम्मा हो?	106–110
23.	कविता का कमाल	111–117
24.	बालसभा	118–120
	पुनरावृत्ति के प्रश्न	121–125
	संस्कृत	126–138
	राजू की कहानी	i–xvi

पाठ 1

सीखो

प्रकृति की वस्तुओं से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। फूल हमें हँसना सिखाते हैं, भौंरे गुनगुनाना और दीपक हमें जलकर भी प्रकाश देना सिखाता है। हमें चाहिए कि हम प्रकृति की चीजों से सदा कुछ सीखते रहें।

फूलों से नित हँसना सीखो,
भौंरों से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से नित
सीखो शीश झुकाना।।

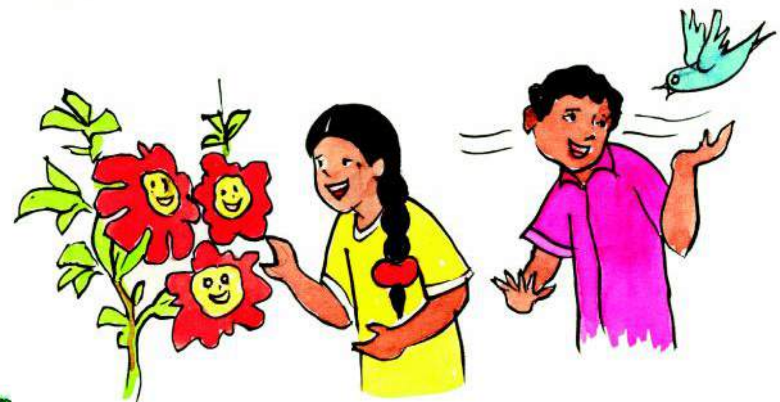

सीख हवा के झोंकों से लो
कोमल भाव बहाना।
दूध तथा पानी से सीखो
मिलना और मिलाना।।

सूरज की किरणों से सीखो
जगना और जगाना।
लता और पेड़ों से सीखो
सबको गले लगाना।।

मछली से सीखो, स्वदेश
के लिए तड़पकर मरना।
पतझड़ के पेड़ों से सीखो,
दुख में धीरज धरना।।

दीपक से सीखो जितना
हो सके अँधेरा हरना।
पृथ्वी से सीखो प्राणी की
सच्ची सेवा करना।।

जलधारा से सीखो, आगे
जीवन–पथ में बढ़ना।
और धुएँ से सीखो हरदम
ऊँचे ही पर चढ़ना।।

शब्दार्थ

तरु	=	पेड़, वृक्ष	धीरज	=	धैर्य
शीश	=	सिर	स्वदेश	=	अपना देश
नित	=	रोज			

नीचे कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर लिखो।

जलधारा – ————————————
हरदम – ————————————
पथ – ————————————

(हमेशा, रास्ता, बहता पानी)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. फूलों से हम क्या सीख सकते हैं?
प्र.2. सूरज की किरणें हमें क्या संदेश देती हैं ?
प्र.3. दीपक दिन–रात जलकर हमें क्या सिखाता है ?
प्र.4. जलधारा हमें क्या सिखाती है ?

प्र.5. ये बातें हमें कौन सिखाता है?

क– जगना और जगाना

ख– मिलना और मिलाना

ग– नित्य गाना

घ– जीवन–पथ में आगे बढ़ना

ङ– हरदम ऊँचे पर ही चढ़ना।

प्र.6. दीपक हमें प्रकाश देता है, ये चीजें हमें क्या देती हैं ?

मधुमक्खी ....

पेड़ ....

मिट्टी ....

बादल ....

प्र.7. तुम रोज सुबह कितने बजे उठते हो ?

प्र.8. तुम घर के किन कामों में अपनी माँ या बड़ों की मदद करते हो ?

भाषा–अध्ययन एवं व्याकरण

- शिक्षक श्रुतिलेख के रूप में एक पद बोलेंगे, विद्यार्थी लिखेंगे। बाद में अभ्यास –पुस्तिकाएँ अदल–बदलकर विद्यार्थी जाँचेंगे।

प्र.1. इस कविता में आए उन शब्दों को लिखो, जिनकी तुक मिलती हो, जैसे बढ़ना–चढ़ना।

प्र.2. समान अर्थवाले शब्दों की जोड़ी बनाकर लिखो।

सुमन	पृथ्वी
वृक्ष	सूरज
वायु	फूल
रवि	पवन
धरा	तरु

प्र.3. पढ़ो, समझो और लिखो।

जगना	जगाना
मिलना	....
झुकना	....

योग्यता विस्तार

- **सोचो, यदि ऐसा हो तो क्या होगा?**
- हवा न बहे।
- सूरज न उगे।
- पेड़ न हों।
- दीपक जलकर रोशनी न करे।
- अपने आस–पास ध्यान से देखो कि वहाँ क्या–क्या है? फिर उनके नाम इस तालिका में लिखो। और उनमें से जो तुम्हें पसंद हो, उनके चित्र बनाओ ।

फूलों के पौधे	वृक्ष	लताएँ	जलधारा / नदी

शिक्षण–संकेत

- कविता को लय और गति के साथ पढ़ाएँ।
- दो–दो पंक्तियाँ अलग–अलग विद्यार्थियों से पढ़वाएँ और उनके अर्थ पूछें।
- प्रकृति के बारे में बच्चों से चर्चा करें एवं उनके अनुभव सुनें ।

3K25P1

पाठ 2

सच्चा बालक

यह पाठ गोपालकृष्ण गोखले के बाल – जीवन की एक घटना पर आधारित है, जिसमें उन्होनें अपनी सच्चाई का परिचय दिया । आगे चलकर उन्होने देश को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आओ, हम माननीय गोपाल कृष्ण गोखले के बाल–जीवन की यह घटना पढ़ें और इससे शिक्षा ग्रहण करें।

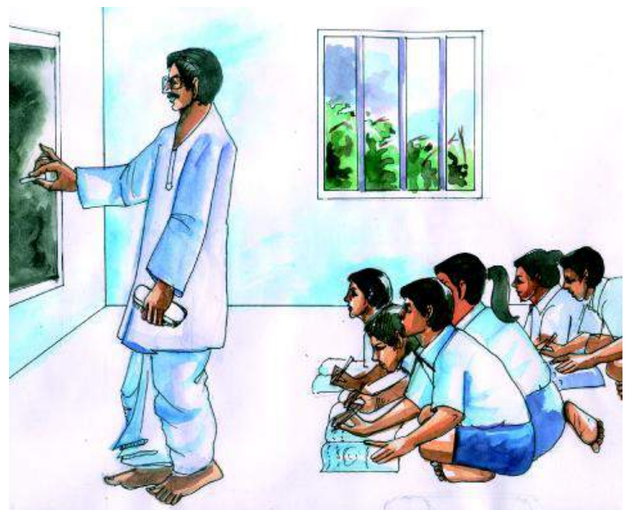

एक दिन गुरु जी ने अपनी कक्षा के बच्चों को गणित का एक प्रश्न दिया। बच्चे प्रश्न को उस समय हल नहीं कर पाए। गुरु जी ने कहा, '' अच्छा इसे घर से करके लाना।'' इसके बाद छुट्टी हो गई और सब बच्चे अपने–अपने घर चले गए।

अगले दिन जब बच्चे शाला में पहुँचे तो सबने अपना–अपना गणित का हल किया हुआ प्रश्न गुरु जी को दिखाया। गुरु जी ने प्रत्येक बच्चे का प्रश्न जाँचा, परंतु किसी का भी हल ठीक नहीं निकला। कुछ बच्चों ने तो प्रश्न को हल करने का प्रयत्न ही नहीं किया था।

जब सब बच्चे अपनी–अपनी कॉपी दिखा चुके तब गोपाल ने अपनी कॉपी दिखाई। प्रश्न का उत्तर ठीक था। गुरु जी प्रसन्न हो गए और गोपाल की प्रशंसा करने लगे। अपनी प्रशंसा सुनकर सभी खुश होते हैं, परंतु गोपाल के चेहरे पर उदासी छा गई। गुरु जी ज्यों–ज्यों उसकी प्रशंसा करते गए त्यों–त्यों उदासी बढ़ती गई। अपनी अधिक प्रशंसा सुनकर वह बालक फूट–फूटकर रोने लगा।

गोपाल को रोता देखकर गुरु जी और सभी बच्चे आश्चर्यचकित रह गए। तब गुरु जी ने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा, '' बेटा! तुम तो बहुत योग्य बच्चे हो, भला रो क्यों रहे हो?''

गोपाल सिसकियाँ भरते हुए कहने लगा, '' गुरु जी! आप मेरी प्रशंसा कर रहे हैं, किंतु यह प्रश्न मैंने अपने आप हल नहीं किया। यह तो मैंने अपने बड़े भाई से पूछकर हल किया था। मुझे अपनी झूठी प्रशंसा सुनकर दुख हो रहा है।''

गुरु जी ने गोपाल की बात सुनी तो उनका हृदय गद्‌गद् हो गया। उन्होंने उसकी सच्चाई की प्रशंसा करते हुए कहा, "बेटा, एक दिन तुम अवश्य अपना व अपने देश का नाम उज्ज्वल करोगे।"

बड़ा होकर वह बालक गोपाल कृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध हुआ। देश को स्वतंत्र कराने में गोखले जी का बहुत बड़ा योगदान रहा।

गोपाल कृष्ण गोखले

शब्दार्थ

योगदान	=	सहयोग
सपूत	=	अच्छा पुत्र
प्रसिद्ध	=	मशहूर
स्वतंत्र	=	आजाद
उज्ज्वल	=	स्वच्छ, साफ, चमकता हुआ

नीचे कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हुए हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर लिखो।

प्रयत्न = ————————

प्रत्येक = ————————

प्रशंसा = ————————

(तारीफ, कोशिश, हर एक)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. गुरु जी द्वारा अपनी प्रशंसा सुनकर गोपाल दुखी क्यों हुआ ?

प्र.2. गोपाल को सच्चा बालक क्यों कहा गया ?

प्र.3. गोखले जी क्यों प्रसिद्ध हुए ?

प्र.4. गोपाल की जगह तुम होते तो क्या करते ?

प्र.5. कोई तुम्हारी झूठी प्रशंसा करे तो तुम उससे क्या कहोगे ?

प्र.6. अपनी प्रशंसा सुनकर सभी बच्चे प्रसन्न होते हैं। इस संबंध में तुम्हारा क्या कहना है ?

प्र.7. इन वाक्यों को पाठ के अनुसार क्रम से लिखो।

क. गोपाल ने अपनी कॉपी दिखाई।

ख. गुरु जी ने प्रत्येक बच्चे की कापी जाँची।

ग. बड़ा होकर यह बालक गोपाल कृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

घ. गुरु जी ने उसकी सच्चाई की प्रशंसा की।

ङ. गुरु जी ने गणित का एक प्रश्न हल करने को दिया।

प्र.8. हर खाने में से एक–एक शब्द/शब्द–समूह लेकर वाक्य बनाओ।

सब	अपनी–अपनी	हल करने का	दिखाई।	
	कुछ बच्चों ने	स्वतंत्र कराने में	अपने–अपने घर	महत्वपूर्ण हाथ था।
	देश को	प्रश्न	कॉपी	प्रयत्न ही नहीं किया।
	सब बच्चों ने	बच्चे	गोखले जी का	चले गए।

प्र.9. सही जोड़ी बनाओ।

अ	आ
गुरु जी	फूट–फूटकर रोने लगा।
देश	का सवाल किसी ने हल नहीं किया।
गोपाल	स्वतंत्र हो गया।
गणित	प्रसन्न हो गए।

भाषा–अध्ययन एवं व्याकरण

प्र.1. पढ़ो, समझो और छाँटकर अलग–अलग तालिका में लिखो।

क्रम, प्रार्थना, कार्य, पूर्व, प्रशंसा, भ्रम, दर्शक, कर्म, नम्र, प्रकाश।

रेफ वाले शब्द	रकार वाले शब्द
जैसे – कर्म	जैसे– प्रकाश

प्र.2. इन शब्दों में से सही शब्द चुनकर लिखो।

प्रशंसा/प्रशंशा, गुरु जी/गुरू जी, प्रश्न/प्रशन, कॉपी/कौपी, अधिक/अधीक

प्र.3. 'पुनः' इस शब्द में अः (:) लगा हुआ है। दो ऐसे शब्द लिखो जिनमें : का प्रयोग होता है।

प्र.4. तुमने बारहखड़ी क,का,कि,की,कु,कू,के,कै,को,कौ,कं पढ़ी है। इन शब्दों को इसी क्रम में लिखो।

मीत, मेरा, मुझे, मौका, मोर, मंद, मैना, मत, मूठ, मिलना, मान।

प्र.5. इनका प्रयोग करते हुए खाली स्थान भरो और शब्द पूरे करो।

न, ना, नि, नी, नु, नू, ने, नै, नो, नौ, नं।

अ –क, – तिक, – म, – शानी, सु–, –का, – द, सु – गे, – कसान, – तन।

समझो

- नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ो–

क. गुरु जी ने प्रत्येक बच्चे का उत्तर जाँचा।

ख. गुरु जी गोपाल की प्रशंसा करने लगे।

ग. गोपाल कृष्ण गोखले ने देश की सेवा की।

'क' वाक्य में 'गुरु जी' और 'बच्चे' शब्दों का प्रयोग हुआ है। गुरु जी शिक्षक के लिए कहा गया है। 'ख' वाक्य में 'गोपाल' और 'प्रशंसा' शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'गोपाल' व्यक्ति का नाम है और 'प्रशंसा' भाव का। वाक्य 'ग' में 'देश' शब्द का प्रयोग हुआ है। यह स्थान का नाम है। वस्तु, व्यक्ति, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

प्र.6. क. दो व्यक्तियों के नाम लिखो, जैसे– राम, गीता आदि ।

ख. दो वस्तुओं के नाम लिखो, जैसे–कुर्सी मेज आदि ।

ग. दो स्थानों के नाम लिखो, जैसे – रायपुर,राजिम आदि ।

घ. दो भावों के नाम लिखो, जैसे – अच्छाई, भलाई आदि ।

प्र.7 इस पाठ में ज्यों–ज्यों, सों–सों, अपनी–अपनी जैसे शब्दों की आवृति वाले शब्दों का प्रयोग हुआ है। अब निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो–

अपना–अपना, जल्दी–जल्दी, सुबह–सुबह शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

रचना

- अपने आसपास की किसी ऐसी घटना के बारे में लिखो जो तुम्हें अच्छी लगी हो या अच्छी ना लगी हो।

योग्यता विस्तार

- अन्य महापुरुषों के बचपन की घटनाओं की जानकारी लो और कक्षा में सुनाओ।

3KJWSB

शिक्षण–संकेत

- पाठ का आदर्श वाचन करें और विद्यार्थियों से अनुकरण वाचन कराएँ।
- पठन–कौशल के विकास के लिए अतिरिक्त पाठ्य–सामग्री दें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ और उनका वाक्यों में प्रयोग कराएँ।
- महापुरुषों के बचपन की ऐसी ही घटनाएँ खोजने और कक्षा में सुनाने को कहें।

S25GNV

पाट – 3

कांयकेर जिल्लातंग खड़कंग अन् गोद्रंग

पड़हे कियहना ओड़ डगुरः–इद पाट ते कांयकेर जिल्ला तंग मट्टक डोड्क हूहक झरेनिंग कोहड़ंग पांजांना मुहरोत गढ़ेत तुन कोटलेंग टप्पिने वेहले आता।इद पाट ते मट्टक्ना, डोडक्ना अन पोर्रोडह अरानंग गोदर्रक्ना बारे ते मंता। जिल्ला तंग मट्टक,खड़कंग अन गोदर्रानह इगडा तयहा ता बूम ता बारे ते पुंदकट। इद पाट तह करियकटः– कोयतोरेकोप्पल्लो तंग अड़चेन टप्पिना अरेत् अन आचेर–आचेर तंग अद्दनंगे लेंगिनुंग चीने मास पड़हे कियाकट।

छत्तीसगढ़ राजते उन्द हुडिला जिला कांयकेर मन्ता। इगा कल्क अन मट्टक सपोय वड़का मन्तंग। मरा कोट्टुम अन हुडिलंग बहरंग डोडक कस्सक कोहड़ंग नेलिंग, डोलिंग, दिप्पक, वेडक जिल्ला ते मन्तंग। इगा पीड़ी–पीड़ी तह मानेय मंजा–कोयतोर, हल्बह, गांडोह, गूरूलोर अन सातो जात तोर सुमोत सुक ते आपुना जीवा ता जिन्गी तयहतह कमय कीसोर वायतोर। इगडा धरती यायानगा अन मट्टा गुट्टाते कच्च कल, सोनंन्क, चॅादिंग निंदिंतंग। इद जिल्ला मुने तहे कांयकेर राजता परोय ते नामजागी मंता। इगा हुल्किग, परंग, चिटकुड़, रेला, जतरा कर्रसड़, पेन पुरका ता हन्नुम तुन गिर्रदा ते मीलेमास मानमायतोर।

इद जिल्ला ते हुडिलंग बेहरंग कड़कंग अन गोदरंग हूड़वोन हूड़ वसनह,गिर्रदा लेवोन गिर्रदा कानप, आपुना वेड़का मोहेह् किययतंग। एर्र कन्यंह एन्दनप इव झरेनिंग, कड़कंग, गोदर्रनंग पोंगानानुंग वेहला अन तोहला इद पाट ते कोट्टले आता।

1. चर्रे–मर्रे

इद ठऊर कांयकेर जिल्ला सहर तह चालीस कोस इतेक, तिरानबे किलोमीटर लेक अन्तागढ़ तह सैंग कोस मट्टा प्योर्रो टिंगते मंता। उंदहूर मरा गुट्टा कोट्टुम अन कल्क हाकड़ी नह डोडता एर्र उस्सोर कड़सोर रेययता। चांदी पोंगनप दिसन्ता बोन हूड़ला सोबे मायो ? इगा एवला मट्टा तर्रगला तरास लेहका तल्ले–वक्ले सड़ेक तह मोटोहने,पटपटीने अन ताकसोर हन्दा लागयता। डोडाता एर्र पोंगसोर रेययता अचो पहर कड़का वहचयता हेरे गूरे सात कोस तह केन्जहयता।

तान हूड़ला छत्तीसगढ़ राजतोर कोटुह–कोटुहनोर मानेय वर्सुत बच्चो अन बच्चो मानेय वायतोर। इगा हूड़स गिर्रदा आयतोर। इदेक इगा सरकार डोडा अरमुरतह दोड़ रयला सिरमिटतंग पायटंग पंडसिता।चर्रे–मर्रे कड़का गोदर्रा दोड़ रेयस्स जोगीकसा तह पोंगसोर

कोतरी डोडा ते मीले मायता। चर्रे–मर्रे तुन हूड़तेक जीवा दड़दड़ा आयता। वायवा सुरता वायता अन अगय मनेना ते नेहना आयवर लेहका लागयता।

2.फुलपाड़

कांयकेर जिल्ला ता रक्सल वड़का रावघाटुम एजरेल एर्र मट्टा दोड़ इद कड़का गोदर्रा मंता। कांयकेर बस्तेर ता नामजागी कच कलदा मट्टा आन्द। इगा कच कल अन सोन्क चांदी, कुबैय मन्ता। ताना संगने इद मट्टा ते बट जानवोर माव्क, कोडर्रेह, चितरह, नीर्रेह, बुर्रकहनंग डेरक मंतंग।

कोहड़ा पांजा कल गुट्टा अन कोट्टुम ते आनिक बानिक नंग दवा दारू मन्ता। रावघाट मट्टा पोर्रो टिंग तह कोंडेंग एर्र पसीयस दोड़ पोंगयता। डेडा कोड़िंग मीटेर ता अडीय गोदर्रा दोसयता। अद हूड़ला सोबा हिययता। इगा अवला मट्टा तर्रग लागयता। मट्टा कुंडूम ओदा–ओदा ताकसोर हन्दला पड़यता। हनेक–हनेक काल बड़्स हतेक अडीय कोड़य्ते अरतेक पड़ेका गला गुंडा अरनह पताल खाही मन्ता कुंडूम। अग्गा उंद पांजा ते शिवलिंग बुढ़ाना थापना कीले मन्ता।

वर्सुत अगा शिवरात्री दिया हंज माने मायवालोर एर्र मिय्स् पूजा किययतोर।

3. मलांज कुडुम

कांयकेर शहर तह रक्सल वड़का सात–आट कोस लेक मट्टा ओड़वेल तह पोंगसोर पाल डोडा रेययता। अगा कल आदीने कड़का उस्सनत्ता मारे कल्क बूका आस मल्ला लेहका दिसयता। अद ठउर ते बस्के तो मलांज मीन गला मत्ता इंतोर। हदेनका अगा मलांज कुडुम परोय ते नार्र उदिता। अद मलांज कुडुम कड़का गोदर्रा हूड़ला सोबा हिययता। लेक–लेक तह मानेय अगा तान हूड़ला वायतोर। वत्तुर पहर अद कड़का गोदर्रा तो हूड़न्ना, सोबा नकय बरसयता। एर्र कन्यह डेह्कतप गोदर्रा उस्सन्नता मारे मूंड–मूंड कोस ते ताना कोल्हार केंजहयता। अगा हंज हूड़वाना मन मोहे मायता। अगय मनेना लेहका आयता। कयो मानेय अगा हंज तीहर माने–मानप अटनंग–तिंदनंग किययतोर।

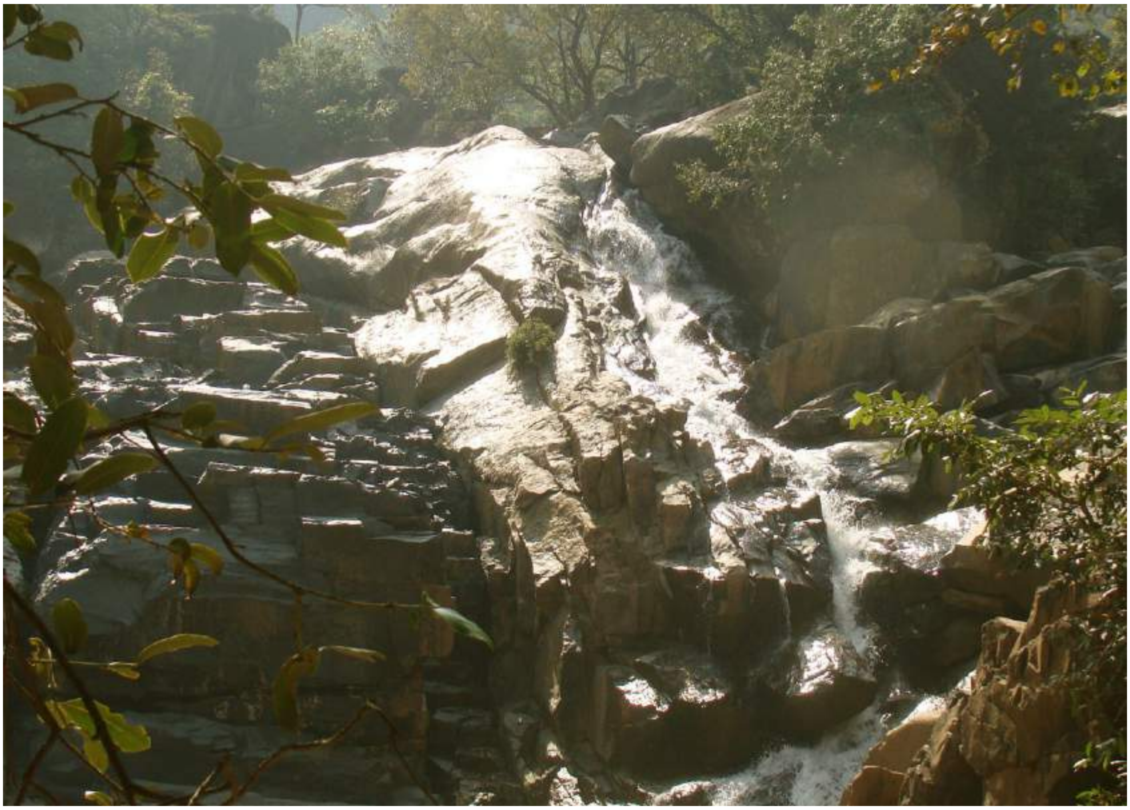

कांयकेर तह हेरेय मन्ता अदेनका शहेर तोर मानेय आटोकाल (बारो महना) हंजोर—वासोर मन्तोर। नामजागी ठउर आता, बानी बड़स्ता, लेक—लेक तोर मानेय केन्च—केन्च अगा हूड़ला दायतोर।

4. मुत्तेन कड़का

आमावेडा परगेन ते एट्टे गड़दा मट्टा टिंग्ग ओड़वेल तह बंडनपर्र तकेडह हुडिला डोडा पोंगसोर उन्द कोड़ोयते गोदर्रा उस्ससोर रेय्यता। ताना अडिय पर्रउंज पांजंग अन गोटुल कल्क मन्तंग। अगा हूड़ला चुज्जे(नेकान) सोबा हिय्यता, पुरखा दिया ते अगा तयहा तोर मानेय मत्तोर। अन अस्केडंगे कय डवला नंग सीनंग अन तारंग काल्कनंग कोज्जिग नतर्रल रंग ते मंतंग। इद कोड़ोय तुन पेन कोड़ोय इंतोर। आमावेडा परगन तोर मावली अन लिंगो पेन वल्लेकनाटह वास पीड़ी पूजंग हिय्यतोर। अन राजपुर बरहोतोर वर्सुत चरू

पूजा हिययतोर। इदम मट्टक,गड़दंग,डोडक अन कड़कनुंग कोयतोर मानेय पेन्क माने मायतोर। अदेना अव सत् परचो हिय्यतंग। अवेहकुन हेड़गड़ केवोर।

मति नेंड पिकनिक हन्नवलोर अगा हंज कल्कने आपुना परोइंग कोटय्तोर। प्लास्टिक–जिलिंग–पाउचिंग वाटयतोर इद नेहना आयो। पेन्क ठऊरिने कचड़गंद कियना आयो, अस्के अव कड़कंग गोदरंग साबुत मन्दनुंग अन पीड़ी–पीड़ी सोबा हीसोर मंदनुंग।

पड़हे कियहना ओड़ डगुरः– गुरूजी कांयकेर जिल्ला ता बारे ते वेह्च इद पाटतुन हड़क्ले लेंगते पड़हे कियनूर। पीलंग केंच इंदनुंग अन जिल्ला तंग बने–बने तंग सोबय हूड़नह मंदलेंग डेराकुन वेहन्नूर। हेरे गूरेतंग डोडक कोहड़ंग, हूह्क, झरेनिंग, कड़कंग गोदर्रानुंग तोहला ओयनूर।

टप्पिना अरेत् :–

हाकिड़	–	हिर्रप्ले,हिर्रपा।	पड़ेका	–	मर्रंग।
तलले–वक्ल	–	किकोट–कोकोट।	ठउर	–	डेरा।
वहचना	–	नेकना,गरजेमायना।	वर्सुत	–	वर्सा मेटे।
अरमुर	–	डोडा ओदा, कंडहोर।	कुंडुंम	–	कस्सा, कोहड़ा।
रक्सल वड़का	–	दोड़ बासा(लंका बेड़का)।	कुंडुंम	–	कस्सा, कोहड़ा।
आनिक बानिक	–	रंग रंगनंग,कयोटड।	थापना	–	मांडह कियना (गादी)।
मोहह कियना	–	आपुनके पिड़ंग्ना।	टिंग	–	मट्टा चूंदी, मट्टा पोर्रो।
आटोकाल	–	बारो मास,रोज दिया।	पांजा	–	आद डोडर्री, कल हिर्रपा।

जबान करिंयना

गोक् जबान :–

(क) कांयकेर जिल्ला तंग कड़का अन गोदर्रना परोय कोट्ट ?

(ख) चर्रे–मर्रे कड़का बद तयसिल दे मन्ता ?

(ग) कड़का नुंग हूड़ला बाक्या दायतोर ?

1. अडीय कोटलेंग टप्पिनंग जवाब कोट्ट।

(क) चर्रे–मर्रे कड़का गोदर्रा हुक्सोर पोंगन पहर बदम दिसयता ?

(ख) फुलपाड़ कड़का गोदर्रा बद्द मट्टा तह गोदर्रा दोसयता ?

(ग) चर्रे–मर्रे कड़का ता डोडा पोंगसोर बद–बद डोडा ते मिले मायता ?

(घ) रावघाट मट्टा प्योर्रो टिंगते बदम ना एर्र पसीय्स दोड़ पोंगयता ?

(ड.) मलांज कुंडुंम तुन मलांज कुंडुंम बदान्नेक इंतोर ?

(च) मुत्ते कड़का ता परऊंज आद ते बातंग–बातंग चीनंग मन्तंग ?

2. जबान – हीलेंग टप्पिनुंग पिस्ले डेरा ते निहट–

(मलांज कुंडुंम, कयो मानेय,एर्र कन्यंग, रावघाट, हूड़ना सोबा)

(क) चर्रे–मर्रे.............एन्दनप पाटा पार्रनप दिसयता।

(ख) कड़का गोदर्रा हूड़ला.................वान्तोर।

(ग) कांयकेर जिल्ला ता रक्सल वड़का...............मंता।

(घ) वत्तुर पहर अद कड़का गोदर्रा ते..............नक्कय बरसयता।

(ड.) पिकनिक माने माला वायतोर..................अद कांयकेर तह हेरे मन्ता।

3. जबान – जोड़ कटलेनुंग मीलह कीम्ट –

चर्रे–मर्रे	–	रावघाट।
फुलपाड़	–	आमावेडा।
मुत्ते कड़का	–	कांयकेर।
मलांजकुंडुंम	–	अन्तागढ़।

4. जबान–इदमे मिया हेरेतंग हूड़लेंग कड़कंग अन गोदर्रा ना पोरीइंग ते कोट्स ततकीट?

अकल बड़स्हना :– आपुना जिल्ला कांयकेर तंग कड़कंग अन गोदर्रा नंग चीना–चापानुंग पंड्स आपुना कापी ने तोहकिट ?

S2ECQI

पाठ 4

बंदरबाँट

आपस की लड़ाई का परिणाम बुरा होता है। यदि उस लड़ाई का फैसला किसी चालाक आदमी को करने को दे दिया जाए तब तो स्थिति और बिगड़ जाती है। एक रोटी के लिए दो बिल्लियों में झगड़ा हुआ। बंदर ने उसका फैसला किया। दोनों बिल्लियों को उस रोटी से हाथ धोना पड़ा, इसलिए हमें आपस में मिल–जुलकर रहना चाहिए। झगड़ा हो तो आपस में ही निपटारा करना चाहिए।

(म्याऊँ–म्याऊँ की आवाज़ होती है। एक ओर से काली बिल्ली और दूसरी ओर से सफेद बिल्ली प्रवेश करती है।)

काली बिल्ली : बिल्ली बहिन, नमस्ते।

सफेद बिल्ली : नमस्ते बहिन, नमस्ते।

काली बिल्ली : अच्छी तो हो?

सफेद बिल्ली : अच्छी क्या हूँ, भूखी हूँ।
खाने को कुछ ढूँढ़ रही हूँ।

काली बिल्ली : उसी खोज में मैं भी निकली।

सफेद बिल्ली : मुझे महक रोटी की आती।

काली बिल्ली : हाँ, मेरी भी नाक बताती, पास कहीं है।

सफेद बिल्ली : रखी मेज पर है वो रोटी
लपकूँ? कोई आ जाए तो ......

काली बिल्ली : तू डर; मैं तो लेने को जाती हूँ।
(काली बिल्ली लपकती है और रोटी लेकर भागने लगती है।)

सफेद बिल्ली : ठहर, कहाँ भागी जाती है,
रोटी लेकर, रोटी मेरी।

काली बिल्ली : रोटी तेरी! कैसे तेरी? रोटी मेरी।

सफेद बिल्ली : मैं न दिखाती तो तू जाती?

काली बिल्ली : अच्छा, क्या मैं खुद न देखती?
जा, डरपोक कहीं की; जा भग, रोटी मेरी।

सफेद बिल्ली : मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।

काली बिल्ली : मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।

(दोनों झगड़ती हैं, 'रोटी मेरी, रोटी मेरी' कहकर एक दूसरी पर गुर्राती हैं।)

(बंदर का प्रवेश)

बंदर : क्यों तुम दोनों झगड़ रही हो?
तुम कहती हो रोटी मेरी। (सफेद बिल्ली से)
तुम कहती हो रोटी मेरी। (काली बिल्ली से) रोटी किसकी?
मैं इसका फैसला करूँगा।
चलो कचहरी, मेरे पीछे–पीछे आओ।

(बंदर रोटी छीनकर अपने हाथ में लेकर चलता है। दोनों बिल्लियाँ बंदर के पीछे–पीछे जाती हैं।)

(दूसरा दृश्य – बंदर की कचहरी)

(बंदर मेज पर बैठा है। रोटी का टुकड़ा सामने रखा है। दोनों बिल्लियाँ मेज के सामने इधर– उधर खड़ी हैं।)

बंदर : बोलो तुमको क्या कहना है?

सफेद बिल्ली : श्रीमान्! पहले मैंने ही रोटी देखी थी,
इससे रोटी पर पूरा हक मेरा बनता।

बंदर : *(काली बिल्ली से)*
बोलो, तुमको क्या कहना है?

काली बिल्ली : श्रीमान्! पहले मैं झपटी थी रोटी लेने,
इससे रोटी पर मेरा हक पूरा बनता।

बंदर : बात बराबर, बात बराबर।
है मेरा फैसला कि रोटी तोड़–तोड़कर
तुम्हें बराबर दे दी जाए।
मेरे पास धरमकाँटा है।

(बंदर मेज के नीचे से तराजू निकालकर लाता है। रोटी को दो हिस्सों में तोड़कर दोनों पलड़ों पर रखता है और तराजू उठाता है। एक पलड़ा नीचे रहता है, दूसरा ऊपर।)

बंदर : यह टुकड़ा, कुछ भारी निकला।
इसमें से थोड़ा खाकर के हल्का कर दूँ। *(खाता है।)*
(फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा नीचे हो जाता है, दूसरा ऊपर।)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला।
अब इसको थोड़ा खा करके हल्का कर दूँ।
(फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा ऊपर हो जाता है, दूसरा नीचे।)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला।
मुँह थक गया बराबर करते
और तराजू उठा–उठाकर हाथ थक गया।
(बिल्लियों को बंदर की चालाकी का पता चल जाता है।)

सफेद बिल्ली : आप थक गए,
अब न उठाएँ और तराजू।

काली बिल्ली : बचा–खुचा जो हमको दे दें।
हम आपस में बाँट खाएँगी।

बंदर : नहीं, नहीं तुम फिर झगड़ोगी।
मैं झगड़े की जड़ को ही काटे देता हूँ।
बचा–खुचा भी खा लेता हूँ।
(इतना कहकर बंदर बची–खुची रोटी भी खा जाता है और तराजू लेकर भाग जाता है।)

दोनो बिल्लियाँ: आपस में झगड़ा करने से, हाथ नहीं कुछ आता।
जैसे बंदर चालाकी से, रोटी है खा जाता ।।

शब्दार्थ

महक = सुगंध

कचहरी = न्यायालय

धरमकाँटा = एक विशेष प्रकार की तौलने की मशीन जिस पर बहुत भारी वस्तुएँ, जैसे–ट्रक आदि तौले जाते हैं। यहाँ इसका अर्थ है 'तराजू'।

नीचे कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हुए हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर खाली स्थान में लिखो।

हक – ————————

पलड़ा – ————————

हड़पना – ————————

(तराजू का पल्ला, दूसरे की वस्तु को अनुचित रूप से ले लेना, अधिकार)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. कहानी का शीर्षक बंदर बॉट क्यों है ?

प्र.2. तुम इस नाटक को क्या नाम देना चाहोगे और क्यों ?

प्र.3. सफेद बिल्ली और काली बिल्ली दोनों रोटी पर अपना हक क्यों जता रहीं थी?

प्र.4. बंदर ने दोनों बिल्लियों से क्या कहकर स्वयं उनका फैसला करने की बात कही?

प्र.5. बंदर ने बिल्लियों के झगड़े का क्या निर्णय दिया?

प्र.6. सोचकर लिखो कि अगर बंदर न आ जाता तो बिल्लियाँ अपना झगड़ा कैसे निपटातीं।

प्र.7. बिल्लियाँ यदि बंदर से फैसला कराने से मना कर देतीं तो क्या होता?

प्र.8. अगले दिन दोनों बिल्लियों को एक तरबूज मिला। दोनों सोंचने लगीं इस तरबूज को एक कैसे बॉटा जाए। तभी फिर से बंदर आ गया। आगे क्या हुआ होगा?

प्र.9. नीचे लिखे वाक्यों में से जो वाक्य सही हों, उनके सामने 'सत्य' और जो गलत हों, उनके सामने 'असत्य' लिखो।

क– रोटी पहले सफेद बिल्ली ने देखी। ( )

ख– रोटी सफेद बिल्ली ने ही पहले लपकी। ( )

ग– सफेद बिल्ली ने काली बिल्ली को डरपोक कहा। ( )

घ– दोनों बिल्लियों ने बंदर से फैसला करने को कहा। ( )

ङ– बंदर ने तराजू पर रोटी के टुकड़े तौले। ( )

प्र.10. इन पंक्तियों को कविता के रूप में लिखो।

क. मेरा फैसला है कि रोटी तोड़–तोड़कर तुम्हें बराबर–बराबर दी जाए।

ख. तुम दोनों झगड़ क्यों रही हो ?

भाषा–अध्ययन एवं व्याकरण

- शिक्षक पाठ के किसी एक अनुच्छेद को श्रुतिलेख के रूप में बोलें और विद्यार्थी लिखकर परस्पर अभ्यास–पुस्तिकाओं का परीक्षण करें।

प्र.1 निम्नलिखित शब्दों के जोड़ों में से सही शब्द छाँटकर लिखो।

मुंह/मुँह, उठाँए/उठाएँ, तोड/तोड़, खुद/खूद।

प्र.2 नीचे लिखे शब्दों का अर्थ लिखो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

महक, हक, पलड़ा, पछताना, बचा–खुचा।

प्र.3 दिए गए शब्दों का प्रयोग करते हुए नीचे लिखे वाक्यों के खाली स्थानों की पूर्ति करो।

डरपोक, लपक ली, पलड़े, न्यायालय ।

क– हमारे झगड़ों का न्याय .... में होता है।

ख– तराजू के .... सम पर आने चाहिए।

ग– जो .... होते हैं, वे युद्ध–क्षेत्र से भागते हैं।

घ– चेतन ने बॉल को शॉट मारा लेकिन मोहिंदर ने बॉल ....।

पढ़ो, समझो और लिखो

मैं खाना खाऊँगा। फिर विद्यालय जाऊँगा।
इन दो वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य इस प्रकार लिखा जा सकता है –
मैं खाना खाकर विद्यालय जाऊँगा।

प्र.4. नीचे वाक्यों के जोड़े दिए गए हैं। दोनों वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बनाओ।

क. काली बिल्ली ने रोटी ली। फिर वह भागी।

ख. कचहरी चलो। मैं वहाँ न्याय करूँगा।

प्र.5. नीचे पहली पंक्ति में लिखे शब्दों की लय से मिलते–जुलते दो–दो शब्द तालिका में से छाँटकर लिखो।

झपटी, रोटी, नाक, थोड़ा, धरम, कहना, बंदर,
सहना, चरम, खाक, सुंदर, अंदर, लिपटी, कोड़ा,
खोटी, घोड़ा, कपटी, करम, डाक, बोटी, बहना ।

रचना

शिक्षक की मदद से इस नाटक को संक्षेप में कहानी के रूप में लिखो।

योग्यता विस्तार

1. अपने साथियों की सहायता से बिल्ली और बंदर का रूप बनाकर, इस पाठ का अभिनय करो ।
2. आपस में लड़ाई का क्या परिणाम होता है, इस पर कक्षा में बातचीत करो।
3. बंदर ने जो न्याय किया, क्या वह उचित था ? तुम यदि न्याय करते तो क्या फैसला देते ?
4. यह कविता भी पढ़ो–

   दो बिल्ली एक रोटी लाई, पर दो टुकड़े कर नहीं पाई।
   बंदर एक वहाँ पर आया, दोनों को उसने समझाया;
   लड़ना छोड़ तराजू लाओ, तौल बराबर रोटी खाओ।
   बिल्ली दौड़ तराजू लाई, लगा तौलने बंदर भाई।
   भारी पलड़े से कुछ टुकड़ा, लगा डालने अपने मुखड़ा।
   इसी तरह सब रोटी खाई, बिल्ली बैठ रहीं ललचाई।
   बोलीं आपस में तब बिल्ली, लड़ना छोड़ चलें अब दिल्ली।

3LLFYH

शिक्षण–संकेत

- पाठ को कहानी के रूप में परिवर्तित कर बच्चों को सुनाएँ।
- बच्चों से कहानी के पात्रों के अनुसार अभिनय कराएँ।
- सरल प्रश्न पूछें तथा उत्तर देने के लिए बच्चों को प्रेरित करें।

पाठ 5

मीठे बोल

3LVC1J

बोलचाल से हमारे स्वभाव का पता लगता है। कौआ और कोयल दोनों का रंग–रूप एक–सा होता है, लेकिन कोयल अपनी मीठी बोली के कारण सबको प्यारी लगती है। कौआ अपनी कर्कश बोली के कारण अप्रिय लगता है। मीठा बोलकर हम दूसरों का मन जीत लेते हैं। मीठे बोल से बढ़कर संसार में कोई दूसरी चीज नहीं होती। मीठे बोल का महत्व इस कविता में पढ़ें।

मीठा पेड़ा, मीठा खाजा,
मीठा होता हलुआ ताजा।
मीठे होते लड्डू गोल,
सबसे मीठे, मीठे बोल।।
मीठे होते आम रसीले,
पके–पके और पीले–पीले।
मीठे सेव, संतरे गोल,
सबसे मीठे, मीठे बोल।।
मीठा होता गुलगुल भजिया,
गरम जलेबी सबसे बढ़िया।
मीठे रसगुल्ले अनमोल,
सबसे मीठे, मीठे बोल।
मीठी होती खीर हमारी,
मीठी होती कुल्फी न्यारी।
मीठा होता रस का घोल,
सबसे मीठे, मीठे बोल।।

शब्दार्थ

मीठे बोल – प्रिय बोलना, नम्रता से बोलना

रसीले – रस भरे

नीचे कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हुए हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर खाली स्थान में लिखो।

अनमोल —————————

न्यारी —————————

(जिसकी कीमत न आँकी जा सके; निराली, सबसे अलग)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. मीठे बोल से कवि का क्या तात्पर्य है ?

प्र.2. चार मीठे फलों के नाम लिखो।

प्र.3. हमें मीठे बोल क्यों बोलने चाहिए ?

प्र.4. इस कविता में रसगुल्ला को अनमोल मीठा क्यों बताया गया है ? सोचकर लिखो कि मीठा रसगुल्ला अनमोल होता है या मीठे बोल अनमोल होते हैं?

प्र.5. कठोर बोल मीठे होते हैं या कोमल बोल?

प्र.6. क और ख में से अधूरी पंक्ति लेकर कविता की पंक्तियाँ पूरी करो और लिखो।

क्र.सं.	क	ख
1.	मीठी होती	लड्डू गोल
2.	मीठा होता	मीठे बोल
3.	मीठे होते	खीर हमारी
4.	सबसे मीठे	रस का घोल

प्र.7. जलेबी, आम, लड्डू, मीठे होते हैं। नीचे बने खण्डों में कुछ खट्टी, कड़वी और तीखी चीजों के नाम लिखो।

खट्टी चीजें	कड़वी चीजें	तीखी चीजें
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

प्र 8. जब कोई तुमसे प्यार से बातें नहीं करता तब तुम्हें कैसा लगता है ?

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. नीचे दिए गए शब्दों से मिलते–जुलते तुकवाले दो–दो शब्द सोचकर लिखो।

क– न्यारे ग– ताजा ख– गोल घ– प्यारी

प्र.2. नीचे दिए गए शब्दों के विपरीत अर्थवाले शब्द लिखो।

क– मीठा ख– ताजा ग– पके घ– गरम

प्र3. पहचानकर लिखो – सबसे अलग कौन?

क– सेब, केला, पपीता, इमली ।

ख– पेड़ा, गुलाबजामुन, समोसा, जलेबी ।

ग– सूर्य, चंद्रमा, तारे, चिड़िया ।

घ– कार, गिलास, स्कूटर, साइकिल ।

प्र4. नीचे दिए गए वर्णों से चार शब्द बनाकर वाक्यों में प्रयोग करो।

आ	के	सं	म	सी	फ	ला	ता	त	ल	रा

रचना

- मीठे बोल कविता पढ़कर तुमने क्या समझा ? अपने शब्दों में लिखो।

योग्यता विस्तार

- इस दोहे को पढ़ो, याद करो और इसका अर्थ समझकर कक्षा में बताओ।

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपहु शीतल होय।।

3H5837

शिक्षण–संकेत

- कविता का सस्वर वाचन करें और अनुकरण वाचन कराएँ।
- दिए गए चित्रों पर बच्चों से चर्चा कराएँ।
- स्वाद में मीठी वस्तुओं के नाम पूछें
- छत्तीसगढ़ी व्यंजनों की सूची बनवाएँ।
- मीठे बोल और कड़वे बोल के बारे में बच्चों से चर्चा करें।

पाठ 6

कबूतर और मधुमक्खियाँ

3ME44U

मुसीबत में एक दूसरे की सहायता करना हमारा धर्म है। पशु–पक्षी भी कभी–कभी यह धर्म निभाते हैं। यह कहानी हमें सिखाती है कि हम भी मुसीबत में फँसे अपने साथियों की सहायता करें।

किसी नदी के किनारे एक पेड़ था। पेड़ पर मधुमक्खियों का छत्ता था। छत्ते में बहुत–सी मधुमक्खियाँ रहती थीं। उनमें एक रानी मक्खी भी थी।

एक दिन की बात है। रानी मक्खी छत्ते से बाहर निकलते ही नदी में गिर गई। उसने पानी से निकलने का बहुत प्रयत्न किया, पर वह निकल न सकी। वह नदी की धारा में बहने लगी। नदी के किनारे एक कबूतर पानी पी रहा था। उसे मक्खी पर बहुत दया आई। वह उसे बचाने की बात सोचने लगा। अचानक उसे एक उपाय सूझा। वह तेजी से उड़कर पेड़ के नीचे पहुँच गया। पेड़ के नीचे से एक सूखा पत्ता लेकर उसने अपनी चोंच में दबाया और नदी के किनारे–किनारे उड़ने लगा। थोड़ी ही दूर पर उसे रानी मक्खी दिखाई दी। उसने पत्ता मधुमक्खी के बिल्कुल आगे डाल दिया। मक्खी पत्ते पर चढ़ गई। पत्ता धीरे–धीरे किनारे से लग गया। रानी मधुमक्खी डूबने से बच गई।

कबूतर का ध्यान पत्ते पर ही था। उसने देखा कि मधुमक्खी तो बिल्कुल हिलती–डुलती नहीं। वह चोंच में पत्ता दबाकर, पेड़ के नीचे आ गया। कुछ देर तक वह इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि मधुमक्खी हिलती–डुलती है या नहीं। मधुमक्खी अब कुछ हिलने लगी। वह धीरे–धीरे पत्ते पर चढ़ने भी लगी। उसने कबूतर

की ओर देखा। कबूतर को विश्वास हो गया कि अब मक्खी बच जाएगी। रानी मक्खी धीरे–धीरे उड़कर अपने छत्ते में चली गई। रानी मधुमक्खी के छत्ते में न होने से सभी मधुमक्खियाँ परेशान थीं। उसको छत्ते में आया देखकर सभी को बड़ी प्रसन्नता हुई।

कुछ दिनों के बाद एक शिकारी उधर आया। वह नदी के किनारे घूम–घूमकर चिड़ियों का शिकार करने लगा। उसके भय से सभी पक्षी इधर–उधर छिपने लगे। जिस कबूतर ने रानी मक्खी को बचाया था, वह भी उड़ता हुआ उसी पेड़ के पास आया। डर के मारे वह पेड़ के पत्तों में छिप गया। रानी मक्खी ने उस कबूतर को देखा तो तुरन्त मधुमक्खियों से कहा, ''हमें किसी भी तरह इस कबूतर की रक्षा करनी चाहिए।''

रानी मधुमक्खी की बात सुनते ही कई मधुमक्खियाँ छत्ते से निकल पड़ीं। उधर शिकारी ने कबूतर को देख लिया था। वह उसकी ओर निशाना साध ही रहा था कि मधुमक्खियाँ तेजी से उसकी ओर झपटीं। उन्होंने कई जगह शिकारी को काट खाया। शिकारी घबरा गया। उसका निशाना चूक गया। कबूतर ने तीर की सनसनाहट सुनी। उसने भय के मारे अपनी आँखें बंद कर लीं। थोड़ी देर बाद उसने अपनी आँखें खोलीं तो देखा, शिकारी अपना सिर पकड़कर बैठा है। उसे कुछ मधुमक्खियाँ उड़ती हुईं पेड़ की ओर आती दिखाई दीं।

कबूतर सब कुछ समझ गया। उसने मधुमक्खियों की ओर देखा और मन–ही–मन उनको धन्यवाद दिया।

शब्दार्थ

प्रयत्न	–	कोशिश	परेशान	–	चिंतित
प्रतिक्षा	–	इंतज़ार	राह देखना	–	बाट जोहना
छटपटाना	–	बेचैन होना, व्याकुल होना			

प्रश्न और अभ्यास

प्र. 1. मधुमक्खियाँ कहाँ रहती थीं ?

प्र. 2. रानी मक्खी किस मुसीबत में फँस गई थी ?

प्र. 3. कबूतर क्यों डर गया था ?

प्र. 4. मधुमक्खियों ने कबूतर की कैसे सहायता की ?

प्र. 5. यदि कबूतर मधुमक्खी की सहायता न करता तो क्या होता ?

प्र. 6. तुमने मधुमक्खियों का छत्ता लटका हुआ देखा होगा। पता करो कि मधुमक्खियाँ अपने छत्ते में शहद कैसे इकट्ठा करती हैं ?

प्र. 7. तुमने अपने आसपास किसी जानवर या पक्षी का शिकार होते हुए देखा या सुना होगा। तुम्हें क्या लगता है कि लोग इनका शिकार क्यों करते होंगे ? तुम्हारे विचार से यह सही है या नहीं ?

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्यों के खाली स्थान भरो।

(भिनभिना, खटखटा, गड़गड़ा, गिड़गिड़ा)

क. भिखारी ———————— रहा था।

ख. मेहमान दरवाजा ———————— रहा था।

ग. मक्खियाँ मिठाई पर ———————— रही थीं।

घ. बादल ———————— रहे हैं।

समझें

लड़का	–	लड़के	–	लड़कों
कमरा	–	कमरे	–	कमरों
गमला	–	गमले	–	गमलों

'लड़का' का अर्थ है एक लड़का। 'लड़कों' का अर्थ है बहुत से लड़के।

'लड़के/लड़कों' बहुवचन में आता है।

पढ़ो :–

क. छत्ते में बहुत–सी मधुमक्खियाँ रहती थीं।

ख. नदी के किनारे एक सीधा–सादा कबूतर पानी पी रहा था।

ग. पेड़ के नीचे एक सूखा पत्ता पड़ा था।

अब समझो–

क. छत्ते में कितनी मधुमक्खियाँ रहती थीं ?

ख. नदी में पानी पीने वाला कबूतर कैसा था ?

ग. पेड़ के नीचे कैसा पत्ता पड़ा था ?

पहले वाक्य में 'बहुत–सी' शब्द मक्खियों की विशेषता बता रहा है। दूसरे वाक्य में 'सीधा–सादा' कबूतर की विशेषता बता रहा है। तीसरे वाक्य में 'सूखा' शब्द 'पत्ता' की विशेषता बता रहा है। विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

प्र.2 नीचे दिए गए एकवचन शब्दों को बहुवचन में बदलकर लिखो।

झोला, मुर्गा, मेला, ठेला, बोरा, बकरा, कुत्ता।

प्र.3 नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ो। इनमें कुछ त्रुटियाँ हैं। उन्हें दूर करके अनुच्छेद फिर से लिखो।

नदी के कीनारे जामून का एक पेड था। उस पर एक बंदर रहता था। वह मिठे–मिठे जामून खाता था। एक मगर से उसकी दोसती हो गई थी। बंदर मगर को भी जामून खीलाता था। मगर पानी में रहता था। उसकी पतनि को जामुन बहुत पसंद था।

वाक्यों को पढ़ो और समझो

अ	ब
क. चूहे ने रोटी खा डाली।	क. चूहों ने कपड़ों को कुतर डाला।
ख. बछड़े ने रस्सी तोड़ डाली।	ख. पेड़ के नीचे बछड़े बैठे हैं।
ग. बस्ता बहुत भारी है।	ग. बाजार में अच्छे–अच्छे बस्ते मिलते है।

इन वाक्यों में रेखांकित शब्द एकवचन में हैं और ब खंड में रेखांकित शब्द बहुवचन में है।

प्र.4 'चूहा', 'कुत्ता', 'लड़का' शब्दों का प्रयोग एकवचन और बहुवचन रूप में अलग–अलग वाक्यों में करो।

रचना

प्र.1. कबूतर का चित्र बनाओ और उसमें रंग भरो।

प्र.2. इस कहानी को अपने शब्दों मे लिखो।

योग्यता विस्तार

यह भी जानो–

- ✓ मधुमक्खियों का छत्ता मोम का बना होता है।
- ✓ मधुमक्खियों द्वारा एकत्र किया गया फूलों का रस ही शहद या मधु रस कहलाता है।
- एक छत्ते में खूब सारी मक्खियाँ रहती हैं।
- मधुमक्खियों के डंक होते हैं, जिनके चुभने से बहुत पीड़ा होती है।
- भूलकर भी मधुमक्खियों के छत्ते पर पत्थर नहीं मारना। ये बिखरकर इधर–उधर उड़ती हैं । उस समय ये क्रोध में किसी को भी काट सकती हैं ।

शिक्षण–संकेत

- पाठ का आदर्श वाचन करें और अनुकरण वाचन कराएँ।
- प्रस्तुत पाठ में आए हुए एकवचन एवं बहुवचन के शब्दों की सूची बच्चों से बनवाएँ।
- कक्षा में 3 या 4 समूह बनाकर कहानी पर चर्चा कराएँ और अपना अनुभव सुनाने के लिए कहें।
- पक्षियों के नामों की सूची बनवाएँ।

3MMZ6H

पाठ 7

चाँद का कुरता

शीत ऋतु में बहुत ठंड पड़ती है। इससे बचने के लिए सब लोग गरम कपड़े पहनते हैं। पशु–पक्षियों को भी ठंड लगती होगी। इस कविता में चंद्रमा एक बच्चे के रूप में बताया गया है। वह भी ठंड से बचना चाहता है। इसके लिए वह अपनी माँ से कुछ माँग रहा है। इस पाठ में चन्द्रमा और उसकी माँ के बीच हुई बातचीत का वर्णन पढ़ें।

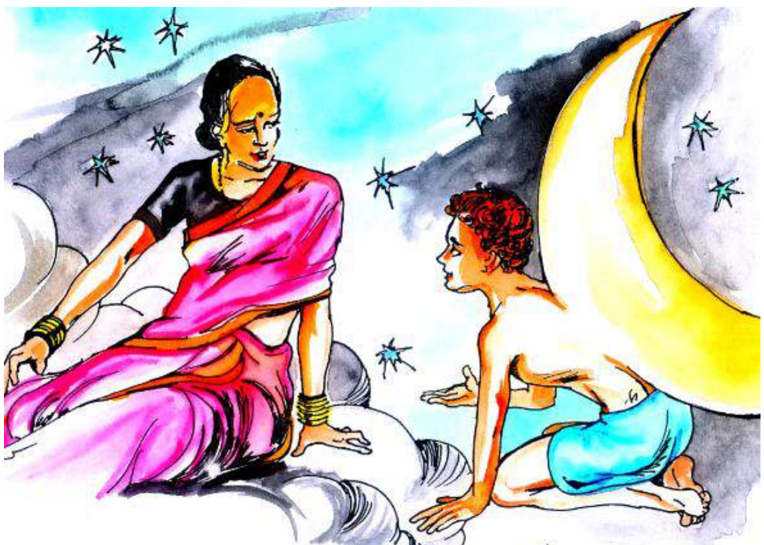

हठ कर बैठा चाँद, एक दिन माता से यह बोला।
सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।।
सन्–सन् करती हवा, रात–भर जाड़े से मरता हूँ।
ठिठुर–ठिठुरकर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।।
आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का।
न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही, कोई भाड़े का।।
बच्चे की बातें सुनकर बोली उससे यह माता।
सचमुच जाड़े का मौसम तो तुझको बहुत सताता।।
जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ।
एक नाप में कभी नहीं, तुझको देखा करती हूँ।।

कभी एक अंगुल–भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा।
बड़ा किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा।।
घटता–बढ़ता रोज किसी दिन, ऐसा भी करता है।
नहीं किसी की आँखों को तू, दिखलाई पड़ता है।।
अब तू ही यह बता, नाप तेरा किस रोज़ लिवाएँ ?
सी दूँ एक झिंगोला, जो हर रोज बदन में आए।।

शब्दार्थ

हठ – जिद
झिंगोला – झबला
यात्रा – सफर

नीचे कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हुए हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर लिखो।

भाड़ा ....
सलोने ....
बदन ....
ठिठुरकर ....
(सुंदर, किराया, ठंड से काँपकर, शरीर)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. हमें चाँद कब दिखाई देता है?
प्र.2. चाँद ने माँ से किस चीज की मांग की ?
प्र.3. ऊनी कपड़े किस मौसम में पहने जाते हैं ?
प्र.4. चाँद कब दिखाई ही नहीं देता ?
प्र.5. पूरा गोल चाँद कब दिखता है ?
प्र.6. माता ने चाँद को झिंगोला देने में क्या कठिनाई बताई ?
प्र.7. चाँद कब घटता और कब बढ़ता है ?
प्र.8. पूर्णमासी और अमावस्या के दिन चाँद की क्या स्थिति रहती है ?

प्र.9. चाँद पर आधारित किन त्यौहारों को मनाया जाता है?

क– कार्तिक मास की अमावस्या को ....

ख– फागुन की पूर्णिमा को ....

ग– सावन की पूर्णिमा को ....

घ– रमजान के रोजे पूरे होने के बाद मनाया जाने वाले त्यौहार ....

प्र.10. अगर चींटी और हाथी के लिए झबला बनवाया जाए, तो क्या बन पाएगा? कारण बताते हुए उत्तर लिखो।

प्र.11. जैसे चन्द्रमा ने अपने लिए झिंगोला दिलवाने की जिद की, इसी तरह तुम भी अपनी माँ से किन – किन चीजों के लिए लिए जिद करते हो ?

इनमें से कौन सी जिद पूरी होती है और कौन सी नहीं, नीचे तालिका में लिखो।

जिद	पूरी होती है	पूरी नहीं होती है
मैं खेलने जाऊँगा	....	....

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

- कक्षा के दोनों समूह परस्पर शब्दों के अर्थ और उनका वाक्य–प्रयोग करने की गतिविधि करें।
- शिक्षक एक अनुच्छेद श्रुतिलेख के लिए बोलेंगे और विद्यार्थियों से पूर्व के अनुसार परीक्षण संबंधी कार्य कराएँगे।
- रवि पहले कमज़ोर था किंतु आजकल ताकतवर हो गया है।

  इस वाक्य में 'कमजोर' का उल्टे अर्थवाला शब्द 'ताकतवर' है।

प्र.1 नीचे लिखे गए शब्दों के उल्टे अर्थ वाले (विरोधी) शब्द लिखो व एक–एक वाक्य बनाओ।

क– जाड़ा ख– मोटा ग– रात घ– बड़ा ङ– स्पष्ट च– दूर

प्र.2. नीचे दिए गए शब्दों को शुद्ध करके लिखो।

जादु, दीखलाई, कुसल, मौसिम, आसमन।

प्र.3. पढ़ो और समझो।

चंदा – गंदा, मंदा

इसी तरह नीचे दिए गए शब्दों से मिलते–जुलते दो–दो शब्द लिखो।

क– माता ख– मोटा ग– नाप घ– डरती

समझो

क. "नमन गाना गा रहा है।" ख. "रचना खेल रही है।"

क वाक्य में गाना गाने का काम हो रहा है। ख वाक्य में खेलने का काम हो रहा है। **"जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का ज्ञान होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।"**

प्र.4. पाठ के अनुसार चांद कभी एक अंगुल भर चौड़ा तो कभी एक फुट मोटा हो जाता था। आओ देखें इनमें कौन – कौन सी चीजें मापी जाती है –

इकाई	चीजों के नाम
लीटर मीटर किलोग्राम	

प्र.5. नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया शब्दों को चुनकर लिखो ।

क– मैं अपने दोस्त को किताब दूँगा।

ख– दर्जी कपड़ा सिल रहा था।

ग– माँ पुस्तक पढ़ रही है।

रचना

प्र.1. चाँद, सूरज व सितारों का चित्र बनाकर उसके बारे में अपने विचार लिखो।

प्र.2. चाँद और माँ की कहानी बातचीत के रूप में लिखो।

प्र.3 नीचे लिखी कविता की पंक्तियों के शब्द उलट–पुलट गए हैं। शब्दों को सही स्थान पर रखकर कविता की पंक्तियाँ बनाओ।

घण्टा	बोला	मदरसे	चलो
जल्दी	अपने	घर से	निकलो
कपड़े	पहनो	ले लो	बस्ता
घर से	निकलो	निकलो	निकलो

योग्यता विस्तार

- चंदा मामा की कोई अन्य कविता खोजो, पढ़ो और कक्षा में लिखकर लगाओ।
- जो रोज छोटा–बड़ा हो, उसके लिए कपड़े सिलवाना संभव नहीं होता। सोचकर बताओं कि चांद की माँ का कहना ठीक था या गलत।
- तुम्हे जब ठण्ड लगती है तो गरम कपड़े पहनते/ओढ़ते हो। जिनके पास गरम कपड़े नहीं होते वे ठण्ड से कैसे बचते हैं।

3N6R9S

शिक्षण–संकेत

- कविता का सस्वर वाचन कर दो–तीन बार कक्षा में सुनाएँ।
- बच्चों से भी कविता का सस्वर वाचन करवाएँ, उनके उच्चारण पर विशेष ध्यान दें।
- कविता में आए चित्र पर बच्चों से बातचीत करें।
- बच्चों से कविता के भावार्थ पर बातचीत करें।

पाट – 8

गेहगेड़ मुद्याल अन मूस्क्ना मया

मट्टा गुटा बुमते मंदानंग पिट्टे पुर्रूड़ अन काजेर मावंग गोतियह आदुंग। धरती ता मरा गुट्टा जियाजन बराबर पिस्नह जरूरी आंद कि नेदे मंदानंग रंग–रंगनंग जीवनुंग पिसह्ना अन इर्रला काजे काम तुन बिसिहना कियना। इदम वेहला इद पाट ते वर्रोड़ हरमोती मानेय ता काजेर संग गोत कीलेतुन वेहले आता। ओर मूस्कना संग वेलाय गोत कीसोर मन्दूर।

इद पाटते कर्रियकट :– उन्द गोकना अकल कर्रियनह पीटो, मरा गुट्टा पिसिहला हर्र, गोंडी तंग पूनंग अड़चेन टप्पिंग अन अवेह्ना अरेत् कर्रियला पुटर।

तयहता प्पल्लो आंद, अबुजमाड़ियन परलकोट जमीदारी ते वर्रोड़ कोयतोर माड़ियल अन् नार्र मेटोर पेंदा (गोडुम) नड़क्स गोर्रंग, कोहला, जोहड़ेंग, हनईंग अन् पुपुल्क वीत्स मंदूर। कोण्डा ऐवो अद्म पेंदा ते हिक्के–होक्के डह बट काजेर तिन्दा वान्दुग। अगा र्रका–जाका (केपला) टोन्ड पन्ड्स कोटुह–कोटुहने मानेय पोड़्द मेंड नर्रका–पियल मंदूर। चितरह, माव्क, कोडर्रह, मोल्लोह, हुप्पेंग, मल्क, पुर्रह, हिड़्क अन् पिट्टे पुरूड़ता कैयर वीड़्स मंद।

उंदिया बेकेडह तो मूस्क्ना गोहड गेहगेड़ मुद्या नकेडह वास गोर्रानुंग तिन्दा उमड़ेमातुंग। मुद्यल हूड़्स गोक ते बिचार कीतुर इवेह्ना गला तो कर्रवे आन्द। पोट्टा जिन्गी किया वलिय्यतंग बिचरीह बातंग तिन्वह। क्कोटुम गेडा ते आक् कोर्र बल्लह तिन्वह। अल्ले! इव गोर्रानुंग तिनिंग बप्परीह, इंजोर मुद्यल हुडिला टोंडते हुंजतप कमेक मतोर। मूस्क तो डाबे मातुंग,आड मेन्ड दिप्पा तंग गोर्रानुंग हिड़्त्ले मारीहतुंग गला मती मुद्याल अइना–गइना हुंजतप मंदुर।

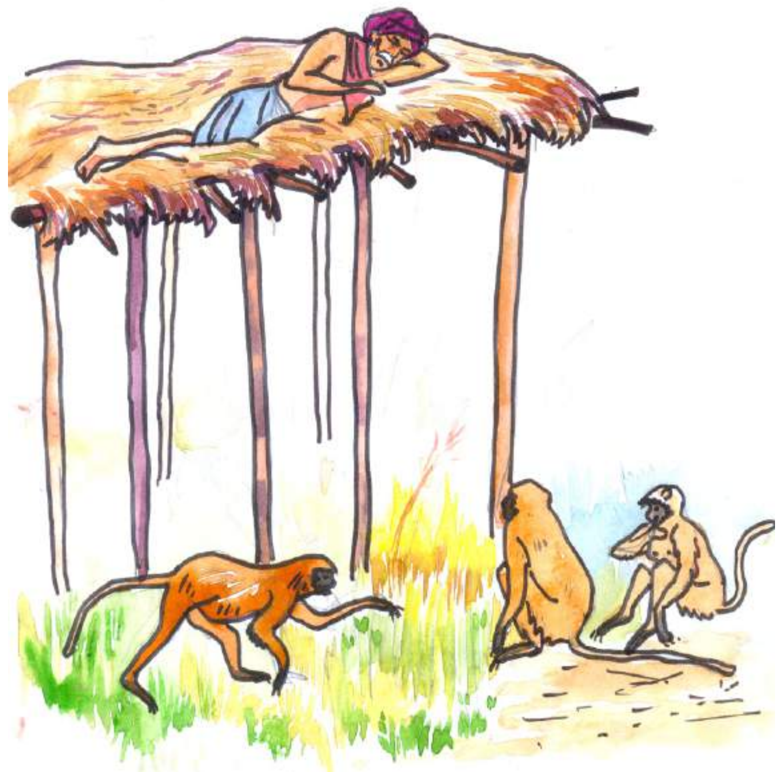

अच्चोन उन्द गोंगड़ल मून्ज अक्कलते बिचर कीत। येरसु बेस तोर मुद्यल आंदूर। ओड़ियन माड़ियन वल्लियतोम, मति इदमनोर मानेय हुड़वय मतोरोम इंजोर आदो मुस्कुन वेह्त। अचोय उंद मूंज इत–मुद्याल हायोर ब!! हंज हूडोट् तो हैंय्ंग– सारूंग मूस्क मुद्यन हेरे कमेक–कमेक हतुंग। डिंग निच्च हूंड़तुंग, मुद्यल हातप मदुंर। अचोडे मूस्क कुस– कूस्सा हन्ज हूड़तुंग। मति मुद्याल चिट्टो–पोट्टो केवोर। चिट्टले पल्क कीस कोडंग पिहतप बर–बरा ऽ ऽ हूडंदूर। उन्द मून्ज इत् ये ऽऽऽ देवा! हातूर रें ! मुद्यल। देट–देट येर मुद्यन सोन पांजा हानाकोड़ोय ते ओसियाकट। सप्पय मूस्क वातुंग अन् मुद्यन कॉन्च अद्दे सात अड़प्पिंग मट्टा हब्बर सोनपांजा हाना कोड़ोय ते रेहचितुंग। अन् मूस्क मलतुंग– मुद्याल मत्तोर ते अगडंग सोनकल डींडानुंग आपुना हुत्तले गेत्ती दे गट कीस कुस–कूस्सा लोन वातुर अन् निमान दिया मंगडू हल्लामिन वेहतूर। आयो... नना मूस्कुन इदम–इदम कीतन अचोन नाकुन सोनपांजा ते ओसितुंग। अगा डह सोनकल डींडा नुंग ततोना। मंगडू इतूर इंगो रा..। अव्वे तो मूस्क नैय्यके होन्ने वास–वास बीटह कीदुंग, अचोन तेपिंग ओग्गतान अगा उंद मूंज पीला हिर्र्त् ब सप्पय मूस्क चुच्चो–मुच्चो वित्तितुंग, अवे नियाके वातुंग। अर्रे.... ता नन्ना गल्ला अद्दमे हुसयरी कियाकरा। इदेक तेपिंग मेपिंग ओगोन बनेय तिंदा हियका अचोन मर्सानुंग, इंजोर मंगडू हल्लामी गेहगेड़ नुरूट मुद्यन वेहतुर।

अच्चोय गेहगेड़ नुरूटी इतुर–इंगो रा हल्लामी बेरहय कामरा पैय्स मंजल मंदकी, वल्लोंगे सोनकल डींडानुंग मोडर्रह कीस तत्की। नन्ना बा हुतले गेत्ती दे गठ कीतन अन्

इच्चोके ततोना इंजोर वेहत्तूर। निमन दिया तो मंगडू हल्लामी, ओना केतुल हंज गुर्रमाड हंज हुन्च मतोर। अवे मूस्क वातुंग अन् सोपा अरतुंग, ग्गोरेंग, पुपुल्क, हन्नईंनुंग चुड़–चुड़ा मारीहतुंग, मति पत्ता चिट–पोट केवोर, हातप हुंन्च मंदूर, मूस्क हल्लामी ना केतुदे वास वड़क्तुंग–येरे होन्ने तेप ओग्स् मावा उंद पीलातुन हिर्रीहतुर अन येरे नेंड टिट्टीमले हातोर। येन कांन्जवट अर्रीयसोर बुर्रकल कुडुम चांदी कोड़ोय ते वाट सियाकट्ट। इंजोर इतुंग अदेन मंगडू हल्लामी केन्जतुर अन् बुर्रकल (डुवल) ता परोय केन्च ओना जीवा वर्रीयत्। उब्बुक्ले मिड़क्स् टुंग टुंगले तेदीतुर। अन इतुर – ओयमाऽऽट् ! नाकुन ओयमाट नन्ना हायोने जीवोते मंतोना। सोनकल दा गिर्रदात्कु बारा ओकिंग कीतन। गेहगेड़ नुरूटिना बुद्ध ते नन्ना तो ओसय बुर्रकल (डुवल) कुडुम ते अर्स मन्नेना। इच्चोय पल्लोतुन केन्च मूस्क बूक–बाक इंजोर बिर्रोह–बट्टिंग वितितुंग। पीटो इगय मारत्।

पड़हे कियहना ओड़ डगुर – गुरूजी हड़क–हड़क पड़हे कियानूर, पीलंग केंजा नुंग अन इंदन्नुंग। माया नंग काजेरिना परोय कागेत ते ओड़िय कोट्टना वेहन्नुर।

टप्पिना अरेत् :–

पेंदा	–	गोहडुम, पड़का।
नड़्क्स	–	कद्स, कदना, नड़कना।
एवो	–	अवाना आयो, अववा(एववा पल्ला, कांडा नजेर।)
हिक्के–हक्केडह	–	रण्डोह, वड़कनह।
नर्रका, पियल	–	मुल्पे–मैदेना, हीकटते–पोड़दते।
केपला	–	पोस्ला, केपना, रार्का, जाका कियाला।
टोन्ड	–	केतुल, पोर्रो हुंजना, टोन्ड।
कोटुल	–	ओदा, गोन्दी।
हूड़्स	–	हूड़्स मंजल, ओहना।
बप्पर्रीह	–	सोग मय्याता पोल्लो।
हुन्जतप	–	हुस्कड़,आले लेहका।
हिड़त्ले	–	सप्पय,मारनह(तोडेय ले)।
कम्मेक	–	कुसकुसा।
कोड़ोयते	–	गुमिया ते, गुमिया।

जबान कर्रियना

जबानः— गोक तह वेहटः—

1. बट काजेर तंग पोरोईंग वेहाट ?
2. पेंदा वेडा ते बातंग वीतयतोर ?
3. माड़ियह बग्गा मन्तोर ?
4. डाही पेंदा केपला बारंग पन्ड्स मन्तोर ?

अडीयतंग जबान टप्पिना जबाब कोटट्ः—

1. पेंदा(गोहडुम) ते गेहगेड़ मुद्यल बारंग वीत्स मंदूर ?
2. मानेय बाक्या केपन्दूर ?
3. इद पीटोते गेहगेड़ मुद्यन हेरे बचोक मूस्क हंज मन्दुंग ?
4. गोहड्डुम ते बातंग कैयर कीन्दुंग ?
5. गेहगेड़ मुद्यल बारंग बिचर कीतूर ?
6. गेहगेड़ नूरूटी मंगडू हल्लामिन बांग वेहत्तुर ?
7. मंगडू हल्लामीन बग्गा ओयला मूस्क् बिचर कीतुंग ?
8. गेहगेड़ नूरूटी मंगडू हल्लामिन बच्चोह्टा कामरा पय्स मंदकी इतुर ?

सतेय अन जुकलेंग टप्पिनुंग अरले(4)/अरवा(5) तंग चीनंग लगेह कीम्ट।

1. पेंदा नड़क्स वजिंग वीतिन्दूर।
2. पेंदा ते चिडर्रह, मल्क, कोडर्रह, मोल्लोह अन हुप्पेंग तिन्दा वादुंग।
3. ओड़ियन—माड़ियन ते वलीयतोम मती इदमनोर मानेय हुड़वय मतोरोम।
4. गेहगेड़ मुद्यल मुस्कुन पूड़न्दूर।

5. मूस्क मूस्क्सोर मुद्यन हेरे अवतुंग मति चिटपोट केवोर।

6. गेहगेड़ नुरूटिन सोनपांजा ते कान्च ओतुंद।

अडीय हीलेंग टप्पिंगनुंग आच् मंजल पिस्ले डेराते निहाटः–

(नर्रका–पियल, चुड़चुड़ा, केतुल, जीवा)

1. मंगड़ू हल्लामी बुर्रकदा परोय केंच ओना.........वर्रीय्त।

2. टोन्ड पन्ड्स मानेय कोटुह–कोटुहने.................. मंतोर।

3. पेंदा तंग गोर्रींग पुप्पुल्क हनाईंनुंग.............मारिहतुंग।

4. मूस्क हल्लामिना.............दे वातुंग।

पल्लो ता ओड़ डगुर

जबान :– अडीय कोट्टलेंग टप्पिना अरेत् कोटाट्–

हिक्के–होक्के, वित्तन्ना, डोंग पेहचन्ना, दड़दड़ा आयना, केव निहना।

अकल बरस्हना :–

1. मूस्क्ना चापंग पन्ड्स मंजल रंग निहट।

2. बद्दे गला जानवोर ता लेंगतुन केंजहट।

3. मूस्क्ना पीटो पन्ड्स (कक्षा) वेहाट।

S2X4TT

पाठ 9

आदिमानव

इस चित्रकथा में आदिमानव की कहानी है। वे हजारों वर्ष पहले घने जंगलों में बिना कपड़े पहने रहते थे और जानवरों का कच्चा मांस खाते थे। धीरे–धीरे उन्होंने आग जलाना, खेती करना सीखा। वे गुफाओं में रहने लगे। आदिमानव ने किस तरह उन्नति की, यह इस पाठ में पढ़ेंगे।

राधा ने अपनी एक किताब दादा जी को दिखाते हुए पूछा, ''दादा जी, इस किताब में लिखा है कि आदि–मानव जंगलों में रहते थे। वे नंगे रहते थे और जानवरों का कच्चा मांस खाते थे? क्या यह सही है?

1

दादा जी ने बताया, ''हाँ बेटी, यह सही है। आदि–मानव जंगलों में रहते थे। वे बिना कपड़े पहने घूमते थे, कंदमूल और जानवरों का कच्चा मांस खाते थे।

2

उस समय लोगों को आग की जानकारी नहीं थी। काफी समय बाद उन्होंने पत्थर रगड़कर आग जलाना सीखा।

3

आग की जानकारी होने पर उन लोगों ने मांस भूनकर खाना शुरू किया। आग जलाकर वे जानवरों से अपनी रक्षा भी करते थे।

4

उस समय आदिमानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे। वे पत्थरों के हथियार प्रयोग में लाते थे।

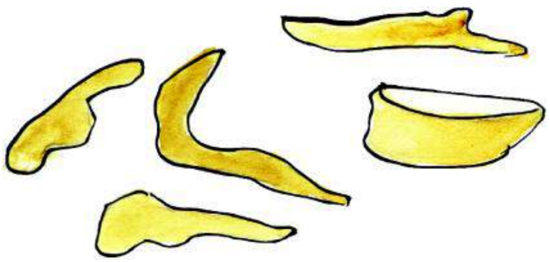

5

वे फलों को खाकर उनके बीज फेंक देते थे। उन्होंने नए पौधे उगते देखे। धीरे–धीरे उन्होंने खेती करना सीख लिया।

6

कई कार्यों में अपनी सहायता के लिए उन्होंने जानवरों से सहायता लेना शुरू किया।

7

खेती प्रारम्भ करने पर, फसल लेने से काटने तक उनको एक जगह रहना पड़ता था। इस तरह गाँव बसने लगे।

8

उसके बाद आदिमानव ने पहिए की खोज कर ली।

9

बाद में उन लोगों को धातु का ज्ञान हुआ। वे लोहे, पीतल के हथियार और बर्तन बनाने लगे।

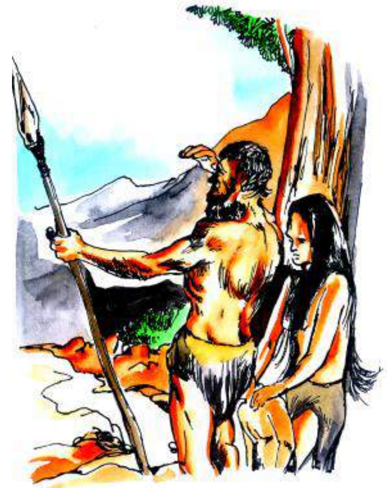

10

गुफाओं में रहते हुए उन्होंने चित्र बनाना शुरू कर दिया।

11

दादा जी ने बताया, 'बेटी मनुष्य ने इसी तरह प्रयास करते–करते अपना विकास किया है। आज भी आदिमानव की तरह दुनिया में लाखों लोग रह रहे हैं। विकास का यह क्रम अभी भी जारी है।'

12

शब्दार्थ

आदिमानव = शुरू के आदमी

कंदमूल = जमीन के अंदर उगने वाली वनस्पतियाँ जैसे शकरकंद, मूली, गाजर, आलू आदि।

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. आदिमानव का रहन–सहन कैसा था ?

प्र.2. गाँव व शहरों का विकास कैसे हुआ ?

प्र.3. आग जलाना सीखने पर आदि मानव को क्या लाभ हुआ ?

प्र.4. आदिमानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यों घूमते रहते थे ?

प्र.5. वे कच्चा मांस क्यों खाते थे ?

प्र.6. आदिमानव ने खेती करना कैसे सीखा ?

प्र.7. आदिमानव ने हथियार बनाना क्यों सीखा ?

प्र.8. यदि आग की खोज नहीं हुई होती तो तुमको क्या–क्या परेशानी होती ?

प्र.9. आदि मानव पत्थरों को आपस में रगड़कर आग जलाते थे। आजकल आग जलाने के क्या–क्या तरीके हैं।

प्र.10. आदि मानव गुफाओं में रहते थे। तुम किस प्रकार के घर में रहते हो ? दोनों प्रकार के घरों में क्या अंतर है ?

आदि मानव का घर	तुम्हारा घर

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

यहाँ हम सीखेंगे • समान अर्थ वाले शब्दों की जानकारी •समान अर्थ वाले शब्दों की जोड़ी बनाना • अशुद्ध शब्द को शुद्ध करना • शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करना ।

- कक्षा के दोनों समूह परस्पर शब्दों के अर्थ और उनका वाक्य–प्रयोग करने की गतिविधि करें।
- शिक्षक एक अनुच्छेद श्रुतिलेख के लिए बोलेंगे और विद्यार्थियों से पूर्व के अनुसार परीक्षण संबंधी कार्य कराएँगे।

प्र.1. इन शब्दों को पढ़ो व इनका प्रयोग करके एक–एक वाक्य बनाओ।

आश्चर्य, पूर्वज, इकट्ठा, वनांचल, झुंड ।

प्र.2. इन शब्दों को सुधारकर लिखो।

आश्र्चय, पूवर्ज, गाव, सथाई, चित्तर

प्र.3 दाईं ओर बने गोलों में कुछ नाम लिखे हैं और बाईं ओर के गोलों में उनकी विशेषता बताने वाले शब्द। इनकी सही जोड़ियाँ बनाओ।

हज़ारों कच्चा आदि मानव मांस जंगल

एक लाखों घने लोग वर्ष समय

प्र.4. इन वाक्यों को क्या, कब, कैसे और क्यों का प्रयोग कर, प्रश्नवाचक वाक्यों में बदलो।

क– राधा को आश्चर्य हुआ।

ख– आदिमानव कच्चा मांस खाते थे।

ग– आदिमानव ने खेती करना व पशुओं को पालना प्रारंभ किया।

घ– बहुत समय बाद गाँव व शहरों का विकास हुआ।

प्र.5 ने, को, की, में का प्रयोग करके वाक्य पूरे करो।

क. दादा जी ने राधा .... बताया।

ख. राधा .... दादा जी ने पूछा।

ग. उन लोगों को आग ......जानकारी नहीं थी।

घ. बस्तर .... बहुत आदिवासी रहते हैं।

3P8AGD

रचना

- आदिमानव के जीवन और आज के मानव के जीवन में क्या अंतर है? पाँच वाक्यों में लिखो।

योग्यता विस्तार

- वनवासियों के जीवन से संबंधित कुछ चित्र एकत्रित करो और अपनी चित्र–पुस्तिका में चिपकाओ।

शिक्षण–संकेत

- चित्रों को देखकर विषय–वस्तु को समझने में बच्चों का मार्गदर्शन करें।
- बच्चों को आदिमानव के जीवन, रहन–सहन, खान–पान आदि की जानकारी दें।
- कठिन वर्तनी वाले शब्दों को श्यामपट पर अशुद्ध लिखकर उसे बच्चों से सुधरवाएँ।

पाठ 10

चुहिया की शादी

एक ऋषि ने एक घायल चुहिया को बड़े लाड़–प्यार से पाला। चुहिया जब बड़ी हुई तब ऋषि को उसकी शादी की चिंता हुई। उन्होंने चुहिया से उसके मनपसंद वर के बारे में पूछा। चुहिया अत्यंत शक्तिशाली वर चाहती थी। ऋषि ने चुहिया की पसंद के वर को ढूँढ़ने का प्रयास किया। अंत में उन्हें कौन–सा वर मिला, आओ इस कहानी में पढ़ें।

किसी वन में एक ऋषि रहते थे। वे अपने आश्रम में ही रहकर अपना अधिक समय पूजा–पाठ, ईश्वर का ध्यान करने में व्यतीत करते थे।

एक दिन ऋषि अपनी कुटी के बाहर ध्यान में मग्न थे। अचानक उनकी गोद में चील के पंजे से छूटकर, एक चुहिया आ गिरी। ऋषि का ध्यान भंग हो गया। उन्हें उस अधमरी चुहिया पर तरस आ गया। उन्होंने चुहिया का घाव धोया, उसे दूध पिलाया। चुहिया चार–छह दिन में बिल्कुल ठीक हो गई।

ऋषि अब रोज ही अपने हाथों से चुहिया को खाना खिलाते। वे उसे खूब प्यार करते थे और अपनी बेटी के समान मानते थे। ऋषि के लाड़–प्यार से चुहिया खूब मोटी–तगड़ी हो गई।

चुहिया अब बड़ी हो गई थी। ऋषि को चुहिया के विवाह की चिंता हुई। उन्होंने उससे पूछा, ''बेटी, तुझे कैसा वर पसंद है?'' चुहिया ने कहा, ''पिता जी, मुझे ऐसा वर चाहिए, जो अत्यंत शक्तिशाली हो।''

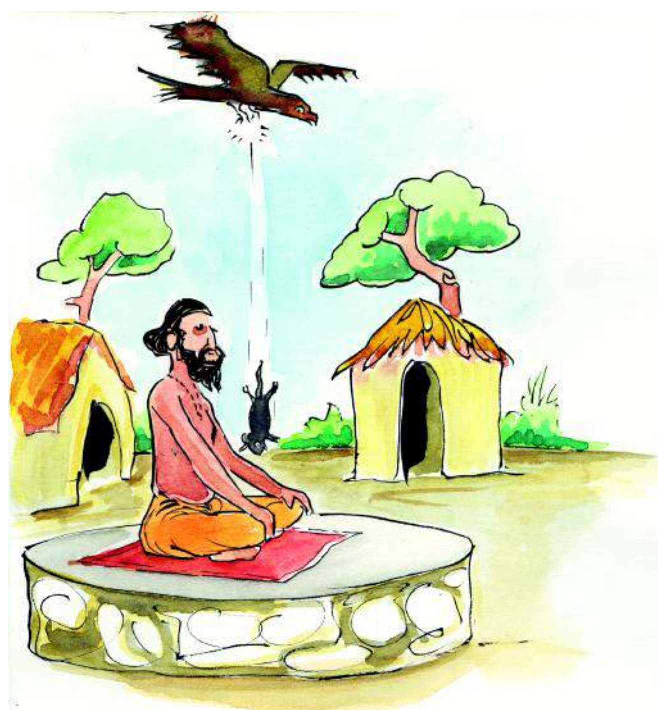

ऋषि ने सोचा, 'संसार में सूर्य से अधिक शक्तिशाली कोई नहीं है। अतः मुझे सूर्य के पास चलना चाहिए।'

ऋषि ने चुहिया को एक सुंदर युवती के रूप में बदल दिया था। वे उसे लेकर सूर्यदेव के पास पहुँचे। सूर्य के पास पहुँचकर ऋषि ने उनसे कहा,

''भगवन्! यह मेरी पुत्री है। यह अपना विवाह एक ऐसे वर के साथ करना चाहती है, जो अत्यंत शक्तिशाली हो। संसार में आपके समान शक्तिशाली और कोई नहीं है। अतः आप इसे स्वीकार कीजिए।''

सूर्य भगवान ने ध्यान लगाकर यह जान लिया कि ऋषि जिसे अपनी बेटी बता रहे हैं, वह तो एक चुहिया है। लेकिन वे ऋषि से स्पष्ट इंकार भी नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने बात बनाकर कहा, ''ऋषिवर! आपका यह कहना ठीक नहीं है कि मैं संसार में सबसे अधिक शक्तिशाली हूँ। मुझसे अधिक शक्तिशाली तो बादल है, जो जब चाहता है, मेरा प्रकाश रोक लेता है। आप कृपया उसी के पास जाइए।''

बात ऋषि की समझ में आ गई। वे चुहिया को लेकर बादल के पास पहुँचे। बादल से भी उन्होंने वही कहा, जो सूर्यदेव से कहा था। बादल ने भी ध्यान लगाया। उसे भी ज्ञात हो गया कि ऋषि चुहिया के साथ मेरा विवाह करना चाहते हैं। उसने थोड़ा विचारकर कहा, ''महात्मन्! आपने मुझे सर्वशक्तिमान समझा, इसके लिए धन्यवाद! परंतु मैं सर्वशक्तिमान नहीं हूँ। मुझसे अधिक तो शक्तिशाली पर्वतराज हिमालय हैं, जो आसानी से मेरा मार्ग रोक लेते हैं। आप कृपया उन्हीं के पास जाइए।''

अब ऋषि पर्वतराज हिमालय के पास पहुँचे। उन्होंने अपने मन की बात पर्वतराज से कही। पर्वतराज ने ध्यान लगाकर सारी बात जान ली। वे ऋषि से बोले, ''ऋषिवर! आप मेरे यहाँ पधारे, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ, किन्तु मैं दुनिया में सर्वशक्तिमान नहीं हूँ। मुझसे अधिक शक्तिमान तो चूहे हैं, जो मेरे अंदर अपने रहने के लिए बिल बना लेते हैं। आप उन्हीं के पास जाइए।''

ऋषि अपने आश्रम में लौट आए। अच्छा मुहूर्त देखकर ऋषि ने अपने आश्रम में ही रहनेवाले एक मोटे–तगड़े चूहे से चुहिया का विवाह कर दिया।

शब्दार्थ

सर्वशक्तिमान	–	सबसे अधिक शक्तिशाली या ताकतवर
आभारी	–	उपकार मानने वाला
मुहूर्त	–	कार्य करने का शुभ समय
आश्रम	–	ऋषि–मुनि का निवास–स्थान
पर्वतराज	–	हिमालय

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. ऋषि को चुहिया कैसे मिली?

प्र.2. चुहिया जब बड़ी हो गई तो ऋषि को किस बात की चिंता हुई?

प्र.3. चुहिया अपने लिए किस प्रकार का वर चाहती थी?

प्र.4. ऋषि ने सबसे अधिक शक्तिमान किसे माना?

प्र.5. बादल ने हिमालय पर्वत को अपने आपसे शक्तिमान क्यों बताया?

प्र.6. ऋषि चुहिया की शादी करने के लिए किस–किसके पास गए?

प्र.7. यदि चुहिया ऋषि की गोद में नहीं गिरती तो उसका क्या होता?

प्र.8. तुम्हारे विचार से संसार में सबसे शक्तिशाली कौन है?

प्र.9. नीचे लिखे वाक्यों को कहानी के क्रम के अनुसार लिखो।

क– ऋषि अपनी पुत्री को लेकर सूर्यदेव के पास पहुँचे।

ख– चुहिया चार–छह दिन में ठीक हो गई।

ग– ऋषि ने एक मोटे–तगड़े चूहे से चुहिया का विवाह कर दिया।

घ– पर्वतराज बोले, "ऋषिवर, आप मेरे यहाँ पधारे, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ।"

ङ– बादल ने कहा, "मुझसे तो अधिक शक्तिशाली पर्वतराज हैं।"

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. नीचे लिखे शब्दों के जोड़ों में से सही शब्द चुनकर लिखो।

ऋषि/रिषि; आस्रम/आश्रम; पर्वत/पव्रत; बिल/बील; ग्यान/ज्ञान; स्वीकार/श्वीकार।

प्र.2 नीचे दिए वाक्यों के खाली स्थानों में | के, | ने, | में, | को, | के | लिए, | से | उचित शब्द का प्रयोग कर वाक्य पूरे करो।

क– उनकी गोद .... एक चुहिया आ गिरी।

ख– ऋषि हिमालय .... पास पहुँचे।

ग– बादल .... भी ध्यान लगाया।

घ– ऋषि चुहिया .... लेकर सूर्य के पास गए।

ङ– ऋषि चुहिया .... वर ढूँढ़ने गए।

च– हिमालय आसानी .... मेरा मार्ग रोक लेता है।

पढ़ो, समझो और लिखो–

बाईं ओर जो शब्द लिखे हैं, वे सब पुरुष जाति के हैं। दाईं ओर के लिखे शब्द स्त्री जाति के हैं। पुरुष जाति के शब्दों को पुल्लिंग और स्त्री जाति के शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं।

शेर – शेरनी

हिरन – ....

बकरा – ....

बिल्ला – ....

पहाड़ – ....

बादल – ....

लड़का– ....

प्र.3 'नदी' शब्द में अंतिम वर्ण है 'दी'। 'दी' से शब्द बनता है 'दीपक'। 'दीपक' में अंतिम वर्ण है 'क'। क से शब्द बनता है 'कमल'। इस तरह शब्द के अंतिम वर्ण से शब्द बनाते जाओ। यह शब्दों की रेल बन जाएगी।

नदी दीपक कमल

शब्दों की इस रेलगाड़ी को आगे बढ़ाओ। शब्दों की रेल का खेल श्यामपट पर लिखकर खेलो।

याद रखो

- कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनके लिंग नहीं बदलते जैसे–

  उल्लू, गिरगिट, चमगादड़, कॉपी, लेखनी आदि।

प्र.4 ऐसे अन्य चार शब्द लिखो जिनके लिंग नहीं बदलते।

रचना

नीचे एक बंदर के बारे में कुछ बातें लिखी हैं। इनके आधार पर एक कहानी बनाओ।

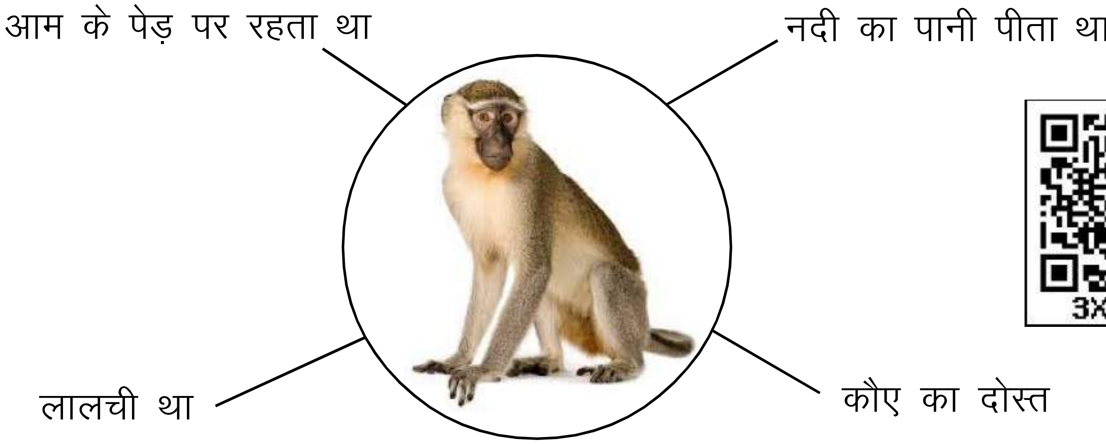

क्रियाकलाप–

प्र.1 अपनी चित्र–पुस्तिका में चुहिया का चित्र बनाओ और उसमें रंग भरो।

योग्यता विस्तार

- पशु–पक्षियों की एक–एक कहानी हर एक विद्यार्थी कक्षा में सुनाएगा।
- अगर ऋषि को बिल्ली का घायल बच्चा मिलता तो कहानी कैसे बनती? सभी विद्यार्थी मिलकर कहानी बनाएँ।
- स्त्रीलिंग–पुल्लिंग बनाने का खेल खेलो। कक्षा का एक समूह एक शब्द बोलेगा दूसरा समूह उसका लिंग बदलकर बताएगा।

शिक्षण–संकेत

- कहानी को हाव–भाव के साथ सुनाएँ और अनुकरण वाचन कराएँ। पाठ समाप्त करने के पश्चात् कहानी का सार विद्यार्थियों से पूछें।
- बच्चों को समूह में पढ़ने का अवसर दें।

पाठ 11

दादा जी

परिवार में दादा–दादी का पोते–पोती के प्रति गहरा स्नेह रहता है। पोते–पोती भी दादा–दादी के प्रति गहरा प्रेम रखते हैं। एक–दूसरे के हित की रक्षा भी वे करते हैं। इस पाठ में दादा जी के प्रति एक पोते का ऐसा ही भाव दर्शाया गया है। बच्चे और बूढ़े लोगों की प्रवृत्ति एक–सी होती है। इस पाठ से यह स्पष्ट होता है।

विक्की को स्कूल से घर आने में देर हो गई थी। उसकी माँ चिंतित हो रही थीं। उनकी चिंता एक घटना ने और बढ़ा दी। वे जब घर के बाहर लैटर–बॉक्स में चिट्ठियाँ देखने आईं, तभी हवा का तेज़ झोंका आया और घर के किवाड़ एकाएक ऐसे बंद हुए कि खोले नहीं खुले। भीतर अकेले पिता जी रह गए। विक्की की माँ पुकारते–पुकारते थक गईं लेकिन उन्होंने भीतर से कोई जवाब नहीं दिया। विक्की की माँ बेचारी रुआँसी हो गईं। आसपास के लोग घर के सामने इकट्ठे हो गए।

विक्की के स्कूल में जब क्रिकेट का मैच समाप्त हुआ, तब वह घर आया। घर के बाहर लोगों की जमा भीड़ को देखकर वह हैरान हो गया। उसने देखा, उसकी माँ बार–बार आँचल से आँखें पोंछ रही हैं। वह एकदम दौड़कर माँ के पास पहुँचा और उनसे पूछ बैठा,''माँ, क्या बात है? तू क्यों रो रही है?''

माँ तो कुछ नहीं बोल पाईं लेकिन पास में खड़ी उषा मौसी ने उसे बताया, ''घर का दरवाजा अपने आप बंद हो गया है। पिता जी अन्दर हैं। इधर से हम लोग आवाज लगा रहे हैं, वे किवाड़ खोलते ही नहीं। दिखाई भी नहीं दे रहे।''

विक्की ने हँसकर कहा,''माँ! जरा–जरा–सी बात पर आँखों में आँसू भर लाती हो। लो, मैं दादा जी से कहकर दरवाज़ा खुलवाए देता हूँ।''

इतना कहकर विक्की ने अपना बस्ता वहीं सीढ़ियों पर रखा और आम के पेड़ की ओर लपका। माँ ने उसे रोका, ''अरे बेटे, पेड़ पर मत चढ़ना। कहीं तेज हवा के झोंके में ....।''

''माँ, तुम इस तरह डराने की बातें क्यों करती हो? मुझे कुछ नहीं होगा। तुम देखती जाओ, मैं क्या करता हूँ।''

आम के पेड़ की एक डाल विक्की के घर की खिड़की के बराबर जाती थी। विक्की पेड़ पर चढ़कर सरक–सरककर खिड़की के सामने पहुँच गया। कमरे और कमरे के बाहर

का पूरा दृश्य उसे दिखाई दे रहा था। लेकिन वहाँ दादा जी नज़र नहीं आ रहे थे। वह टकटकी लगाए खिड़की की ओर देख रहा था। माँ ने पूछा, ''विक्की, पिता जी दिखाई पड़े ?''

विक्की ने कहा, ''नहीं माँ........हाँ।'' दादा जी अब उसके सामने थे। उनके हाथ में मिठाई की प्लेट थी। विक्की की माँ ने विक्की के जन्मदिन के लिए मिठाइयाँ बनाई थीं। लगता है दादा जी के हाथ में वे ही मिठाइयाँ पड़ गईं। लेकिन डॉक्टर ने तो उन्हें मिठाई खाने के लिए मना किया था। फिर दादा जी मिठाई क्यों खा रहे हैं?

माँ बार–बार पिता जी के बारे में पूछ रही थीं लेकिन विक्की खामोश था। अचानक दादा जी की नज़र विक्की पर पड़ी। वे भौंचक्के रह गए। उन्होंने होठों पर उँगली रखते हुए कहा ''श......श.....श'', यानी चुप रहना। विक्की ने सोचा,'' दादा जी ने भी मेरी कई बार सहायता की है। छमाही परीक्षा का परीक्षाफल आया था। तब पापा की मार से दादा जी ने ही बचाया था। उन्होंने पिता जी से कहा था, ''अब मैं ही विक्की को गणित पढ़ाऊँगा। लगता है, वह गणित में कमज़ोर है।'' मुझे भी इस समय दादा जी की सहायता करनी चाहिए।''

दादा जी का इशारा समझकर विक्की ने मुस्कुराते हुए गर्दन हिला दी। प्लेट को यथास्थान रखते हुए दादा जी ने तौलिए से मुँह पोंछा और वे दरवाज़ा खोलने आ पहुँचे।

रात हुई। विक्की के जन्मदिन का समारोह मनाया गया। बच्चों ने खूब धूम–धड़ाका किया। विक्की को तिलक लगाया गया। सब बच्चों ने गीत गाया, 'तुम जियो हजारों साल।' विक्की ने अपने मित्रों को मिठाइयाँ खिलाईं। फिर वह प्लेट लेकर दादा जी के पास गया। ''दादा जी, मुँह खोलिए''– वह बोला।

''नहीं बेटा, मैं मिठाई नहीं खाऊँगा। डॉक्टर ने मना किया है।'' ''दादा जी, डॉक्टर ने मना किया है, आप मिठाई नहीं खाएँगे। बताऊँ सबको दोपहर की बात।''

''न,न,न..........''कहते हुए दादा जी ने रसगुल्ला गपक लिया और वे बोले, ''तुम–जि–ओ ह–जा–रों साल।''

शब्दार्थ

लैटरबॉक्स – पत्र–पेटी

रूआँसी – रोने जैसी

हैरान – आश्चर्यचकित

खामोश – चुप

नीचे कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हुए हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर लिखो।

(उचित जगह, बगैर पलकें झपकाए देखना, हक्का–बक्का)

टकटकी लगाकर देखना – ——————————

भौंचक्का – ——————————

यथास्थान – ——————————

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. विक्की के घर उस दिन कौन–कौन सा उत्सव मनाया जा रहा था ?

प्र.2. विक्की की माँ क्यों चिंतित हो रही थीं ?

प्र.3. विक्की हैरान क्यों हो गया ?

प्र.4. माँ की बात सुनकर विक्की को हँसी क्यों आ गई ?

प्र.5. दादा जी अंदर क्या कर रहे थे ?

प्र.6. विक्की ने दादा जी की सहायता क्यों की ?

प्र.7. विक्की ने दादा जी की कौन–सी बात सबसे छुपाई थी ?

प्र.8. दादाजी ने बहुत देर तक किवाड़ क्यों नहीं खोले ?

प्र.9. किवाड़ खुलने पर विक्की की माँ ने दादा जी से किवाड़ न खोलने का कारण जरूर पूछा होगा। दादा जी ने उस समय क्या बहाना बनाया होगा? सोचकर लिखो।

प्र.9. यदि विक्की दादा जी की मिठाई खाने वाली बात सभी को बता देता तो दादा जी क्या करते?

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. पाठ में शब्द आए हैं–'पुकारते–पुकारते', 'सरकते–सरकते'। इसी तरह के अन्य पाँच *शब्द* लिखो और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

प्र.2. सही शब्द चुनकर लिखो।

क.	खत्म	ख.	लेकिन	ग.	परीक्षा
	खतम		लेकीन		परिक्षा
घ.	चींता	ङ.	आंचल	च.	चढ़ना
	चिंता		आँचल		चड़ना

प्र.3. पढ़ो, समझो और लिखो

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मिठाई	मिठाइयाँ	लड़का	लड़के
खिड़की	खिड़कियाँ	रसगुल्ला	रसगुल्ले
साड़ी	— — —	बस्ता	— — —
बकरी	— — —	रास्ता	— — —
लकड़ी	— — —	झगड़ा	— — —
सहेली	— — —	तवा	— — —

- हवाई जहाज आसमान उड़ रहा है।

तुम्हें यह वाक्य कुछ अटपटा लग रहा होगा। अब इस वाक्य को फिर से पढ़ो।

- हवाई जहाज आसमान में उड़ रहा है।

प्र.4. इन वाक्यों को ठीक करो।

क. दादा जी तौलिए मुँह पोछा। ——————————

ख. बच्चों खूब धूम धड़ाका किया। ——————————

ग. धूप बैठकर चना खाया । ——————————

घ. पहाड़ी गाँवों बाँध डर बना रहता है। ——————————

अब वे सभी शब्द फिर से लिखो जिन्हें तुमने जोड़ा है।

——————————————————————————

रचना

तुम अपना जन्मदिन किस प्रकार मनाते हो ?

योग्यता विस्तार

- तुम अपने दादा जी से कहानियाँ, घटनाएँ, चुटकुले जरूर सुनते होगे। हर एक विद्यार्थी दादा जी से सुनी हुई कहानी या घटना या चुटकुला कक्षा में सुनाए।

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को समूह में पढ़ने का अवसर दें।
- मुख्य संवादों का छात्र–छात्राओं से मंचन कराएँ।
- छात्र/छात्राओं से अपने–अपने दादा जी के संबंध में बताने को कहें।
- परिवार के अन्य बड़े सदस्यों के प्रति उनका क्या दृष्टिकोण है, जानें।

3XZPFG

पाठ 12

हाथी

हाथी अपनी अनोखी शारीरिक बनावट के कारण, बच्चों का ध्यान सहज ही अपनी ओर खींचता है। यह एक बुद्धिमान और उपयोगी पशु है। इस पाठ में हाथी के अनोखेपन और उसकी उपयोगिता को बताया गया है।

कहीं–न–कहीं, कभी–न–कभी तुमने भारी–भरकम, काला–काला, मोटी–मोटी टाँगोंवाला हाथी जरूर देखा होगा। छोटी–सी पूँछ, लंबी सूँड़ और सूप जैसे उसके कान होते हैं।

कभी–कभी गाँव में कुछ लोग हाथी लेकर आते हैं। वे उसे गाँव की गलियों में घुमाते हैं। गाँववाले उन्हें पैसे और अनाज देते हैं, तो कुछ लोग नारियल भी चढ़ाते हैं। महावत के इशारे पर हाथी नारियल फोड़ता है; बच्चों को अपनी पीठ पर बैठाता है।

हाथी की गिनती संसार के सबसे बड़े पशुओं में होती है। हाथी के नवजात बच्चे की ऊँचाई लगभग एक मीटर और वज़न 90 किलोग्राम तक होता है। बड़े हाथी का वज़न तो इससे कई गुना अधिक होता हैं। इसकी ऊँचाई लगभग तीन मीटर होती है।

तुमने हाथी की लंबी सूँड़ देखी होगी। यह वास्तव में हाथी की नाक है। इससे हाथी कई काम करता है। वह अपनी सूँड़ से भारी चीजों को आसानी से उठा लेता है। वह महावत को भी अपनी सूँड़ से उठाकर अपनी पीठ पर बैठा लेता है। किसी चीज़ को तोड़ने, फोड़ने एवं खाने में उसकी सूँड़ हमारे हाथ जैसा काम करती है।

नदी या तालाब में जब हाथी नहाता है, तब सूँड़ बड़ी पिचकारी की तरह काम करती है। वह अपनी सूँड़ में पानी भरकर, अपनी पीठ पर फव्वारा चलाता है और जी भरकर नहाता है। हाथी का रंग काला होने से उसे खूब गर्मी लगती है, इसलिए हाथी कई बार नहाता है। धूप, गर्मी एवं कीड़े–मकोड़ों से बचने के लिए हाथी अपने शरीर पर पाउडर की तरह धूल भी लगाता है। शरीर पर धूल डालने का काम भी उसकी सूँड़ ही करती है। हाथी के सूप जैसे बड़े–बड़े कान धीमी आवाज को सुनने में उसकी बड़ी मदद करते हैं। उसके हिलते हुए वे कान उसके खून को ठंडा रखने में भी सहायक होते है।

तुमने हाथी के मुँह के बाहर निकले हुए दो दाँत देखे होंगे। ये लगभग तीन फीट लम्बे होते हैं। ये दाँत केवल हाथी के होते हैं, हथिनी के नहीं। खाना खाने या खाना चबाने में इन दाँतों का कोई विशेष योगदान नहीं होता। हाथी के खाने के दाँत अलग होते हैं। इसीलिए एक कहावत है–हाथी के खाने के दाँत और दिखाने के और होते हैं।

शरीर के हिसाब से हाथी के लिए भोजन भी खूब लगता है। एक हाथी एक दिन में दो क्विंटल से भी अधिक चारा–पत्ता खाता है। गन्ना इसे बहुत पसंद है। हाथी अपना भोजन चबा–चबाकर खाता है। गाय, भैंस या अन्य शाकाहारी पशुओं की तरह हाथी जुगाली नहीं करता।

हाथी की खाल बहुत मोटी एवं मज़बूत होती है। इसकी खाल पर बाल भी होते हैं, किन्तु बहुत कम।

मनुष्य ने हाथी को अपने काम एवं लाभ के लिए पालतू बनाया है; वैसे हाथी जंगली पशु ही है। जंगल में हाथी झुंडों में रहना पसंद करते हैं। एक झुंड में इनके एक से अधिक परिवार रहते हैं। हथिनियाँ अपने बच्चों को खूब प्यार करती हैं एवं उन्हें सीख भी देती हैं। जंगली हाथी बहुत खूँखार होते हैं। वे जब कभी गाँवों में घुस आते हैं तो लोगों की फसलों एवं घरों को बहुत नुकसान भी पहुँचाते हैं।

प्राचीन काल से ही मनुष्य हाथी को पाल रहा है। राजा, महाराजा इसका उपयोग सवारी एवं युद्ध के लिए करते थे। पालतू हाथी आज भी जंगलों में बोझा ढोने का काम करते हैं। सरकस में भी हमें हाथियों के बहुत–से विचित्र करतब देखने को मिलते थे किन्तु अब सरकस में इनका उपयोग बंद कर दिया गया है।

हाथी जितना शक्तिशाली है, उतना ही बुद्धिमान प्राणी भी है। मशीनी युग आने से समाज में इनकी आवश्यकता एवं महत्व दोनों कम हुए हैं, फिर भी अपने गुणों के कारण भारतीय समाज में हाथी को गणेश का रूप माना गया है इसीलिए यह एक पूजनीय प्राणी है।

शब्दार्थ

महावत – हाथी को चलानेवाला।
शाकाहारी – जो पेड़–पौधे और उनसे प्राप्त होने वाली चीजें खाते हैं।
संसार – दुनिया।
नवजात – नया जन्मा हुआ।
स्नान – नहाना।

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. हाथी की नाक को क्या कहते हैं?

प्र.2. हाथी अपनी सूँड़ से कौन–कौन–से कार्य करता है ?

प्र.3. नहाने के बाद हाथी अपने शरीर पर धूल–मिट्टी क्यों छिड़कता है ?

प्र.4. हाथी जुगाली नहीं करता। ऐसे चार पशुओं के नाम लिखो जो जुगाली करते हैं।

प्र.5. हाथी की तरह और किस पशु को तालाब में नहाना बहुत पसंद है? क्यों ?

प्र.6. अपनी पसंद के किसी एक जानवर का वर्णन नीचे लिखे बिंदुओं के आधर पर लिखें।

क. शारीरिक बनावट के आधार पर।

ख. भोजन एवं आवास के आधार पर।

ग. मनुष्य के लिए उपयोगिता।

प्र.7. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाओ –

1. जुगाली का अर्थ है –
   अ. खाना खाना
   ब. चुगली करना
   स. खाने को पेट से मुँह में वापस लाकर उसे फिर से चबाना
2. हाथी को खाने में पसंद है –
   अ. गन्ना
   ब. नारियल
   स. सेब
3. हाथी भारी बोझ उठाता है –
   अ. अपने सिर से
   ब. अपनी सूँड से
   स. अपने दाँत से

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. नीचे काले मोटे शब्दों के विलोम शब्द (उल्टे अर्थवाले) खाली स्थान में लिखो।

क– हाथी **समझदार** जानवर है और गधा .... जानवर है।

ख– हाथी **भारी** चीजें उठाता है, बालक .... चीजें उठा पाता है।

ग– हाथी की चमड़ी **मोटी** होती है, आदमी की खाल .... होती है।

घ– हाथी **बड़ा** जानवर है, खरगोश .... जानवर है।

ङ– शेर **जंगली** जानवर है, बैल .... जानवर है।

प्र.2 नीचे दिए गए वर्णों का प्रयोग करते हुए शब्द बनाओ।

म, ना, हा, रि, व, य, त, ल।

प्र.3 मज़बूत में चार वर्ण हैं–

म ज बू त

इन चारों वर्णों से अलग–अलग शब्द बनाओ, जैसे

म– मगर, महावत ।

ज– ...., ... ।

बू– ...., ... ।

त– ...., ... ।

प्र.4 पढ़ो, समझो और लिखो –

समझ + दार = समझदार

हवा + दार = हवादार

फल + दार = ––––––

चमक + दार = ––––––

दम + दार = ––––––

––– + ––– = ––––––

––– + ––– = ––––––

रचना

हाथी से संबंधित कोई कविता या कहानी लिखो।

योग्यता विस्तार

- आपके गाँव या शहर में कभी हाथी आता है? यदि हाँ तो उस पर सवारी करके अपने अनुभव कक्षा में सुनाओ।
- हाथी के संबंध में यह कविता पढ़ो, याद करो और कक्षा में सुनाओ।

हाथी राजा बहुत भले,
सूँड़ हिलाते कहाँ चले?
कान हिलाते कहाँ चले?
मेरे घर आ जाओ ना,
हलुआ पूड़ी खाओ ना।

- जानवरों के संबंध में बहुत–से मुहावरे और कहावतें प्रचलित हैं। उन्हे ढूँढकर कक्षा की दीवार पर प्रदर्शित करो।

जैसे – अंधो का हाथी।

- **इस कहानी को पढ़ो–**

एक शहर में एक हाथी रहता था। वह प्रतिदिन दोपहर को नदी में नहाने जाता था। उसके रास्ते में दर्जी की एक दुकान थी। दर्जी बहुत दयावान था। हाथी उसकी दुकान पर पहुँचकर, सूँड़ उठाकर उसे प्रणाम करता था। दर्जी उसे प्रतिदिन एक केला खाने के लिए देता था। एक दिन दर्जी का लड़का दुकान पर बैठा था। दर्जी उस दिन किसी दूसरे काम से बाहर गया था। हाथी रोज की तरह दुकान पर पहुँचा। उसने लड़के को प्रणाम किया। केला लेने के लिए जैसे ही हाथी ने अपनी सूँड़ फैलाई, लड़के ने उसकी सूँड़ में सुई चुभो दी। बेचारा हाथी पीड़ा के कारण चिंघाड़ा। फिर वह नदी पर चला गया। उसने अपनी सूँड़ में नदी का गंदा पानी भरा। दर्जी की दुकान पर आकर उसने पिचकारी की तरह वह पानी दुकान में फेंक दिया। दर्जी के कई कपड़े खराब हो गए। दर्जी के लड़के को अपने किए का फल मिल गया।

अब बताओ–

क. हाथी, दर्जी से क्यों हिला–मिला था ?

ख. हाथी के प्रति दर्जी के पुत्र का व्यवहार कैसा था ?

ग. हाथी ने दर्जी की दुकान के कपड़े क्यों गंदे कर दिए ?

घ. हाथी के आचरण से हम पशुओं के व्यवहार में क्या बात देखते हैं ?

ङ पुत्र के आचरण पर दर्जी ने क्या कहा होगा ?

3YIGIR

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को ह्रस्व, दीर्घ वर्णों को ध्यान में रखकर पढ़ने का अभ्यास कराएँ।
- हाथी के संबंध में कक्षा में चर्चा करें।
- विद्यार्थियों को बताएँ कि कोमल व्यवहार करने पर पशु आदमी से हिल–मिल जाते हैं, लेकिन जो उनके साथ बुरा व्यवहार करते हैं, उनको वे सबक सिखा देते हैं।

पाट – 13

मावा क्कोटुम

S36ZVG

कांयकेर बस्तेर तुन हर्रंग मरकना दीप क्कोटुम इंतोर। इगडा अट्टाकुट क्कोटुम ते हर्रगिंग, तेकंग, मड़दिंग, सीसम, बीजंग लेहका कामनंग मराक मतंग। संगने मावा कामनंग रैंकंग, करकंग, तुमरिंग, वदुह अन बजरातंग दवंग गला पुटयतंग। इगडंग क्कोटुहने क्कोटुम काजेरिंग गला मेलय वेलिय्यतंग। इद पाट ते कांयकेर बस्तेर ता क्कोटुहना जीवोत प्पल्लो वेहले आता।

आरंग रेयतंग, पारंग रेयतंग,

डुम–डुम कस्साते, कोवेंग रेयतंग।

मट्टक मंतंग गुडर्रक मंतंग

कड़कंग मंतंग, गोदर्रंग मंतंग।

डुम–डुम कस्साते, कोवेंग रेयतंग।

भूक–भूक इंतंग,चींव–चॉव इंतंग,

गिजुर–गजुर,क्कोटुह मंतंग।

डुम–डुम कस्साते, कोवेंग रेयतंग।

मोल्लोह मंतंग, कोडर्रह मंतंग,

चितरह मंतंग, बिर्रबर्र दायतंग।

डुम–डुम कस्साते, कोवेंग रेयतंग।

नायूह मंतंग, गोडह मंतंग,

मासुह मंतंग, दमदम दायतंग,

डुम–डुम कस्साते, कोवेंग रेयतंग।

तुमरिंग मंतंग,मर्रकंग मंतंग,

नेंडिंग मंतंग,रद्द बद्द अरतंग।

डुम–डुम कस्साते, कोवेंग रेयतंग।

करकंग मंतंग,रैंकांग मंतंग,

हूरेंग मंतंग, जोप्पिंग रेयतंग।

डुम–डुम कस्साते, कोवेंग रेयतंग।

वेंजिंग मंतंग, गोर्रंग मंतंग,

कोहलंग मंतंग, हन्निंग रेयतंग,

डुम–डुम कस्साते, कोवेंग रेयतंग।

तेकंग मंतंग,हर्रगिंग मंतंग,

इरूह मंतंग, मड़दिंग मंतंग।

डुम–डुम कस्साते कोवेंग रेयतंग।

जप्पिंग मंतंग,टुट्टक मंतंग,

गुप्पले मंतंग,दड़मिंग कीतंग।

डुम–डुम कस्साते, कोवेंग रेयतंग।

आरंग रेयतंग, पारंग रेयतंग,

डुम–डुम कस्साते, कोवेंग रेयतंग।

पड़हे कियहना ओड़ डगुर – गुरूजी पाट तुन बेस ते केंज्नह हड़क्ले पड़हे कियनूर। पीलंग टप्पिनुंग होरकुदे केंच्च हड़क्ले इंदानुंग। गुरूजी पीलंग संग कोटुम तंग मरक अन पाट ते वालेंग जिया जन ता पोरोइंग क्कोटिह्च अवेन, वेहन्नुर। गुरूजी अन पीलंग हेरेता कोटुम ते जिनिस हूड़ला दायनूर।

टप्पिना अरेत् :–

आरंग–पारंग	=	लट्लट्टा हादलेंग कांदिंग।
कड़कंग	=	उचुहनंग डोडक, गोदोर्रकंग।
कसते	=	कसा,एर्र मंदले कुंडुंम, कोल।
गिजुर–गजुर	=	र्रीव–र्राव, किर्रसंड, कोल्हर।
बिर्र–बर्र	=	जतकत, हिक्के–हक्के, अवहा–तवहा।
रद्द–बद्द	=	सर्रप्पले, कुप्पंग–कुप्पंग।
उहरम्	=	गरजे मायना, वर्रहना, उहकाड़।
दमदमा	=	दामंग–दामंग, ठग, असुर्र।
जप्पिंग	=	जप्प रेयले,मराते हिर्रले टोंडा।
गुप्पले	=	गुप्प–गुप्पा, गुप्पले आकिंग बित्ती मरा।

टुट्टक	=	टुट्टा, हिर्रले डेरा, कड़ पर्रवह (गेड़ा– कोटूम)।
दड़्म	=	जूड़, मरा जंगो।
जोप्पिंग	=	र्रूत्तंग–र्रूत्तंग, र्रूमकंग–र्रूमकंग।

जबान अन कर्रियना

अदमे कियन्ना –

- कक्षा ते पीलन्नुंग रंड बाटंग कीस पूचेमायनूर अन वेही–वेहा कियन्नूर अन गुरूजी संग हियन्नूर।
- इदनंग गला पूचेमाया पर्रतोर।

  1. कोटुम तंग मरकनंग पोरोइंग वेहट ?
  2. अट्टाकूट कोटुम ते मंदा नंग काजेरिना परोइंग वेहट ?

- गोक तह वेहट–

(अ) इव टप्पिनुंग वेहट अन कोट्ट–

1. कोटुम ते बिर्र–बर्र बातंग वितयतंग?
2. कोटुम ते पुटन्नंग पंडिना परोय वेहट?
3. एर्र मंदले डेरा ते बातंग र्रीव–र्राव आस मंतंग?
4. डुम–डुम कस्साते बातंग रेय्यायतंग?
5. मरा दड़्मते बदम पड़यता?
6. कोटुम तह माकुन बातंग–बातंग पुटयतंग?

- इव टप्पिनंग सैरी अरेत कोटाट–

1. मट्टक मंतंग............................कोवेंग रैयतंग।
2. वेंजिंग मंतंग..............................कोवेंग रैयतंग।

- आदोह आलेंग ओड़िनुंग निहट–

1. भूक–भूक इंतंग... ।

2. तुमरिंग मंतंग... ।

क. टप्पिनुंग गला कोटट्/ कोटुमते वर्रियनह वेहले ।

ख. टप्पिनुंग गला आच्च कोट्ट अवेहने रूमकंग–रूमकंग हादलेनुंग वेहले आता।

ग. काम नंग मराकुंन वेहले बित्ती टप्पिनुंग कोट्ट ।

पल्लो ता ओड़ डगुर

- गुरूजी, टप्पिंग कोटिह्च पोल्लोना हूड़हिर–

गुडर्रक, गोदरंग, भूक–भूक, गिजुर–गजुर, बिर्र–बर्र, कोहलंग, उहरम, मर्रकंग।

- इदानंगे उन्दीय सुतुरतंग टप्पिनुंग पेर, वन्ने, कोटट् –

मर्रकंग,टेकंग,रैंकंग,करकंग।

- इव टप्पिना हेतलाम टप्पिंग कोटट्– बिर्रबर्र, गुप्पले, कस्साते, दायतंग, गुडर्रक।

- पड़हे कीम्ट अन समजे माम्ट–

आरंग–पारंग, डुम–डुम, भूक–भूक, चींव–चींव।

S91NCC

- इद पाट ता लेहका दुसरंग टप्पिंग, आपूना गोकते पंड्स केंजहट ?

पाठ 14

कौन जीता ?

3ZB4NP

'घमंडी का सिर नीचा' कहावत हमें सिखाती है कि हम कभी घमंड न करें और न ही अपनी प्रशंसा अपने मुँह से करें; दूसरों के गुणों को अपनाएँ। इस पाठ में एक घमंडी कौए और हंस की कहानी है। हंस के बच्चे ने कौए का घमंड कैसे चूर किया, इस कहानी में पढ़ेंगे।

गंगा नदी के किनारे बरगद का एक पेड़ था। उस पेड़ पर एक कौआ भी रहता था। वह बड़ा घमंडी था। एक दिन सुबह–सुबह तीन हंस बरगद के नीचे आकर बैठ गए। उनको देखकर कौआ बोला– ''अरे! आप लोग यहाँ क्यों बैठे हैं? क्या यह बरगद आपका है?'' एक हंस बोला– ''भाई, हम हंस हैं। मानसरोवर से आ रहे हैं। थोड़ी देर आराम करके यहाँ से चले जाएँगे।'' कौआ फिर बोला– ''तुम लोग उड़ना भी जानते हो या नहीं? मैं तो पचासों तरह की उड़ानें जानता हूँ। दम हो तो मेरे साथ उड़ लो।''

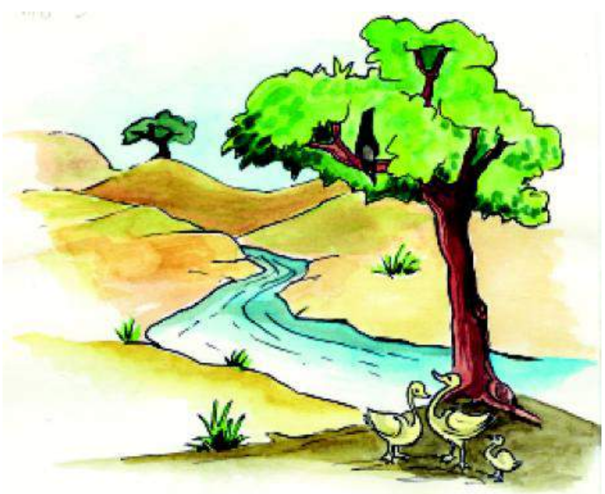

हंसों में से एक अभी बच्चा ही था। उससे अब नहीं रहा गया। वह बोला– ''भैया, मुझे तो केवल एक ही उड़ान आती है। अगर उड़ना चाहो तो उड़ लो।''

कौए ने कहा– ''बस, एक ही उड़ान; खैर उसे ही देखूँगा।'' दोनों गंगा नदी के ऊपर उड़ने लगे, कौआ आगे–आगे, हंस का बच्चा पीछे–पीछे। दोनों उड़ते रहे, उड़ते रहे। कौआ हंस के बच्चे से बोला– ''क्यों, थक गए क्या?'' हंस के बच्चे ने कहा– ''नहीं, उड़ते चलो।'' आखिर कौआ उड़ते–उड़ते थक गया। उसका दम फूलने लगा। अब तो वह नदी में गिरने को हुआ। हंस के बच्चे ने हँसकर पूछा– ''पचासों तरह की उड़ानों में से यह तुम्हारी कौन–सी उड़ान है ?'' कौआ बोला– ''भैया, मैं तो मर रहा हूँ। तुम्हें उड़ान की पड़ी है।'' हंस के बच्चे को कौए पर दया आ गई। उसने कौए को अपनी पीठ पर बैठा लिया । फिर वह बोला –''अब मेरी उड़ान देखो।''

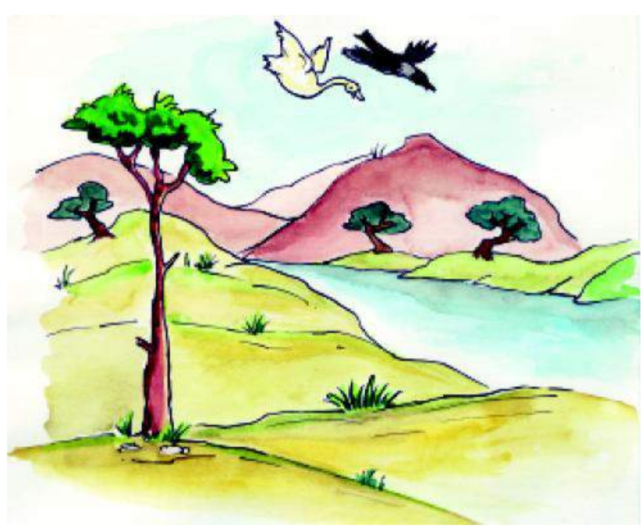

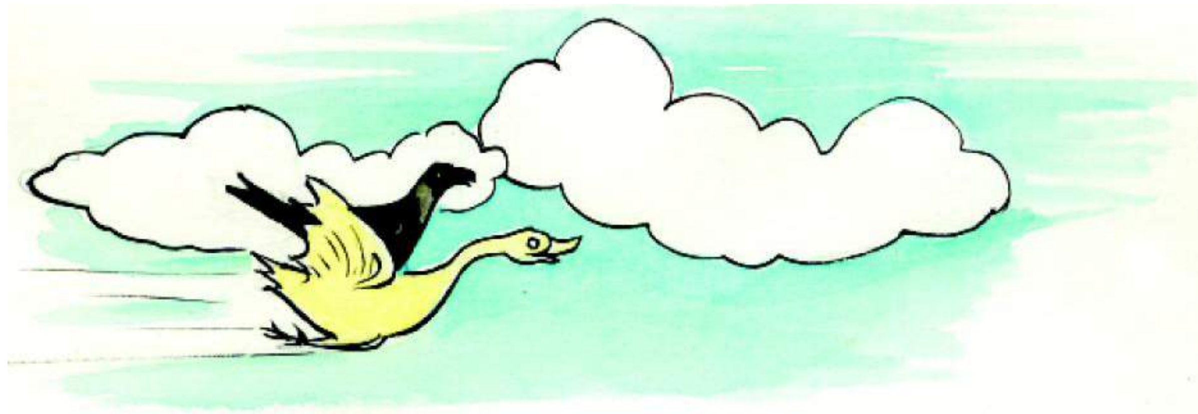

हंस का बच्चा कौए को लेकर बहुत ऊँचा उड़ गया । पीठ पर बैठा कौआ डर के मारे काँपने लगा। उसने तो अभी तक बरगद के आसपास ही चक्कर लगाए थे। गिड़गिड़ाते हुए वह बोला – ''भैया, मुझे तो जल्दी से बरगद पर पहुँचा दो, फिर तुम उड़ान भरना।'' हंस का बच्चा बोला – ''अभी तो तुम बड़ी–बड़ी बातें कर रहे थे, अब क्या हुआ?'' कौआ कुछ न बोला।

अंत में हंस का बच्चा बरगद की ओर लौट पड़ा। कौआ झट से उड़कर बरगद की डाल पर चुपचाप बैठ गया। कौए को अपने अहंकार पर बहुत पछतावा हुआ।

शब्दार्थ

घमंडी – जिसे बहुत घमंड हो, अभिमानी

उड़ान – उड़ने की क्रिया

गिड़गिड़ाना – दया की भीख माँगना।

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. हंस बरगद के पेड़ के नीचे क्यों बैठे थे ?

प्र.2. कौए ने हंसों से क्या कहा ?

प्र.3. हंस के बच्चे ने कौए की चुनौती क्यों स्वीकार की ?

प्र.4. उड़ान के अंत में कौन जीता ?

प्र.5. हंस ने अपने बच्चे से पूछा होगा– ''बेटा, उड़ान में क्या हुआ?'' तो हंस के बच्चे ने क्या जवाब दिया होगा? सोचकर लिखो ।

प्र.6. यदि हंस के बच्चे ने कौए की मदद नहीं की होती तो कौए की क्या दशा होती?

प्र.7. तुम्हें अपने दोस्त में कौन–से गुण अच्छे लगते हैं?

प्र.8. किसने, किससे कहा ?

क– ''क्या यह बरगद आपका है?''

ख– ''थोड़ी देर आराम करके यहाँ से चले जाएँगे।''

ग– ''भैया, मैं तो मर रहा हूँ। तुम्हें उड़ान की पड़ी है।'

प्र.9. सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाओ –

क. घमण्डी का अर्थ है –

अ. अच्छा

ब. अभिमानी

स. खराब

ख. गंगा नाम है –

अ. तालाब का

ब. नदी का

स. पेड़ का

ग. काँपना का अर्थ है –

अ. तेज दौड़ना

ब. जल्दी–जल्दी साँसे भरना

स. कँपकँपी

भाषा–अध्ययन एवं व्याकरण

प्र.1 नीचे लिखे अंश को पढ़ो। उसमें आए नामों को नीचे दी गई तालिका में लिखो।

"अंशुल बिलासपुर में रहता है। वत्सल का घर रायपुर में है। दोनों गर्मी की छुट्टियों में दिल्ली गए। दिल्ली में उनकी किरण मौसी रहती हैं। किरण मौसी के साथ दोनों दिल्ली घूमे। दिल्ली में उन्होंने कुतुबमीनार, लाल किला देखा। सभी लोग गांधी जी की समाधि देखने राजघाट भी गए। मौसी ने अंशुल और वत्सल के लिए बाजार से किताब, बस्ता और पेन खरीदा।

क– व्यक्तियों के नाम	ख– वस्तुओं के नाम	ग– स्थानों के नाम
....	....	....
....	....	....

प्र.2 पेड़ से क्या – क्या फायदे हैं ? लिखो।

क्र.	पेड़ का नाम	लाभ

योग्यता विस्तार

कहानी बनाओं–

विद्यालय, छुट्टी, बंदर, डंडा, पेड़, केला, नदी, तोता, मेंढक

इन शब्दों को पढ़कर तुम्हारे मन में कुछ बातें आई होंगी । इन सब चीजों के बारे में एक छोटी सी कहानी बनाओ और अपने साथियों को सुनाओ ।

3ZJZQC

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को समूह में पढ़ने का अवसर दें।
- एक विद्यार्थी को हंस और दूसरे को कौए के रूप में खड़ा करें और पाठ के अनुसार वार्तालाप कराएँ।
- कौए और हंस की विशेषताएँ पूछें और बताएँ।
- कहानी को नाटक के रूप में बदलकर अभिनय कराएँ।
- कौए और हंस चित्र खोजकर अपने पोर्टफोलियो में लगाओ।

3ZTVRZ

पाठ 15

मैं हूँ महानदी

हमारे देश में अनेक महत्वपूर्ण और पवित्र नदियाँ हैं। महानदी भी उनमें से एक है। यह हमारे राज्य की सबसे बड़ी और पवित्र नदी है। इस पाठ में महानदी अपनी कहानी स्वयं सुना रही है।

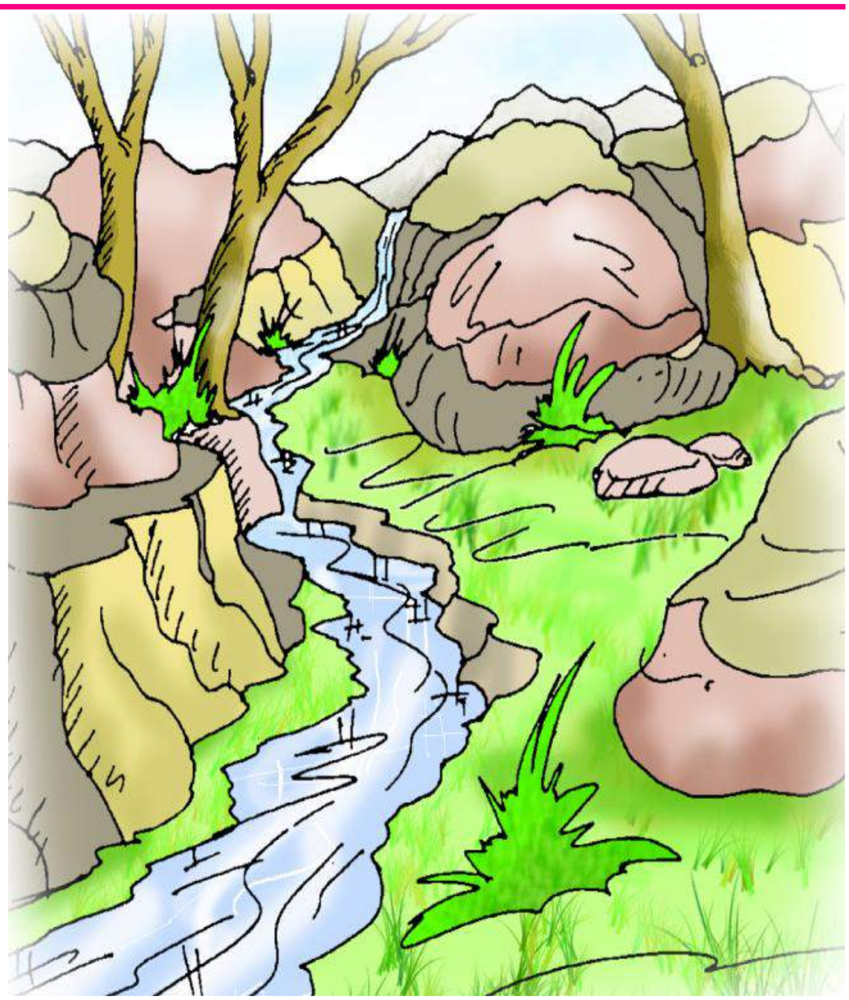

जी हाँ! मेरा नाम महानदी ही है।

गंगा, यमुना, गोदावरी एवं नर्मदा की तरह मैं भी एक प्राचीन, पवित्र नदी हूँ। बच्चो! क्या तुम जानते हो कि तुम सभी की तरह मेरी जन्मभूमि भी छत्तीसगढ़ ही है। धमतरी जिले में नगरी नामक कस्बा है। इसके पास ही सिहावा पर्वत में मेरा जन्म हुआ। इसी पर्वत की ढलानों में खेलते–कूदते मैं बढ़ती रही और धीरे–धीरे नीचे मैदान में उतर आई।

अब मैं कुछ बड़ी हो गई और उछल – कूद छोड़कर कल–कल करती हुई, धीरे–धीरे आगे बढ़ने लगी। मैदानी भाग होने के कारण, कहीं–कहीं पर मेरी धारा का कुछ पानी ठहरकर सरोवर भी बनाता गया। इन सरोवरों में बहुत सुंदर नीले रंग के कमल भी खिला करते थे। इन नीले कमल के फूलों के कारण कुछ लोगों ने मुझे 'नीलोत्पला', तो कुछ लोगों ने मुझे 'चित्रोत्पला' नाम भी दिया। जी हाँ! वेदों में मेरे ये ही नाम मिलते हैं। कुछ लोगों ने दुलार से मुझे 'महानंदा' भी कहकर पुकारा। आज मेरा प्रचलित नाम 'महानदी' है।

मेरे मार्ग में कहीं जंगल, पहाड़ हैं, तो कहीं दूर–दूर तक फैले हुए खेत हैं। यात्री कहते हैं– ''जब मैं जंगल, पहाड़ों से होकर गुजरती हूँ तो बहुत सुंदर दिखाई पड़ती हूँ।'' मेरे तटों पर जिन किसानों के खेत हैं,वे मुझे साक्षात् अन्नपूर्णा या लक्ष्मी कहते हैं।

धमतरी के मैदानों से निकलकर, मैं काँकेर एवं चारामा होते हुए राजिम पहुँची। यहाँ मेरी दो बहिनें–पैरी (पार्वती) और सोंढुर (सुंदराभूति) – आकर मुझमें मिल गईं। अब मेरा सम्मान भी बहुत होने लगा। राजिम में हमारे इस संगम–स्थल पर भगवान राजीवलोचन (श्री राम) एवं कुलेश्वर महादेव के दर्शनीय मंदिर बनाए गए। इन पवित्र मंदिरों में दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहता है। तीर्थयात्री मेरे जल में डुबकी लगाते हैं एवं मेरा जल ले जाकर भगवान शंकर पर चढ़ाते हैं। यहाँ पर माघ पूर्णिमा से प्रारंभ होकर महाशिवरात्रि तक एक विशाल मेला भरता है।

राजिम से आगे मेरे तट पर एक प्राचीन नगरी है–'आरंग'। 'आरंग' किसी जमाने में जैन धर्म का प्रसिद्ध केंद्र था। मेरे साथ–साथ कुछ और आगे चलने पर आप पहुँचेंगे 'सिरपुर'। यहाँ प्राचीन लक्ष्मण मंदिर एवं गंधेश्वर मंदिर दर्शनीय हैं। प्राचीन काल में सिरपुर (श्रीपुर) एक बड़ा नगर था। यहाँ एक बौद्ध संघाराम था, जहाँ हजारों छात्र शिक्षा प्राप्त करते थे।

लक्ष्मण मंदिर, सिरपुर

रामायण में राम को शबरी द्वारा बेर खिलाए जाने का वर्णन है। शबरी का आश्रम भी मेरे तट पर ही था। वह स्थान बहुत पुराने समय से शिवरीनारायण के नाम से जाना जाता है। यहीं 'शिवनाथ' और 'जोंक' नदियाँ मुझमें आकर मिलती हैं।

मेरे कुछ और आगे बढ़ने पर 'हसदो' और 'माँड' नदियाँ भी मुझे अपना सारा पानी दे देती हैं।

छत्तीसगढ़ से निकलकर मैं उड़ीसा प्रदेश में प्रवेश करती हूँ। अब तक मेरा आकार बहुत बड़ा हो जाता है। मेरे तट की चौड़ाई कहीं–कहीं एक किलोमीटर से भी अधिक हो जाती है। उड़ीसा में संबलपुर, कटक नगरों से होते हुए मैं पाराद्वीप पहुँचती हूँ। यहाँ मेरा रूप देखकर लोग कह उठते हैं –'सचमुच यह नदी नहीं, महानदी है।' यहाँ मैं बंगाल की खाड़ी में जा मिलती हूँ।

मेरे तट पर बसनेवाले मेरे पुत्रों ने मुझे हमेशा माँ की तरह सम्मान दिया; मुझे बहुत प्यार और दुलार दिया। कुछ जगहों पर मेरी धारा के बहते जल को रोकने के लिए बाँध बनाए गए हैं। छत्तीसगढ़ में प्रमुख बाँध है 'गंगरेल' बांध जिसे 'पंडित रविशंकर शुक्ल

जलाशय' कहा जाता है। उड़ीसा में संबलपुर के समीप हीराकुंड बाँध भारत का सबसे लंबा बाँध है। यह बाँध मेरे पानी को रोकने के लिए ही बनाया गया है ।

मैं धन्यवाद देती हूँ अपने बच्चों को जो मुझे दूषित होने से बचाकर रखते हैं। मैं सभी के सुखी एवं समृद्ध जीवन की कामना करती हूँ एवं बहते रहकर सबकी प्यास बुझाते रहने का वायदा करती हूँ।

शब्दार्थ

प्राचीन	–	पुरानी	सरोवर	–	तालाब
नीलोत्पला	–	नीले कमलवाली	यात्री	–	यात्रा करनेवाले लोग
सम्मान	–	आदर	संगम	–	मिलन
दर्शनीय	–	देखने योग्य			

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. हमारे राज्य में कौन – कौन सी नदियाँ बहती है ?

प्र.2. महानदी का नाम नीलोत्पला क्यों पड़ा ? इसे और किन–किन नामों से पुकारा जाता है ?

प्र.3. पैरी और सोंढुर नदियों का महानदी से मिलन किस स्थान पर होता है ?

प्र.4. सिरपुर क्यों प्रसिद्ध है ?

प्र.5. महानदी किन–किन क्षेत्रों से बहती हुई महानदी अंत में समुद्र से जा मिलती है ?

प्र.6. उन बाँधों के नाम लिखो जो महानदी पर बनाए गए हैं।

प्र.7. इनके नाम लिखो।

क– महानदी की दो सहायक नदियाँ

ख– सिरपुर के दो प्रमुख मंदिर

ग– राजिम के दो प्रमुख मंदिर

प्र.8 नदियों के दूषित होने के कारण लिखो।

प्र.9. अपने गाँव या शहर के आसपास की नदियों के नाम लिखो।

प्र.10. आजकल नदियाँ जल्दी सूख जाती है, इसका क्या कारण होगा?

प्र.11. सही विकल्प पर गोला (0) लगाओ –

क. ''प्राचीन'' शब्द का अर्थ है –

अ. नया

ब. पुराना

स. इनमें से कोई नहीं

ख. इनमें से कौन अलग हैं –

अ. छत्तीसगढ़

ब. उड़ीसा

स. सम्बलपुर

ग इनमें से एक नदी का नाम है –

अ. रायपुर

ब. महानदी

स. भिलाई

घ. ''यात्री'' शब्द का अर्थ है –

अ. नहाने वाले लोग

ब. खाना खाने वाले लोग

स. यात्रा करने वाले लोग

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। इन शब्दों के विपरीत लिंग वाले शब्द लिखो।

घोड़ा,	शेर,	मुर्गा,	मामा,	चाचा,
नानी,	भाई,	शिक्षिका,	गाय,	बेटी

समझो – 'मोहन एक सीधा–सादा लड़का था। वह साफ कपड़े पहनता था। वह गोल टोपी भी पहनता था।' पहले वाक्य में 'सीधा–सादा' लड़के की विशेषता बताता है। इसी प्रकार 'साफ' शब्द 'कपड़े' की और 'गोल' शब्द 'टोपी' की विशेषता बताते हैं। 'सीधा–सादा','साफ' और 'गोल' शब्द विशेषण हैं।

याद रखोः संज्ञा एवं सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्द विशेषण कहलाते है।

प्र.2. इन शब्दों को पढ़ो और विशेषण तथा विशेष्य शब्द अलग–अलग लिखो।
मधुर गीत, समृद्ध जीवन, बड़ा नगर, प्राचीन मंदिर,लंबी सड़क, काली घोड़ी।

रचना

1. अपने आस – पास के किसी स्थल का वर्णन अपने शब्दों में करो।
2. नदी के पानी के क्या उपयोग हैं?
3. इस शब्द पहेली में नगरों के नाम छिपे हैं। इन्हें खोजकर लिखो।

रा	क	जि	ट	म	क	न	चा	ग	रा	री	मा

योग्यता विस्तार

- गंगा एक नदी का नाम है । इसी तरह तुम कितनी नदियों के बारे में जानते हो ? उनमें किन्ही पाँच नदियों के नाम लिखो।

413RTM

शिक्षण–संकेत

- विद्यार्थियों से पानी की समस्या के संबंध में चर्चा करें।
- राज्य की प्रमुख नदियों के संबंध में चर्चा करें।
- महानदी के तट पर भरनेवाले मेलों की भी चर्चा करें।
- नदियों के महत्व पर भी चर्चा करें।
- बच्चों को अपने बारे में लिखने के लिए कहें।

पाठ 16

अगर पेड़ भी चलते होते

बच्चे आपस में बैठकर तरह–तरह की बातें करते हैं। उनकी कल्पनाएँ अजीब–अजीब होती हैं। कभी वे पक्षी बनकर आकाश की सैर करते हैं, कभी शेर बनकर जंगल का राजा बनते हैं। इस पाठ में भी वे कल्पना करते हैं कि अगर कहीं पेड़ चलने लगें तो क्या हो।

अगर पेड़ भी चलते होते।
कितने मजे हमारे होते ?

बाँध तने में उसके रस्सी,
जहाँ कहीं भी हम चल देते।

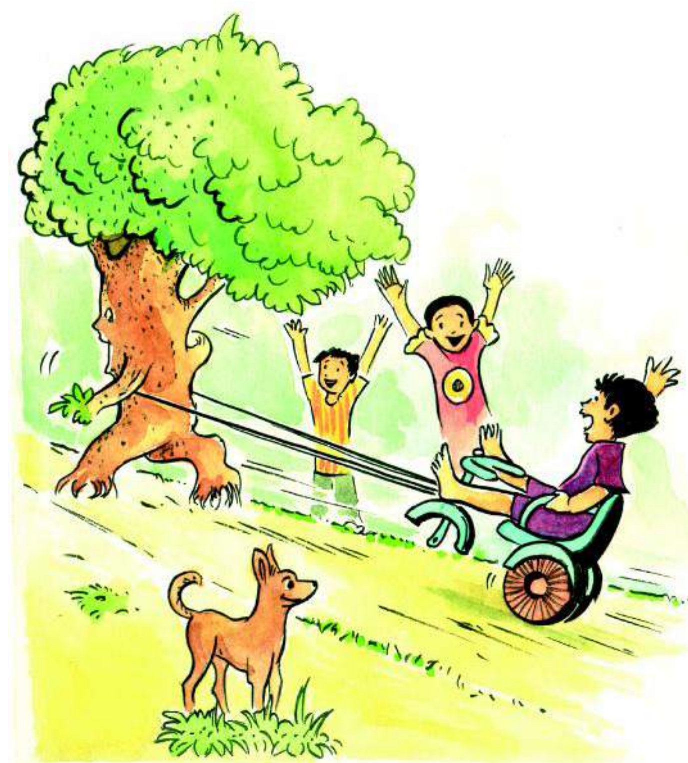

अगर कहीं पर धूप सताती,
उसके नीचे हम छिप जाते।

भूख सताती अगर अचानक,
तोड़ मधुर फल उसके खाते।

आती कीचड़, बाढ़ कहीं तो,
ऊपर उसके झट चढ़ जाते।

शब्दार्थ

तना	–	पेड़ के नीचे का मोटा भाग	सताती	–	कष्ट देती
मधुर	–	मीठा	झट	–	शीघ्र, तत्काल
धूप	–	सूर्य की रोशनी			

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. पेड़ों से हमें क्या लाभ होता है ?

प्र.2. अगर पेड़ बोलते तो हमसे क्या कहते ?

प्र.3. अगर पेड़ चलते होते तो क्या होता ?

प्र.4. पेड़ों पर हम कब–कब चढ़ते हैं ?

प्र.5. अगर पेड़ न होते तो हमें क्या कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती? सोचकर लिखो।

प्र.6. अगर पहाड़ भी चलने लगें तो क्या होगा ?

प्र.7. अगर हवा–पानी न होते तो क्या होता?

प्र.8. कल्पना करो कि यदि तुम्हारे पंख लग जाएँ तो तुम क्या–क्या करोगे।

प्र.9. अगर आदमी पेड़ की तरह एक जगह ही खड़ा रह जाए और पेड़ चलना शुरू कर दें तो क्या–क्या होगा?

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. नीचे दिए गए अनुच्छेद में से संज्ञा और विशेषण शब्दों को चुनकर तालिका में लिखो।

एक बगीचा था। बगीचे में आम, अमरूद तथा जामुन के बहुत–से पेड़ थे। कुछ पेड़ों के तने बहुत मोटे थे। वे बहुत पुराने पेड़ थे। उन पेड़ों के फल मीठे थे। वहाँ अमरूदों के पेड़ भी थे। अमरूद मीठे थे। पके जामुनों का रंग काला था। कभी–कभी बगीचे में बंदर आ जाते थे। वे बहुत शरारत करते थे। वे पेड़ों पर चढ़कर फल गिरा देते थे। उन फलों को चिड़ियाँ खा लेती थीं।

	संज्ञा (चीजों के नाम)	विशेषण (चीजों के गुण)
जैसे–	फल	मीठे

प्र.2 तुम इन शब्दों को अपनी भाषा में क्या बोलते हैं?

पेड़, धूप, तना, रस्सी, भूख, कीचड़, बाढ़।

प्र.3 सही विकल्प पर ( ) का निशान लगाओ –

क. "मजे" शब्द के समान तुकवाला शब्द लिखो –

अ. बजे

ब. राजा

स. फल

ख. इनमें से फल का नाम है –

अ. अमरूद

ब. मीठा

स. रायपुर

ग. अमरूद होता है –

अ. कड़वा

ब. नमकीन

स. मीठा

घ. तना है –

अ. मेड़ का एक भाग

ब. पेड़ का एक भाग

स. रेल का एक भाग

रचना

किसी पेड़ को देखो, उसका चित्र अपनी अभ्यास पुस्तिका में बनाओ और उसमें रंग भरो।

योग्यता विस्तार

अपने आसपास के पेड़ों को पहचानो और उनके नाम तालिका में लिखो।

फलदार पेड़,	काँटोंवाले पेड़,	छाया देनेवाले पेड़,	फूलदार पेड़।

शिक्षण–संकेत

- शिक्षक हाव–भाव और लय के साथ कविता का आदर्श वाचन करें।
- एक–एक पंक्ति हाव–भाव से प्रत्येक विद्यार्थी दोहराएँ।
- बाद में पूरी कक्षा लयपूर्वक कविता का गायन करे।
- विद्यार्थियों के उच्चारण पर ध्यान दें।

41LIWX

पाट – 17

असुर्र मुद्याल

ऊगाय ! मानेय ता सबले बेरहा बैरी आंद। ऊगाय मानेय आपूना हूजड़ नेहना/नहेना किया पर्रोर। ओर जियक बरबर बूतो कीस वल्लो–वल्लो कमय,सुक कलिय्ला पड़कयतोर अन अदेनका ओर नाटे बुमकदे पास्कनह आयतोर। इद पाटते इदमें ऊगाय मानेयता पीटो मंता।

इद पाटते माट कर्रियकट – गोंडी तंग पुनवंग आदोह टप्पिनुंग पड़हे कियना, कोटना कर्रियकट पीटोना बारे ते पुंदकट अन वेह पर्रकट, रोम्स पड़हे कियानंग चीनंग अडह टप्पिंग अन वड़कन टप्पिनुंग पुनहर।

कुबेय मुन्ने ता पल्लो आंद। कुड़मेल नार्र ते वर्रोड़ जोलसाय नयतमी परोय तोर मुद्यल मंदूर। मुद्यना तल्ला टुंड लेहका पिड़्च मंद। मुद्यल तल्ला ते रोजय उंद हर्रको गतिलदा पागा दोहच मंदूर। मुद्यना नन ते दिंगया (पोग्गा) गोट्टा रोज्जा मंद। मत्ति गोट्टा ते बस्केय दिंगया पोग्गा पय्योर। मुद्यना डोकरीहारी गल्ला मंद। अद गल्ला मुद्यन लेहका पिड़्च मंद। पल्क सप्पय हड़क्ले कुस्स मंदुंग। कुल कुल्ला बबड़ी आस मंद। मुद्या नंग इऊर जन मर्रक मंदूर ओरंग परोइंग वर्रोना करमू,वर्रोना धरमू मंद। मुद्याल उंद वतर्रही वक्कले तोकट्टा नय पोसे कीस मंदूर। नय वन्ने कुब्बेय हुसियर मंद। मुदियन संगुन बस्केय तासो, उच्चुन आरो आतेक हड़हुड़ले मुहच्दं। मुद्याल कम्मेक इत्तेक कम्मेक आंद। ताना तोकर्रतुन कूंय–कूंय इंजोर होलह कींद मुद्यना उंद गोड्डल मर्स मंद,तान बस्केय तासोर। मर्र्स तुन बस्केय मसियोर कन–कन्ना हड्स मंद। अद मर्रस्ते मुद्यल वर्रकिंग गल्ला बस्केय नड़कोर।

मुद्यनंग मर्रहरलोर वंज्जिंग वीतिंदुर। अच्चोन मुद्यल केतुल दे हंज उद्स मंदूर। पिर्र वांद अच्चोय पूहना तुन तास मर्रहरलोर नांद्स केतुदे हंदूर। अग्गा मुद्यल किस्स गल्ला मासोर पेकोर बाक्या किस मासवी बाबा इंदूर ?अच्चोय मुद्यल टुंगले तेद्स कुस–कुस हंदुर पेकोर पीन हास किस्स मास्दुंर अच्चोय वास मंजल उद्स किस आर्रन्दुंर

पेकोर पेर हंदुर नांगेल पूहला। अच्चनेक डोकरी टुकिलदे तोच्च गाटोंग कुसरिंग तंद। मुद्यल डोकरिन ओहदुंर बा कै नोर्रस् उदिदुंर। नय ओना तिंदना तुन हूड़ंद। नय नक्का–नक्का मुद्यना कूला ओदा तुर्रच्दं ।

तेद्स कुन मुद्यल नय दुन डोप्पा मेंड गाटो हीन्दुर। अचनेक नांगेल लेह्च पेकोर वास अवहरीन जावा गाटो कुसीर तलिहकन्दुर। डोकरी पेकोरकुन जावा गाटो कुसीर हींद। पेकोर करमू अन धरमू कोंदंग मेह्च मुल्द अचोय लोन ओंदुर। मुद्यल डोकरी ना मुन्ने ओना गोड्डल मर्रस तुन काच्च हंदुर। अच्चोय नय गला ओना पर्रेक–पर्रेक हंद। डोकरीन्क्ले नय अन मुद्याल लोते मुन्नेय अवदुंर।

डोकरी पर्रेक लोते अवंद बा मुद्याल,डोकरीन नावा बाटा मियला एर्र तचाकिन डोकरी इंदुर। डोकरी मुद्यन होंग आंद अन वेर तो असुर्रमुदियन एर्र गल्ला तच्चका अस्के मियनुर इंद। मुद्यल डोकरिन जल्दी किस मासा डोकरी इंदूर। डोकरी मुद्यन र्राकमा कींद। मुद्यल किस्स मासन पूरती गल्ला आयोर। मति डोकरी मुद्यन बन्नेय मया कीस मंद। मुद्यना सप्पय बूतो तुन डोकरी कीसिंद।

पेकोरंग कम्मय कीलेंग वंजिंग कोयनह आतुंग मुद्‌यल केतूल दक्के डेरा कीतुर ।नर्रका पल्लिंग पदिंग वांदुंग नेल दह उंद कोटुंज तुन हिड़त्ले तिंदुंग। मुद्‌याल टोर्र पुसुर्र कुटका कामरा तुन मुच कुन हुंच मंदूर ।

नय हड़हुड़–हड़हुड़ इनह मुहच्दं मति पीनी ता मारे मुद्‌यल तेदोर। नयदुन गल्ला पीनी ते पीन वस्न्द अच्चोय मुद्‌यन ओदा वास गोदा हींद। मुद्‌यल गला नय दुन नक्का–नक्का टुंडदुर, मति तेदोर किस पिव्ंद अच्चोय नेक्का हिरंगुंम हींद। नय दुन टुंडन्दूर अच्चोय बन्ने गुमगुमा कासन्द्। मुद्‌यन तो बन्ने हुस्कड़ वांद। मुद्‌यल अयना–दयना पुन्नोर हुस्कड़ आंन्दुर पेर वन्ने पदिंग वांदुग, अड़जह हर्रीय हंदुंग। नय बरबरा आरो तुन पुंद बा हड़हुड़–हड़हुड़ इनह मुहंच्न्द। मुद्‌यल सेते मांदुर, पीन वसन्द अच्चोय किस तुन हूड़न्दुर किस पिव्स मंद मुद्‌यना हर्रको कामरा आदुर लेहका हिरगुंम हीस मंद, मत्ति मुद्‌यल तेदोर।

वियृत पदिंग हत्तुंग कोंदंग वातुंग। मुद्‌यनंग वंज्जीनुंग सोपा अरतुंग। मुद्‌याल अम–गम पुन्नोर हुंच्चमंदुर। नय मुद्‌यना ओदा गोदा हीस मंजल हुंच्चमंद। डोकरी मुद्‌यन बाटा जावा पय्स हर्रीय वांद। अव्त् अन हूड़्त, नेल दे समसमा कोंदंग मंदुंग। डोकरी नेल दे हंज हूड़्त् तो नेल कोंदना मारे गुंडा पय्स मंद। डोकरी मुद्‌यना डेरा केतूदे वास हूड़्त।

मुद्याल अन नय गोदा हीस हुंजतोर,डोकरीना वालेतुन गम गला पुनोर। बेरा पक्कय आस मंद। डोकरी हूड़त् अन मुद्यन र्रीकमा कीसोर तेहंद। मुद्यल इंतोर पक्कय मिटस ता हुस्कड़ते हुंच्च मतोना डोकरी। असुर्र बग्गडोन्तो, नीकुन बुर्रकल गला तिन्नो। कोंदंग नेल दुन हिड़त्ले तितुंग। बांगने पीलन्नुंग पोसे कियाकट। अनसू, निम्मा पीलनुंग केप दायतोना इंतोन। इद्दमे केपना आंद, असुर्र बग्गाडोन्तो। डोकरी ना र्रीकमा ता मारे मुद्यना गोक ते अकल वात। अद्यातह मुद्यल बूतो कियना ते चतुर आतुर।

पड़हे कियहना ओड़ डगुर – पाट तंग टप्पिनुंग हड़क्कले जोर ने पड़हे कियना, पीलनुंग केंजिह्च् हड़क्–हड़क् पड़हे कीला इंदना। पड़हे कियना तुन बरसिह्ला अन संग हियनंग उवाट हियना। अड़चन तंग टप्पिनुंग समजह कियना अन अवेहकुन टप्पिने कीस वड़कला वेहन्ना। ऊगायलोरा संग मंटाना आयो इंजोर पीलनुंग वेहना ।

टप्पिना अरेत् :–

कुड़मेल	–	नार्रता परोय।
हर्रको	–	हर्रले गेत्तिल,चचको गेत्ति।
दिंग्या	–	पोग्गा, सुरती।
वतर्रही	–	वत्तले, किड़कड़ी।
टुंगले	–	उबुक्ले तेदना।
मुल्द	–	पोड़्द अरना, मुल्लना।
टुंडदूर	–	पेयदुंर, मोडर्रह कीन्दुर, तप्प पेयना।
तेदना	–	नित्तन्ना।
मुद्याल	–	सयन मानेय।
उवाट	–	पूना अकल, चेतबायना।

गोक् जबान :–

1. मुद्या नंग बच्चोजन मर्रक् मंदुर ओरंग बातंग–बातंग परोइंग मंदुंग ?
2. नय नक्का–नक्का बगा तुड़च्न्द ?
3. कोंदा ना मारे नेल बदम आस मंद ?

जबान :– अडीय कोटलेंग जबान्क्ना जबाब कोटट्–

1. मुद्यनंग कल्क बदम डिस्दुंग ?
2. मुद्याल बाता पोसे कीस मंदुर ?
3. मुद्याल केतुल दिके बाक्या डेरा कीतूर ?
4. नेलीनंग वंजिनुंग बांग–बांग काजेर तिंदा वांदुंग?
5. नय बगा हुंच्च मंद ?
6. डोकरी मुद्यान बाटा बांग पय्स वान्द ?
7. मावा कमयतुंन् नोकसान कियानंग काजेर परोइंग कोटट् ?
8. मुद्याल बांग पोसे कीस मंदूर अद बदम मुहच्द ?
9. डोकरीना रांगना ते मुद्यान बातल उवाट वात ?

जबान :– हीलेंग टप्पिनुंग ओड़ डगुर ते पंडट–

हड़हुड़ले, हड़कले, हिड़तले, गोड्ड्ल, वेंज्जिंग, नांगेल, असुर्र, पदिंग, मुद्याल, नय, डोकरी।

हेत्तलम टप्पिंग कोटट–

मर्रक्, हर्रको, डोकरी, पर्रेक, तोकर्र, पिर्र।

जबान :– अडिय हीलेंग टप्पिनुंग आच मंजल पिस्ले डेरा ते निहाट–

(डेरा,जोलसाय,टुंगले,टुंडदूर,पल्क,हुस्काड़,नय)

1. कुड़मेल नार्रते वर्रोड़..........नयतामी परोयतोर मुद्याल मंदूर।
2. ....सप्पय हड़क्ले कुस्स मंदुंग।
3. अच्चोय मुद्याल...........तेदस्स कुस्स–कुस्स हंदुर।
4. मुद्याल तिंदुर ओन.................. हूड़्न्द।
5. डोकरी मुद्याना हुंजना...............तुनं हूड़्न्द।
6. मुद्याल अयना–गयना...............ते हुंचोर मंदूर।
7. मुद्याल गला नय दुन नक्का–नक्का............मति तेदोर।

S9JFFM

पाठ 18

जंगल में स्कूल

42E72V

पढ़–लिखकर आदमी समझदार हो जाता है। फिर उसे न तो कोई धोखा दे सकता है और न वह ठगा जा सकता है। इस पाठ में पशुओं को शिक्षित करने के बहाने सब की शिक्षा के विकास पर बल दिया गया है।

गब्बर शेर जंगल का राजा था। एक दिन उसने जंगल के सब बच्चों को बुलाकर कहा, ''आज से तुम सब बच्चे स्कूल जाना शुरू करो। मैं देखूँगा कि कौन–सा बच्चा स्कूल नहीं जाता। सबसे होशियार बच्चे को मैं इनाम दूँगा।''

स्कूल खुल गया और लल्ली लोमड़ी पढ़ाने आई। हाथी के बच्चे, भालू के बच्चे, हिरन के बच्चे और बंदर के बच्चे, सब बच्चे पढ़ने आ पहुँचे। बच्चों को स्कूल बहुत अच्छा लगा। लल्ली लोमड़ी पढ़ाती हुई नाचती और गाती तो बच्चे भी नाचते और गाते। वह पढ़ाती तो बच्चे मन लगाकर पढ़ते।

सब बच्चे खुशी–खुशी स्कूल आते थे। लेकिन बंदर के एक बच्चे, बब्बन, को स्कूल आना अच्छा नहीं लगता था। वह तो बस जंगल में इधर–उधर घूमना चाहता था।

एक दिन लल्ली लोमड़ी के साथ सब बच्चे गाते–गाते पढ़ रहे थे। तभी बब्बन चुपचाप स्कूल से भाग निकला। किसी ने उसको निकलते हुए नहीं देखा।

अब बब्बन जंगल में घूमने लगा। कभी वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद जाता, तो कभी पेड़ की डाल पकड़कर झूलने लगता। लेकिन थोड़ी देर के बाद बब्बन की उछल–कूद रुक गई। उसने गब्बर शेर की आवाज़ सुनी थी। मारे डर के वह छलाँग भरकर बेल के एक पेड़ पर जा बैठा।

बब्बन पेड़ की डालियों के बीच छिप गया, लेकिन उसकी पूँछ नीचे लटक रही थी। गब्बर शेर ने उसे देख लिया। वह गरजकर बोला–

''बंदर के बच्चे,

अकल के कच्चे।

नीचे उतर।

मैं तुझे बताता हूँ,

स्कूल से भागा है,

अभी मज़ा चखाता हूँ।''

बोला बब्बन

शेर से डरते हुए

बहाना करते हुए।

लोमड़ी के आदेश मान

बेल लेने आ गया।

भागा नहीं कहीं भी

फिर भी पकड़ा गया।

गब्बर शेर ज़ोर से चिल्लाया, ''झूठा! लल्ली लोमड़ी कभी बेल नहीं खाती। तू स्कूल से भागा है। तू झूठा बहाना बना रहा है। सच बता क्या बात है–?

बब्बन डर से काँपने लगा। उसने सोचा कि अब शेर उसे जरूर सज़ा देगा। लेकिन गब्बर शेर दयालु था। उसने प्यार से कहा, ''नीचे उतरो, बच्चे! स्कूल से भागना ठीक नहीं।'' बब्बन डरता–डरता पेड़ से नीचे उतर आया। गब्बर शेर के सामने वह सिर झुकाए खड़ा रहा।

शेर ने कहा, ''बच्चे, स्कूल जाओ और पढ़ो। पढ़–लिखकर तुम समझदार बनोगे। फिर कभी ऐसे भागकर नहीं आना।''

बब्बन कूदता हुआ स्कूल की ओर गया। उस दिन के बाद वह ध्यान लगाकर पढ़ने लगा। थोड़े दिनों के बाद स्कूल की पढ़ाई में वह सबसे अच्छा माना जाने लगा। गब्बर शेर ने उसे बुलाया और कहा, ''शाबाश, बब्बन! तुम बहुत होशियार हो। यह रहा तुम्हारा इनाम।''

और गब्बर शेर ने उसे एक ढफली इनाम में दी।

शब्दार्थ

होशियार	–	चतुर	जवाब	–	उत्तर
अक्ल	–	बुद्धि	चुपचाप	–	बिना आवाज़ के

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1 गब्बर शेर ने बब्बन बंदर को स्कूल से भागने पर क्या समझाया ?

प्र.2 गब्बर शेर ने बब्बन बंदर को शाबाशी क्यों दी ?

प्र.3 स्कूल में कौन–कौन पढ़ने आए ?

प्र.4 बब्बन स्कूल से कब भागा ?

प्र.5 बब्बन स्कूल से क्यों भागा ?

प्र.6 बंदर के बच्चे को स्कूल क्यों नहीं अच्छा लगा होगा ?

प्र.7 गब्बर शेर ने बब्बन बंदर को स्कूल जाने के लिए प्यार से समझाया। यदि वह बब्बन से मार–पीट करता तो क्या होता ?

प्र.8 लल्ली लोमड़ी पढ़ाते समय नाचती, गाती थी। वह ऐसा क्यों करती थी ?

प्र.9 अगर बब्बन बंदर गब्बर शेर के समझाने पर भी स्कूल न जाता तो क्या होता?

प्र.10 शिक्षक नीच दिए वाक्यों की पट्टियाँ बनाएँ और बच्चों से उन्हें कहानी की घटनाओं के क्रम के आधार पर जमाने के लिए कहें।

बब्बन बंदर पेड़ पर चढ़कर छिप गया।

गब्बर शेर ने जंगल में स्कूल खोला।

बब्बन बंदर कक्षा से उठकर भाग गया।

गब्बर ने जानवरों के बच्चों को स्कूल में आने को कहा।

गब्बर शेर जंगल का राजा था।

बब्बन बंदर को पढ़ना अच्छा नहीं लगता था।

गब्बर शेर ने पढ़ाने का काम लल्ली लोमड़ी को सौंपा।

बब्बन बंदर पढ़ाई में सबसे होशियार हो गया।

प्र.11 सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाओ –

क. जंगल का राजा कहलाता है –

अ. लोमड़ी

ब. बंदर

स. शेर

ख. शेर –

अ. भिनभिनाता है

ब. दहाड़ता है

स. रेंकता है

ग. शाबाशी देना का अर्थ है –

अ. गाली देना

ब. उत्साह बढ़ाना

स. आगे बढ़ना

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. पढ़ो और करो।

'समझ' शब्द में 'दार' लगाने से शब्द बना है– 'समझदार'। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में 'दार' लगाकर नए शब्द लिखो और उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

खबर + ... = ...

शान + ... = ...

ईमान + ... = ...

इज्जत + ... = ...

मजे + ... = ...

42N34I

रचना

बब्बन बंदर स्कूल से भागकर शरारत कर रहा था। तुम भी शरारतें करते होगे। किसी शरारत के बारे में लिखो।

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को कहानी पढ़ने के लिए कहें।
- कहानी के विषय पर बच्चों से चर्चा करें।
- कहानी के माध्यम से स्कूल और पढ़ाई के महत्व पर चर्चा करें।
- स्कूलों के प्रति बच्चों का आकर्षण बढ़ाने के उपाय बच्चों से पूछें।
- शब्दों के अंत में शब्दांश जोड़कर नए शब्द बनाने का अभ्यास कराएँ।

पाठ 19

तेल का गिलास

42HY66

माँ को अपने सभी बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं– चाहे वे बुद्धिमान हों या मूर्ख। शेखचिल्ली बहुत ही मूर्ख लड़का था। लेकिन उसकी माँ उसे बहुत प्यार करती थीं। शेखचिल्ली की मूर्खता की एक कहानी इस पाठ में पढ़ेंगे।

शेखचिल्ली इस समय वही कर रहा था, जिसमें उसे सबसे ज्यादा मजा आता था। पतंगबाजी। वह इस समय वह अपने घर की छत पर खड़ा था और आसमान में लाल और हरी पतंगों के उड़ने का मजा ले रहा था। शेख भी कल्पना करने लगा – काश! मैं इतना छोटा होता कि पतंग पर बैठकर हवा में उड़ पाता.......

''बेटा, तुम कहाँ हो?'' तभी उसकी अम्मी ने छत की ओर देखते हुए कहा।

''बस अभी आया अम्मी,'' शेख ने कहा। अम्मी की आवाज़ से उसे दुख तो हुआ लेकिन उसने अपनी उड़ती पतंग को ज़मीन पर उतारा और फिर दौड़ता हुआ नीचे गया। शेख अपनी माँ का इकलौता बेटा था। पति की मौत के बाद शेख ही उनका एकमात्र सहारा था। इसलिए अम्मी शेख को बहुत प्यार करती थीं।

''बेटा, झट से इसमें दो रुपये का सरसों का तेल ले आ,'' उन्होंने कहा और दो रुपये के नोट के साथ–साथ शेख को एक गिलास भी थमा दिया।''तेल ज़रा सावधानी से लाना और जल्दी से वापस आना। रास्ते में सपने नहीं देखने लग जाना। तुम मेरी बात सुन रहे हो न?''

''हाँ, अम्मी,'' शेख ने कहा। ''आप बिल्कुल फिक्र न करें। जब आप फिक्र करती हैं, तब आप कम सुंदर लगती हैं।''

''अच्छा, अब चापलूसी बंद करो। फटाफट बाज़ार से तेल लेकर आओ।''

शेख दौड़ता हुआ बाज़ार गया। वैसे वह आराम से बाज़ार जाता परंतु उसकी अम्मी ने उससे झटपट जाने को कहा था, इसलिए वह दौड़ रहा था।

''लाला जी, अम्मी को दो रुपये का सरसों का तेल चाहिए,'' उसने दुकानदार लाला बेनीराम से कहा। उसके बाद उसने दुकानदार को गिलास और रुपये थमा दिए।

दुकानदार ने एक बड़े पीपे में से दो रुपये का सरसों का तेल नापा और फिर वह उसे गिलास में उड़ेलने लगा। गिलास जल्दी ही पूरा भर गया।

''भाई, इस गिलास में तो बस डेढ़ रुपये का तेल ही आएगा'', उसने शेख से कहा। मैं बाकी तेल का क्या करूँ? क्या तुम्हारे पास और कोई बर्तन है, या फिर मैं तुम्हें आठ आने वापस लौटा दूँ?''

शेख दुविधा में पड़ गया। उसकी अम्मी ने उसे न तो दूसरा गिलास दिया था और न ही पैसे वापिस लाने को कहा था। वह अब क्या करे? तभी उसे एक तरकीब समझ में आई! गिलास में नीचे एक गड्ढा– यानी छोटी–सी कटोरी जैसी जगह थी। बाकी तेल उसमें आसानी से समा जाएगा!

उसने खुशी–खुशी तेल से भरे गिलास को उल्टा किया। सारा तेल बह गया। फिर उसने गिलास के पेंदे में बनी छोटी कटोरी की ओर इशारा किया। ''बाकी तेल यहाँ डाल दो,''उसने कहा।

लाला बेनीराम को शेख की बेवकूफ़ी पर यकीन नहीं हुआ। उन्होंने सिर हिलाते हुए शेख की आज्ञा का पालन किया। शेख ने गिलास को सावधानी से उठाया और फिर वह घर की ओर चला। लोग शेख की मूर्खता पर हँस रहे थे। पर शेख पर उनका कोई असर नहीं पड़ा।

जब वह घर पहुँचा तब उसकी माँ कपड़े धो रही थी। ''बाकी तेल कहाँ है?'' माँ ने गिलास के पेंदे की छोटी कटोरी में रखे तेल को देखकर पूछा।

''यहाँ'', शेख ने गिलास को सीधा करने की कोशिश की। ऐसा करते समय बचा–खुचा तेल भी बह गया।

''बाकी तेल यहाँ था, अम्मीजान, मैं सच कह रहा हूँ। मैंने लाला जी को तेल इसमें डालते हुए देखा था। वह कहाँ चला गया?''

''ज़मीन के अंदर! तुम्हारी बेवकूफी के साथ–साथ!'' उसकी माँ ने गुस्से में कहा। ''क्या तुम्हारी बेवकूफी का कोई अंत भी है?''

शेख गर्दन झुकाए सब सुन रहा था। वह बोला, ''मैंने बिल्कुल वही किया जो आपने मुझसे करने को कहा था। आपने मुझसे इस गिलास में दो रुपये का तेल लाने को कहा था और वही मैंने किया। गिलास छोटा होने पर मुझे क्या करना है, यह आपने मुझे बताया ही नहीं था और अब आप मुझ पर नाराज़ हो रही हैं। आप गुस्सा न करें अम्मी। जब आप गुस्से में होती हैं तब आप......''

''अगर तुम मेरे सामने से तुरंत दफा नहीं हुए तो मैं तुम्हारे चेहरे को खूबसूरत बना दूँगी–'' अम्मी ने पास पड़ी झाड़ू उठाते हुए कहा, '' मैं तुम्हारी बेवकूफियाँ कब तक सहन करती रहूँगी ?''

शेख ने अपनी पतंग लपककर ली और छत पर चढ़ गया। माँ दुखी होकर दुबारा कपड़े धोने में लग गईं। उन्हें अब तेल लाने के लिए खुद बनिए की दुकान पर जाना पड़ेगा, फिर भी उनका मानना था कि मेरा बेटा बहुत ही आज्ञाकारी और प्यारा है।

तभी किसी ने बाहर से दरवाज़ा खटखटाया। लाला बेनीराम का छोटा लड़का तेल की बोतल लिए खड़ा था। ''बुआ जी, यह तेल लाया हूँ,'' उसने कहा। "जब शेख भैया ने तेल से भरे गिलास को उल्टा, तो किस्मत से तेल वापस पीपे में जा गिरा। भैया कहाँ हैं? उन्होंने मुझे पतंग उड़ाना सिखाने का वायदा किया था।"

''वह ऊपर है। बेटा, तुम छत पर चले जाओ,'' शेख की माँ ने तेल ले लिया और उस छोटे लड़के के गाल को थपथपाया। फिर वह मुस्कुराती हुई दुबारा अपने काम में जुट गईं।

शब्दार्थ

पतंगबाजी	–	पतंग उड़ाना	इकलौता	–	अकेला
फिक्र	–	चिन्ता	दफा हो जाना	–	चले जाना
फटाफट	–	जल्दी, तुरंत	आसान	–	सरल

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. शेख की अम्मी ने उसे किस काम के लिए बाजार भेजा था ?

प्र.2. तेल का गिलास भर जाने पर दुकानदार ने शेख से क्या कहा ?

प्र.3. माँ के नाराज होने पर शेख क्या कहता था ?

प्र.4. सरसों का तेल लेकर शेख किस प्रकार घर आया ?

प्र.5 यदि तुम तेल लेने जाते तो बचा हुआ तेल कैसे लाते ?

प्र.6. दुकानदार ने तेल लौटाकर ठीक किया या गलत। कारण बताते हुए उत्तर लिखो।

प्र.7. यदि शेखचिल्ली बचे इस तेल को लेने के लिए गिलास नहीं पलटता तो तेल को घर कैसे और किसमें लेकर जाता ?

प्र.8. तुम घर में किन – किन तेलों का किस किस – किस कार्य के लिए उपयोग करते हो –

खाना पकाने के लिए	सरसों , तिल का तेल, फल्ली का तेल, सोया का तेल
हाथ, पैर, सिर में लगाने के लिए	
चूल्हा जलाने के लिए	
मोटर, बस, चलाने के लिए	
दिया जलाने के लिए	

प्र.9. सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाओ –

1. फटाफट का अर्थ है –

अ. फटा हुआ ब. जल्दी स. पटाखे की आवाज

2. तेल को मापते हैं –

अ. दर्जन में ब. लीटर में स. मीटर में

3. "चिंता" शब्द का सही अर्थ है –

अ. मजा ब. गुस्सा स. फिक्र

4. "नाराज होना" का सही अर्थ है –

अ. हँसना ब. गुस्सा होना स. नाचना

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

रचना

नीचे दी गई शब्द पहेली में जंगल से संबंधित छूटे हुए वर्णों को भरो। वर्णों की तलाश के लिए तुम शब्द–संकेतों का उपयोग कर सकते हो।

शब्द–संकेत

हाथी
शेर
मोर
बरगद
अजगर
तोता
मैना
गीदड़
हिरन
खरगोश

शब्द पहेली

1 ब			द	■	2 तो	
■	3	थी	■	4 हि		न
5 ख			श	■	6	र
■	7	र	■	8 गी		ड़
9 अ		ग		■	10 मै	

योग्यता विस्तार

- तेल हमें किराने की दुकान पर मिलता है। नीचे लिखे सामान हमें किन दुकानों पर मिलेंगे –

सामान	कहाँ पर मिलते हैं ?
कॉपियाँ	
दवाइयाँ	
कपड़े	
मोबाइल	

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को बारी–बारी से पढ़ने का अवसर दें।
- बच्चों को पढ़ने में आनेवाली कठिनाइयों को चिह्नित कर दूर करें।
- शेखचिल्ली या लालबुझक्कड़ की कोई कहानी सुनाएँ।
- बच्चों को इसी प्रकार की हास्य की कहानियाँ खोजकर पढ़ने को उत्साहित करें।

436U7T

43FQ9G

पाठ 20

अब बतलाओ

सब जानते हैं कि चूहे और बिल्ली में घोर शत्रुता है। बिल्ली को देखते ही चूहा जान बचाकर भागता है। इस कविता में चूहे और बिल्ली की ऐसी ही कहानी है। एक बिल्ली चूहे को पकड़ने के लिए दौड़ती है, चूहा भागता है। आओ देखें, चूहे की जान कैसे बचती है ।

कोने में बिल्ली जो देखी
भागा चूहा आँख बंद कर।
पीछे–पीछे बिल्ली दौड़ी,
तेज चाल से उछल–उछलकर।।

चूहे को कुछ पता नहीं था,
गहरा कूआँ पड़ा सामने।
आँख बंद होने के कारण,
पानी में गिर, लगा काँपने।।

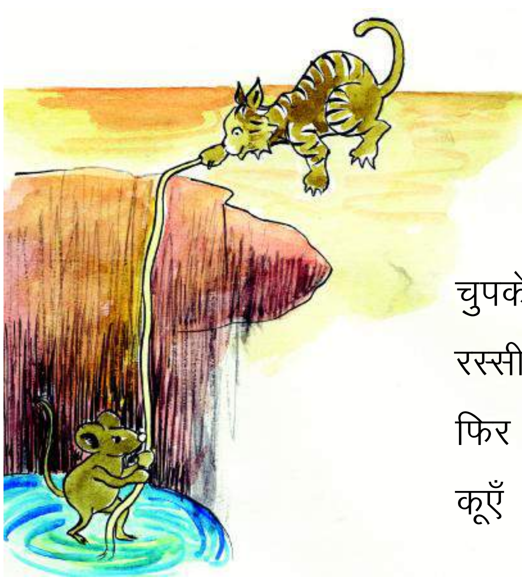

बिल्ली रानी लगी सोचने,
अब मैं कैसे भूख मिटाऊँ।
कौन यत्नकर, मैं चूहे को,
पानी से बाहर ले आऊँ ?

चुपके–चुपके गई कहीं से,
रस्सी एक ढूँढ़कर लाई।
फिर उसने वह जल्दी–जल्दी
कूएँ के अंदर लटकाई।।

चूहे ने वह रस्सी पकड़ी,
और साथ ही ऊपर ताका।
उसी समय बिल्ली रानी ने,
कूएँ में नीचे को झाँका।।

मेरे साथी अब बतलाओ,
चूहा क्या ऊपर आएगा ?
या रस्सी को छोड़ कुएँ के,
पानी में ही मर जाएगा ?

शब्दार्थ

यत्न	–	प्रयत्न, कोशिश	ताका	–	चुपके से देखा
झोंका	–	नीचे झुककर देखा			

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. चूहा क्यों भागा था ?

प्र.2. चूहा कुएँ में कैसे गिर पड़ा ?

प्र.3. चूहे को कुएँ में गिरा देखकर बिल्ली क्या सोचने लगी ?

प्र.4. चूहे को कुएँ से निकालने के लिए बिल्ली ने क्या तरकीब सोची ?

प्र.5. चूहे ने रस्सी पकड़ ली। वह ऊपर जाना चाहता था लेकिन तभी उसे ऊपर बिल्ली दिखाई पड़ी। अब बताओ कि चूहा ऊपर जाएगा या वहीं पानी में पड़ा रहेगा ?

प्र.6. कविता में से वे पंक्तियाँ चुनकर लिखो जिनमें–

क. चूहे का कुएँ में गिरना बताया गया है।

ख. चूहे को काँपते हुए बताया गया है।

ग. बिल्ली चूहे को कुएँ से निकालने का प्रयत्न करती है।

घ. बिल्ली के द्वारा चूहे का पीछा करना बताया गया है।

प्र.7. बिल्ली और चूहे का बैर है। इसी प्रकार कुछ अन्य जीवों का आपस में बैर रहता है। इस तरह के जीवों की सही जोड़ियाँ बनाओ :

क	ख
नेवला	हिरन
बाज	मेंढक
शेर	साँप
भेड़िया	चिड़िया
साँप	बकरी

प्र.8. सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाओ –

क. सही शब्द है –

अ. कुआँ

ब. कुँआ

स. कुँआँ

ख. इनमें से "यत्न" शब्द का अर्थ है –

अ. रत्न

ब. खुशी

स. कोशिश

ग. इनमें से "ऊपर" शब्द का विलोम शब्द है –

अ. नीचे

ब. पीछे

स. आगे

घ. चूहा रहता है –

अ. पेड़ पर

ब. घोंसले में

स. बिल में

हाय री किस्मत

1

घर में एक छोटा
चूहा दौड़–भाग
कर रहा था।

2

इतने में एक बिल्ली
आकर उस पर झपटी।
चूहा एक बोतल
में घुस गया।

3

बिल्ली ने बोतल में
पंजा डालकर उसे पकड़ने
की कोशिश की, लेकिन
पंजा बोतल में नहीं गया।

4

बिल्ली चली गई। तब और चूहे वहाँ आ गए। एक चूहे पर दूसरा, उस पर तीसरा बैठा। उसने पूँछ बोतल में डाल दी।

5

पूँछ के सहारे बोतल में से छोटा चूहा निकल आया। सारे चूहे बिलों में भाग गए।

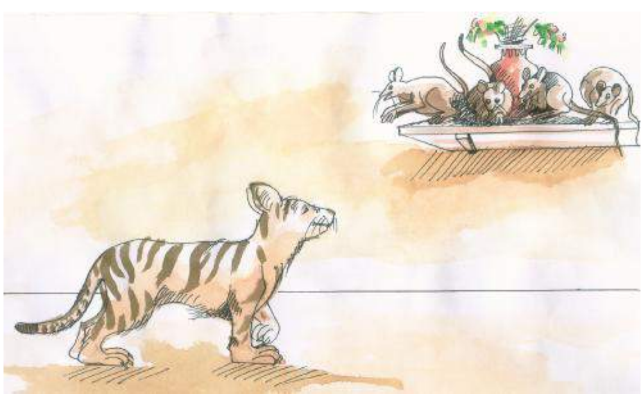

6

बिल्ली आई। वह साथ में काँटा लाई थी। खाली बोतल देखकर उसने माथा ठोंका। बिल में बैठे चूहे उसे चिढ़ाने लगे

रचना

- तुमने कक्षा 2री में ''चूहों, म्याऊँ सो रही है'' कविता पढ़ी होगी उसे लिखकर अपनी कक्षा की दीवार पर लगाओ।

योग्यता विस्तार

- चूहा बिल्ली का भोजन है, अगर बिल्ली चूहों को खाना छोड़ दे तो क्या होगा ?
- भेड़िए और मेमने के संबंध में ऐसी ही कहानी बनाकर कक्षा में सुनाओ।
- बिल्ली के बारे में तुमने कविता पढ़ी। अब यहाँ उसी के संबंध में यह कविता भी पढ़ो।

मेरी बिल्ली, बड़ी निठल्ली
लेटी रहती, ढीलम–ढिल्ली।

चूहे आते, धूम मचाते,
खूब उड़ाते, खुल्लम खिल्ली।

नहीं झपटती, नहीं पकड़ती,
हरदम करती, टालम टिल्ली।

–कृष्णकांत तैलंग

43PLB4

शिक्षण–संकेत

- कविता को हाव–भाव और लय के साथ पढ़ें और अनुकरण वाचन कराएँ।
- पढ़ने का अवसर सभी विद्यार्थियों को दें।
- विद्यार्थियों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें।
- बच्चों को बाल–पत्रिका–बचपन–पढ़ने के लिए दें।
- बचपन बाल–पत्रिका से कविता, कहानी पढ़कर सुनाने के लिए कहें।

पाट – 21

हट्टोंग

इद पाट ते कोयतोर वड़कन टप्पि तंग हट्टोंग अन टप्पिनुंग सक्लह कीस कोट्ले आता इवेह्ने कोयतोर बूमता रीती–रिवाज,तिंदना,उंडना,मंदना अन काम नेंग तंग जिनिस कुन वड़कन्न टप्पिते ओड़िंग–ओड़िंग कोटले आता।

1. पोर्रो साता, अडीय मुद्याल।

2. उचुह्ना टीराना तड़क मिटास।

3. कै–काल, डोडरी, पोट्टा पांडर्री।

4. बिन टोडोमता, नारेंगा पंड।

5. पोर्रो गूडा, अडिय मेस्क।

6. वर्रोड़ पेकाल, राजन किल्हयतोर।

7. बाहीर पड़ेका, लोप्पा हव।

8. पोर्रो काल, अडीय तल्ला।

9. अडीय पूजा, पोर्रो बाजा।

जबाब :– 1. गुन्डे, 2. कूर्रू पन्ड, 3. कन्डेल, 4. मेंज, 5. इरूम पुंगार्र, 6. मीर, 7. नरहेल, 8. गेदुर, 9. सन्न।

टप्पिना अरेत् :–

तड़क = तड़ाकिंग।

डोडर्री = मर्रा ता बूका, डोडोर्र।

गूडा = पिट्टेना गूडा।

गोक जबान :–

गुरूजी कक्षाते पीला नुंग रण्ड बाटंग तूसव अवेन टोडते इहे पूचे मास वेहला इनीर। सबो पीला नुंग मोका हेवीर। पीलन्ना वेहले ता पर्रेक गुरूजी आपुन गला पीलनुंग पूचेमाइर। इदम लेहका गला जबानिंग आय पर्रतंग।

1. आयला पर्रतंग–

1. हट्टोंग केंजतेक बाता नप्पा आयता ?
2. हट्टोंग बग्गा–बग्गा डह पुन्हयतंग ?
3. हट्टोंग बदम पंडयतोर ?
4. हट्टोंग बग्गडह कर्रिय्यतोर ?

2. इव टप्पिनुंग कोटट्–

1. गुंड्डे आकीनुंग बाता संग कटर कीले आता ?
2. कूर्रू तुन बाता संग लेहका वेहले आता ?
3. कंडेल तुन बाता संग कटर कीले आता ?
4. मीरिंग बोन किलहयतंग?

3. इव हट्टोनंग अरेत् वेहट् –

1. बाहिर पड़ेका, लोप्पा हव।
2. अडीय पूजा, पोर्रो बाजा।
3. पोर्रो गूडा, अडिऽय मेस्क्।
4. पोर्रो काल, अडिऽय तल्ला।

4. आदोह हट्टोनुंग निहाट –

1. पोर्रो गूडा अडिऽय..................... ।
2. वर्रोड़ पेकाल...................किलह्यतोर।
3. उचुहना टीराना........................मिटास।
4. ....पूजा पोर्रो बाजा।

5. गोंडी वड़क्ना टप्पिनुंग हिन्दी ते कोट्स कर्रियट –

उचुहना, किलहयतोर, अडिऽय, पांडर्री, पड़ेका।

6. जोड़िंग पंडाट–

1. अडिय पूजा	=	लोप्पा हव।
2. बाहिर पड़ेका	=	अडिऽय तल्ला।
3. पोर्रो साता	=	पोर्रो बाजा।
4. पोर्रो काल	=	अडिऽय मुद्यल।

7. अडिऽय हुचुक कत्तंग हीलेंग आतंग अवेह्नह टप्पिंग पंडट –

तड़क, पीटो, काल, पूजा, गूडा।

8. गोंडी ते कोटलेनुंग हिन्दी ते समजे माम्ट –

1. राजन बोर किल्हयतोर।
2. साता अडिय बोर मंतोर।
3. पोर्रो काल अडिय तल्ला कीस बद्द पिट्टे मंता।

9. गोक बरस्हना–

1. हट्टोंग पड़कट अन कक्षाते केंजहट।
2. पीटोंग पड़्क्स कक्षाते वेहट।
3. आपुना गोक ते इंदमनंगे पाटंग, पीटोंग अन हट्टोंग रोचेह कींम्ट।

SA37IX

पाठ 22

क्या तुम मेरी अम्मा हो?

क्या तुरंत पैदा हुआ बच्चा अपनी माँ को पहचान सकता है? नहीं। फिर वह अपनी खोई माँ को कैसे ढूँढ़ेगा। इस पाठ में मुर्गी के एक चूजे ने घूम–फिरकर अपनी माँ को ढूँढ़ ही लिया। कैसे? आओ, कहानी पढ़कर जानें।

एक बार एक चूज़ा जब अंडे से निकला तो उसकी माँ वहाँ पर नहीं थी। उसे अपनी माँ कहीं दिखाई नहीं पड़ी। चूज़ा उठकर अपनी माँ को ढूँढ़ने चला। पहले–पहल तो उसके कदम लड़खड़ा रहे थे, पर धीरे–धीरे सँभल गए।

कुछ दूर जाकर चूज़े को एक कुत्ता मिला। कुत्ते को देखकर चूज़े ने कहा, ''क्या तुम मेरी अम्मा हो?'' कुत्ते ने कहा, ''नहीं, मेरे तो चार पैर हैं। तुम्हारी अम्मा के तो सिर्फ दो पैर हैं।''

चूज़ा आगे बढ़ा। एक मोड़ पर जाकर उसे एक लड़का मिला। चूज़े ने कहा, ''तुम्हारे तो दो ही पैर हैं। ज़रूर तुम ही मेरी अम्मा हो।'' लड़के ने कहा, ''नहीं नहीं, मेरे तो पंख ही नहीं हैं। तुम्हारी अम्मा के तो दो पंख हैं।''

चूज़ा आगे बढ़ा। एक पेड़ के पास उसे एक काला कबूतर मिला। चूज़े ने कहा, ''आहा, तुम्हारे तो दो पैर और दो पंख हैं। ज़रूर तुम ही मेरी अम्मा हो।'' पर काले कबूतर ने कहा, ''मेरी चोंच तो स्लेटी रंग की है। तुम्हारी माँ की तो पीली, भूरी चोंच है।''

चूज़ा आगे बढ़ा। बेर की एक झाड़ी के पास उसे एक मैना मिली। चूज़े ने कहा, ''तुम ही हो मेरी अम्मा। तुम्हारी पीली भूरी चोंच है, दो पंख हैं, दो पैर हैं। ज़रूर तुम ही हो मेरी अम्मा।'' पर मैना ने

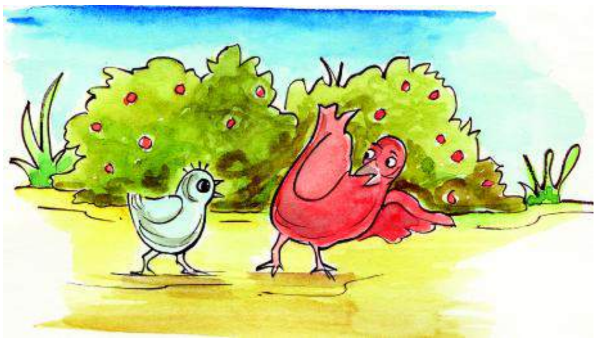

कहा, ''नहीं–नहीं, मैं तो मैना हूँ। तुम्हारी अम्मा मुझसे काफी बड़ी है।''

चूज़ा फिर से आगे बढ़ा। पानी के एक डबरे में उसे दिखी एक बत्तख। चूज़ा बहुत खुश हुआ। चिल्लाया, ''मिल गई। तुम ही हो मेरी अम्मा। तुम मैना से बड़ी हो; तुम्हारी पीली भूरी चोंच है, दो पंख हैं, दो पैर हैं।'' पर बत्तख ने कहा, ''क्वैक–क्वैक, नहीं–नहीं, मैं तो बत्तख हूँ। मैं बोलती हूँ क्वैक–क्वैक और तुम्हारी माँ तो कौं–कौं–कौं बोलती है।''

बेचारा चूज़ा बहुत निराश हुआ। उसकी आँखों से आँसू निकलने लगे। तभी आवाज़ सुनाई दी–कौं–कौं–कौं।

चूजे ने देखा कि जो कौं–कौं–कौं की आवाज़ निकाल रही थी, वह मैना से बड़ी थी, उसकी पीली भूरी चोंच थी, दो पंख थे, दो पैर थे।

वह दौड़ा–दौड़ा उसके पास गया और बोला, ''तुम्हीं मेरी अम्मा हो ना?''

मुर्गी ने उसे अपने पंखों में समेटते हुए कहा, ''हाँ, मैं ही तुम्हारी अम्मा हूँ।''

शब्दार्थ

चूजा	–	मुर्गी का बच्चा
निराश	–	आशा छोड़ देना
डबरा	–	छोटा गड्ढा

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. चूज़ा अंडे से निकलकर किसे ढूँढ़ने निकला ?

प्र.2. चूजे को क्रम से रास्ते में कौन–कौन मिले ?

प्र.3. कहानी में बत्तख और मैना में क्या समानताएँ बताई गई हैं ?

प्र.4. कहानी में बत्तख और मुर्गी में क्या अंतर बताया गया है ?

प्र.5. अगर चूजा सारस के पास जाता तो सारस उससे क्या कहता ?

प्र.6. चूजा अंडे से निकलता है। पता करो कि और कौन–कौन–से जीव, चूजे की तरह अंडे से निकलते हैं और कौन–से जीव माँ के पेट से बच्चे के रूप में पैदा होते हैं ?

अंडे से निकलने वाले जीव	माँ के पेट से पैदा होने वाले जीव

प्र.7. इस कहानी में कौन–कौन–से जीवों के नाम आए हैं? उनके बारे में तालिका में पूछी गई जानकारी भरो।

क्र.	जीव का नाम	कितने पैर	रंग	पंख	कैसी आवाज़	क्या खाता/खाती है?

प्र.8. प्रश्न और उत्तर पढ़कर लिखो । किसने, किससे कहा ?

प्रश्न – ''क्या तुम मेरी अम्मा हो ?''

उत्तर – ''नहीं–नहीं, मेरे तो पंख ही नहीं हैं ?''

प्रश्न – ''जरूर तुम ही हो मेरी अम्मा।''

उत्तर – ''मैं बोलती हूँ क्वैक–क्वैक और तुम्हारी माँ तो कौं–कौं बोलती है।''

प्र.9 इस पाठ में स्लेटी, पीली, भूरी रंगों के नाम आए हैं। अपनी पसंद की चीजों क नाम लिखकर उसके रंगों का नाम भी लिखो।

प्र.10 सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाओ –

1. इसके पंख होते हैं –

अ. मेंढक ब. कबूतर
स. गिलहरी

2. मुर्गी के बच्चे को कहते हैं –

अ. मेमना ब. चूजा

स. बछड़ा

3. "निराश" का अर्थ है –

अ. बहुत खुश होना   ब. आशावान होना

स. आशा छोड़ देना

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. शब्दों के इन जोड़ों में से जो सही हों, उनको लिखो।

क– मा / माँ   ख– कुत्ता / कुता
ग– मेना / मैना   घ– पंख / पँख
ङ– आँसू / आंसू   च– चुहा / चूहा
छ– खुश / खूश   ज– निराश / निरास

प्र.2. निम्नलिखित जीव–जंतुओं की बोली की आवाज लिखो।

जैसेः–बिल्ली   म्याऊँ–म्याऊँ

कुत्ता ....
मुर्गा ....
बत्तख ....
मधुमक्खी ....
मेंढक ....
कौआ ....
चिड़िया ....

प्र.3. गलत शब्दों को सुधारकर नीचे लिखे वाक्य फिर से लिखो।

एक चूज़ा अपनी अंडा से निकली। उसका माँ उसे दिखाई नहीं दिया। वह उसे ढूँढ़ने निकली। पास ही एक पेड़ के नीचे बैठा उसकी अम्मा मिल गया। चूज़े के अम्मा ने उसे अपने पंख में समेट लिया।

प्र.4. इन शब्दों में से पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्द चुनकर लिखो।

लड़का, माँ, कुत्ता, मैना, कबूतर, बतख, चूजा, अंडा, बेचारा, चोंच, भूरी।

रचना

1. यहाँ छिपकली के बारे में कुछ बातें लिखी हैं। इनकी सहायता से एक अनुच्छेद लिखो।

पीले रंग की,   दीवार पर चलती, कड़ी पूँछ हिलाती,   कीड़े–मकोड़े खाती।

2. इस वर्ग पहेली में कुछ पक्षियों के नाम दिए गए हैं। उन्हें खोजो और लिखो

शु	ब	क	मो	र
तु	या	बू		आ
र		त	कौ	ब
मु	तो	र		त
र्ग	ता	मै	ना	ख

प्र.4 दिए गए शब्दों की सहायता से चार पंक्तियों की कविता पूरी करों।

नानी, कानी, मानी,

एक थी मैना, बड़ी सयानी

....

....

....

44R5HP

योग्यता विस्तार

- सोचो, यदि चूजे की जगह पर तुम होते तो अपनी माँ को कैसे खोजते ?

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को कहानी सुनाएँ।
- बच्चों से विभिन्न जीव–जंतुओं के नाम पूछें।
- चौपाए और दोपाए जीव–जंतुओं की अलग–अलग सूची बनवाएँ।
- मेला या भीड़–भाड़ में बच्चे कभी–कभी अपने माता–पिता से बिछुड़ जाते हैं। उस समय उन्हें किससे सहायता लेनी चाहिए, यह पूछें और समझाएँ।
- विभिन्न रंगों के संबंध में भी कक्षा में चर्चा करें और उदाहरण देकर रंगों को समझाएँ।

पाठ 23

कविता का कमाल

4CQHBU

कभी–कभी ऐसा संयोग बनता है कि जो काम हाथ में लिया, थोड़े–से प्रयत्न से पूरा हो जाता है। इस पाठ की कहानी एक ऐसे लड़के की कहानी है जो निठल्ला था और माँ पर बोझ बनकर रहता था। माँ ने उसे धन कमाकर लाने के लिए घर से बाहर कर दिया था। लड़के ने अपनी थोड़ी सूझ–बूझ से काम लिया, जिसके फलस्वरूप उसे अपार धन–सम्पत्ति मिल गई। कैसे ? यह कहानी में पढ़ें।

बहुत पुरानी बात है। मदन नाम का एक लड़का अपनी माँ के साथ गाँव में रहता था। उसके पिता जी नहीं थे। माँ–बेटा बहुत गरीब थे। उनके पास कमाई का कोई साधन नहीं था। फिर भी मदन दिनभर खेल–कूद में ही समय बिता देता था।

परेशान होकर एक दिन उसकी माँ ने कहा, –'' अब मैं तुझे बिठाकर नहीं खिला सकती। जा, कुछ पैसे कमाकर ला।''

मदन घर से निकल पड़ा। वह गहरी सोच में डूबा था कि कैसे पैसे कमाए? अचानक उसे ढिंढोरा पीटने की आवाज़ सुनाई दी।

''सुनो, सुनो, सुनो! राजदरबार में कवि–सम्मेलन हो रहा है। सबसे अच्छी कविता सुनानेवाले को सौ अशर्फियाँ इनाम में मिलेंगी।'' मदन चौकन्ना हो गया। 'सौ अशर्फियाँ, यह तो बना–बनाया मौका था। वह सीधे राजमहल की ओर चल पड़ा। चलते–चलते वह सोच रहा था कि उसने कभी कविता तो रची न थी। क्या सुनाएगा वहाँ पहुँचकर? उसने सोचा कि रास्ते में कुछ–न–कुछ सूझ ही जाएगा। थोड़ी दूर पहुँचा तो एक कुत्ता दिखाई दिया। कुत्ता पंजों से जमीन खोदने में लगा था। मदन ने अपनी कविता की एक पंक्ति सोच ली।

''खुदुर–खुदुर का खोदत है?'' यह पंक्ति उसे इतनी पसंद आई कि उसे दोहराते हुए वह एक तालाब के पास पहुँचा। वहाँ एक भैंस पानी पी रही थी।

मदन बोल पड़ा, ''सुरुर–सुरुर का पीबत है?'' मुस्कुराते हुए वह आगे बढ़ा। इतने में उसे पेड़ की एक डाल पर चिड़िया बैठी दिखाई पड़ी। पत्तियों के बीच से वह सिर निकालकर इधर–उधर झाँक रही थी। उसे देखते ही मदन के मुँह से निकल पड़ा, ''ताक–झाँक का खोजत है?'' तीनों पंक्तियों को रटते हुए वह चलता गया। रटते–रटते उसे अपने आप एक और पंक्ति सूझ गई– ''हम जानत हैं, का ढूँढ़त है!''

अब तो सचमुच उसके मन में लड्डू फूटने लगे। कितने आराम से वह कविता रचता चला जा रहा था। तभी 'सर्र' की आवाज सुनाई पड़ी। मदन ने चौंककर देखा कि एक साँप रेंगता जा रहा था। उसने आगे की पंक्तियाँ भी तैयार कर लीं, ''सरक, सरक कहँ भागत है? जानत हो, हम देखत हैं? हमसे ना बच सकत है!'' अब केवल एक पंक्ति बाकी रह गई थी। पर मदन निश्‍चित था कि वह पंक्ति भी चलते–चलते सूझ जाएगी।

राजधानी पहुँचा तो राजमहल का रास्ता ढूँढ़ने की समस्या खड़ी हुई। पास में खड़े एक आदमी से मदन ने पूछा, ''भैया, आपको राजमहल का रास्ता मालूम है?''

''क्यों नहीं'', उस आदमी ने उत्तर दिया। ''मुझे नहीं तो और किसे मालूम होगा?''

मदन ने सोचा कि अवश्य यह राजमहल का ही कोई कर्मचारी होगा। उसने पूछा, ''आप कौन हैं, साहब?''

उत्तर मिला, ''धन्नू शाह।''

मदन के दिमाग में एकाएक बिजली कौंधी। 'धन्नू शाह, भाई धन्नू शाह!' क्या बढ़िया शब्द थे। उसने इन्हीं शब्दों से अपनी कविता की अंतिम पंक्ति बना डाली।

वह खुशी–खुशी राजमहल पहुँचा। अंदर घुसने से पहले उसने अपनी कविता फिर दोहराई–

खुदुर–खुदुर का खोदत है?
सुरुर–सुरुर का पीबत है?
ताक–झाँक का खोजत है?
हम जानत हैं, का ढूँढ़त है!
सरक–सरक कहँ भागत है?
जानत हो, हम देखत हैं?
हमसे ना बच सकत है!
धन्नू शाह, भाई धन्नू शाह!

राजमहल में कवि–सम्मेलन शुरू हो चुका था। एक–एक करके कवि अपनी कविता सुना रहे थे।

बारी आने पर मदन ने भी अपनी कविता सुनाई। सुननेवाले एक–दूसरे का मुँह ताकने लगे। क्या अर्थ था इस विचित्र कविता का? पर किसी ने भी यह नहीं दिखाया कि उसे कविता समझ में नहीं आई थी। राजा के सामने वे मूर्ख नहीं दिखना चाहते थे।

उस रात राजा साहब की भी नींद गायब हो गई। मदन की कविता उनको सता रही थी। छज्जे पर खड़े होकर वे कविता दोहराने लगे। सोचा कि शायद इसी तरह इस पहेली को बूझ पाए। संयोग से उसी समय कुछ चोर राजा के खजाने में सेंध लगा रहे थे। उनमें से एक चोर वही धन्नू शाह था, जिसने आज दिन में मदन को राजमहल का रास्ता बताया था।

ऊँची आवाज़ में राजा साहब बोलते जा रहे थे, ''खुदुर–खुदुर का खोदत है?''

चोरों ने सुना तो वे चौंककर रुक गए। क्या किसी ने देख लिया था उन्हें ? डर के मारे चोरों का गला सूखने लगा। अपने साथ जमीन को मुलायम करने के लिए वे पानी लाए थे। धन्नू शाह ने उठकर एक–आध घूँट निगला।

तभी राजा साहब बोले, ''सुरुर–सुरुर का पीबत है?''

चोरों को काटो तो खून नहीं। सहमकर इधर–उधर झाँकने लगे कि कोई पकड़ने तो नहीं आ रहा है?

राजा ने फिर कहा, ''ताक–झाँक का खोजत है? हम जानत हैं, का ढूँढ़त है।''

यह सुनकर चोरों ने सोचा कि किसी तरह जान बचाकर भागा जाए। वे दबे पाँव बाहर सरकने लगे। पर राजा की फिर आवाज़ आई, ''सरक–सरक कहँ भागत है? जानत हो, हम देखत हैं? हमसे ना बच सकत है! धन्नू शाह, भाई धन्नू शाह!''

धन्नू शाह की तो साँस वहीं रुक गई। उसने सोचा, 'अब कोई चारा नहीं। बस, राजा साहब से दया की भीख माँग सकता हूँ।' दौड़कर उसने राजा साहब के पैर पकड़ लिए और विनती करने लगा, ''क्षमा कर दीजिए महाराज! अब मैं भूलकर भी ऐसा काम नहीं करूँगा। वैसे हमने कुछ लिया ही नहीं। आपका खजाना सही–सलामत है।''

राजा साहब हक्के–बक्के रह गए। उन्होंने तुरंत सिपाहियों को बुलाकर छानबीन करवाई तो पता चला कि उनका खजाना लुटते–लुटते बचा था।

मदन को बुलवाया गया। राजा ने शाबाशी देकर कहा, ''यह सब तुम्हारी कविता का कमाल है।'' मदन को सोने–चाँदी से मालामाल कर दिया गया। वह खुशी–खुशी अपने गाँव लौट आया। अब उसके पास अपने और अपनी माँ के खाने–पीने के लिए पर्याप्त धन था।

शब्दार्थ

अशर्फियाँ	–	सोने के सिक्के
समस्या	–	कठिन प्रश्न, उलझन
विचित्र	–	अनोखा, अद्भुत, निराला

निश्चिन्त	–	बिना चिंता के
मालामाल	–	धनवान
पर्याप्त	–	भरपूर

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. कुत्ते को जमीन खोदते देखकर मदन ने कविता की क्या पंक्ति सोची ?

प्र.2. 'ताक–झाँक का खोजत है ?' मदन ने यह किसके लिए कहा ?

प्र.3. धन्नू शाह कौन था ? उसने राजा से माफी क्यों माँगी ?

प्र.4. राजा ने मदन को इनाम क्यों दिया ?

प्र.5. किसने, क्यों कहा–

क्र.	कथन	किसने कहा?	क्यों कहा?
क	''अब मैं तुम्हे बिठाकर नहीं खिला सकती।''	माँ ने कहा	क्योंकि मदन कोई काम नहीं करता था और उसके पास आमदनी का साधन नहीं था।
ख	''मुझे नहीं तो किसको राजमहल का रास्ता मालूम होगा।''		
ग	''क्षमा कर दीजिए महाराज! अब मैं भूलकर भी ऐसा काम नहीं करूँगा।''		
घ	''यह सब तुम्हारी कविता का कमाल है।''		

प्र.6 प्रत्येक खंड से शब्द लेकर पूरे वाक्य बनाओ और लिखो।

मदन	अपनी	राजमहल	गया।
वह	को	स्वभाव का	सुनाई।
मदन ने	मस्त	कविता	पहुँचा।
मदन	खुशी–खुशी	बुलवाया	था।

प्र.7 सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाओ –

1. कविता लिखने वाले को कहते हैं –

अ. लेखक

ब. कवि

स. कहानीकार

2. "बाहर" का विलोम शब्द है –

अ. आगे

ब. पीछे

स. अंदर

3. "मुलायम" शब्द का अर्थ है –

अ. गरम

ब. नरम

स. कठोर

4. "मालामाल" का अर्थ है –

अ. माल लादना

ब. गरीब

स. धनवान

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. खाली स्थान में उचित मुहावरा भरो –

दबे पाँव भागना, मुँह ताकना, ताक–झाँक करना, जान बचाकर भागना

1. डेविड ने अपनी टीम की ओर से इतना अच्छा खेला कि विरोधी टीम के लोग . . . . रह गये।

2. बिल्ली को आता देखकर चूहा अपनी . . . . भागा।

3. परीक्षा में कई बच्चे . . . . करते हैं।

4. बिल्ली दूध पीकर . . . . गयी।

प्र.2. 'रटते–रटते उसे अपने आप एक और पंक्ति सूझ गई।' इस वाक्य में 'रटते–रटते' का प्रयोग हुआ है। इसी तरह निम्नलिखित का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

चलते–चलते, हँसते–हँसते, पढ़ते–पढ़ते, दौड़ते–दौड़ते।

प्र.3. क्या कहोगे ?

कविता लिखने वाला	कवि
पहरा देने वाला	. . . .
खेती करने वाला	. . . .
मरीजों की देखभाल करने वाला	. . . .
मरीजों की इलाज करने वाला	. . . .
कहानी लिखने वाला	. . . .

प्र.4. नीचे दिए गए संयुक्त अक्षरों से बने अधूरे शब्दों को पूरा लिखो।

—— ब्द, —— स्ता, ——त्ता, ——क्ति, ——ड्डू ——श्चित

रचना

'कटहल' शब्द में चार वर्ण हैं –

'क', 'ट', 'ह', 'ल'

इन चार वर्णों से जितने अधिक–से–अधिक शब्द बना सकते हो, बनाओ; जैसे 'कल'।

योग्यता–विस्तार

कक्षा में शब्द–रेल खेल का आयोजन करो। उदाहरण के लिए पहले बच्चे ने शब्द बोला साँप, दूसरा बच्चा 'प' से शब्द बोले, पतंग। तीसरा 'ग' से बोले 'गरम'। इसी तरह शब्द–रेल बनाओ। यह खेल श्यामपट पर शब्द लिखकर खेलो।

साँप	पतंग	गरम								

शिक्षण–संकेत
- बच्चों को समूह में बैठकर वाचन करने के लिए कहें।
- पढ़ने में हुईं त्रुटियों का संशोधन बच्चों से कराएँ।
- बच्चों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें।
- पाठ पढ़ते समय विराम चिह्नों (, ।, ? आदि) का विशेष ध्यान रखें।
- कविता की दो पंक्तियाँ देकर अन्य दो पंक्तियाँ बनवाएँ।

4CZSDH

4D9NF5

पाठ 24

बालसभा

विद्यालयों में पढ़ाई–लिखाई के साथ–साथ खेल–कूद, व्यायाम और बालसभा जैसे मनोरंजक कार्यक्रम भी आयोजित होते रहते हैं। बालसभा के द्वारा जहाँ बच्चों का मनोरंजन होता है, वहीं उन्हें अपनी कला और क्रियाकलापों को प्रकट करने का सुनहरा अवसर भी मिलता है। आमतौर पर बालसभा का आयोजन सप्ताह में एक बार शनिवार को किया जाता है। ऐसे ही एक आयोजन का वर्णन इस पाठ में पढ़ो।

आज शनिवार है। हमारे विद्यालय में शनिवार को खूब मज़ा आता है। इस दिन दोपहर की छुट्‌टी के बाद बालसभा होती है। बालसभा में बच्चे गीत, कहानियाँ, पहेलियाँ, चुटकुले, गप्प, पशु–पक्षियों की बोलियाँ सुनाते हैं। दो घंटे तक बालसभा में खूब हा–हा, ही–ही होती रहती है।

आज भी बच्चों में काफी उत्साह है। वे घर से ही सुनाने का मसाला तैयार करके आए हैं। कोई अपने साथी को वह चुटकुला सुना रहा है, जो वह बाल–सभा में सुनाएगा। कोई अपनी सहेली को गीत गुनगुनाकर सुना रही है। तभी घंटी बजी और सारे बच्चे अपनी–अपनी कक्षाओं से निकलकर हॉल में आ बैठे। थोड़ी देर में बड़ी बहिन जी आईं और उन्होंने उषा से कहा– ''उषा, जो बच्चे कार्यक्रम में भाग लेना चाहते हैं, उनके नाम लिख लो।''

अब तो उषा के पास बच्चों की भीड़ लग गई। उषा ने सबके नाम लिखे। नाम के आगे यह भी लिखा कि वे क्या सुनाएँगे या सुनाएँगी।

थोड़ी देर में बाल–सभा शुरू हुई। बड़ी बहिन जी तथा अन्य शिक्षकगण ऊपर मंच पर बैठे थे। उषा एक–एक बच्चे का नाम लेकर पुकार रही थी। उसने कहा – ''सबसे पहले रवि अपनी छोटी–सी कविता सुनाएगा''। रवि ने अपनी कविता सुनाई।

घंटा, बोला, चलो मदरसे

निकलो–निकलो–निकलो घर से

घंटा बोला, चलो मदरसे

जल्दी निकलो अपने घर से
कपड़े पहनो, बस्ता ले लो
जल्दी निकलो अपने घर से।
जो तुम देर करोगे भइया
तो फिर होगी धम्मक–धइया।

कविता सुनकर सबने तालियाँ बजाईं।

अब उषा ने संगीता को पहेलियाँ सुनाने के लिए बुलाया। संगीता ने तीन पहेलियाँ बूझीं। पहले उसने यह पहेली सुनाई–

'' प्रथम कटे तो करती तंग,
तरह–तरह के मेरे रंग।
तीन अक्षर का मेरा नाम
आसमान में लड़ती जंग।।''

रमेश ने ज़ोर से चिल्लाकर इसका उत्तर बताया, 'पतंग'।

संगीता ने कहा सही, फिर उसने दूसरी पहेली सुनाई–

मेरी नानी कोयला खाती
मैं खाती हूँ बिजली।
मम्मी मेरी डीज़ल पीती
यही कहानी पिछली।।

अब की बारी बच्चों से कोई जवाब नहीं आया।

संगीता ने इस पहेली का उत्तर बताया, ''रेल का इंजन।''

तीसरी पहेली थी–

गाना गाकर मारे तीर।

संगीता ने पहेली का उत्तर पूछा।

किसी ने कहा 'रेडियो', किसी ने कहा 'हवा'; अंत में सही उत्तर सोनाली ने दिया, 'मच्छर'। सभी ने तालियाँ बजाईं।

अब उषा ने मन्नू को चुटकुला सुनाने के लिए बुलाया।

मन्नू ने एक मज़ेदार चुटकुला सुनाया।

दीपू – पिता जी, आपने एक सप्ताह पहले जो गुलाब की कलम लगाई थी उसमें अभी तक जड़ें नहीं निकली हैं।

पिता जी – तुम्हें कैसे पता?

दीपू – क्योंकि मैं उसे रोज़ उखाड़कर देखता हूँ।

अब किशुन की बारी थी।

किशुन ने चुटकुला सुनाया– तीन गप्पी गप्प सुना रहे थे।

पहले ने कहा– ''मेरे दादा जी ने पानी में डुबकी लगाई तो पंद्रह मिनट के बाद ऊपर आए।''

दूसरे ने कहा– ''ये तो कुछ भी नहीं, मेरे दादा जी ने नदी के पानी में डुबकी लगाई तो एक घंटे के बाद ऊपर आए।''

तीसरे ने कहा– ''अरे, मेरे दादा जी ने पिछले बरस नदी में डुबकी लगाई तो आज तक ऊपर नहीं आए।''

चुटकुला सुनकर सभी बच्वें हो–हो कर हँस पड़े और उन्होंने तालियाँ बजाईं।

अब उषा ने शिवानी को गप्प पर आधारित समाचार सुनाने के लिए बुलाया।

शिवानी ने समाचार सुनाया–

''कल रात राजधानी में ओलों की जबर्दस्त बारिश हुई। सरकार ने सभी गंजों को घर में रहने की हिदायत दी।''

''सरगुजा क्षेत्र में हाथियों के बढ़ते आतंक को देखते हुए सरकार ने चार मच्छरों को वहाँ भेजा है। जैसे ही गड़बड़ी फैलानेवाले हाथी नज़र आएँगे, ये मच्छर उन्हें उठाकर मैत्रीबाग के चिड़ियाघर में ले आएँगे।''

''छत्तीसगढ़ में तीन ठग गिरफ्तार किए गए हैं। पता चला है कि इन ठगों ने किसी व्यक्ति को सस्ते दामों में आगरे का ताजमहल बेच दिया था।''

गप्प समाचार सुनकर सब बच्चे खिलखिलाकर हँस पड़े।

बालसभा का समय समाप्त हो गया था। बड़ी बहिन जी ने कहा,'' सब बच्चों ने अच्छे–अच्छे चुटकुले, पहेलियाँ, गप्प सुनाईं। सबको बहुत–बहुत बधाई। अगले शनिवार को फिर बालसभा होगी। बच्चे अच्छी तैयारी करके आएँ।

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को प्रेरित करें कि इसी तरह की पहेलियाँ एकत्रित करके कक्षा में आपस में एक–दूसरे से बूझें।
- अन्य चुटकुले सुनाएँ व बालकों से सुनें।
- छोटी–छोटी कविता का वाचन करें व बच्चों से भी सुनें।
- अधूरी कविता पूरी करवाएँ।

4DSFIF

पुनरावृत्ति

1. नीचे दी गई पंक्तियों को पढ़ों और सही जवाब पर गोला लगाओ –

2NLZE2

डॉक्टर शर्मा पार्क में बैंच पर बैठे हैं। उन्होंने रमा को रोते हुए देखा। उन्होंने पूछा, ''तुम क्यों रो रही हो?

रमा– अंकल जी, मेरे घुटने पर चोट लगी है। मैं खड़ी नहीं हो सकती।

डॉक्टर शर्मा – "मत रोओ। मैं तुम्हें अस्पताल ले जाऊँगा।"

अस्पताल में नर्स ने उसका जख्म साफ किया और दवाई लगा दी। वह रमा को देखकर मुस्कराई और पूछा, "क्या अब तुम्हें ठीक लग रहा है?"

रमा– "हाँ, मैं ठीक हूँ। धन्यवाद।"

डॉक्टर रमा को घर वापस ले जाता है।

1. रमा क्यों रो रही है?
   (क) वह अकेली है।
   (ख) वह डरी हुई है।
   (ग) उसे चोट लगी है।
2. डॉक्टर शर्मा ने क्या किया?
   (क) वह उसे पार्क में ले गया।
   (ख) वह उसे अस्पताल ले गया।
   (ग) उसने उसे दवाई दी।
3. रमा ने नर्स को धन्यवाद क्यों दिया?
   (क) उसने उसे ठीक कर दिया।
   (ख) वह उसे देखकर मुस्कराई।
   (ग) उसने उसे घर छोड़ा।
4. रमा को कहाँ दर्द था?
   (क) सिर में
   (ख) हाथ में
   (ग) पैर में
5. अंत में डॉक्टर रमा को ले जाता है।
   (क) घर में
   (ख) अस्पताल में
   (ग) पार्क में

2. यह रोहित के स्कूल की समय सारिणी (टाइम टेबिल) है। इसे देखकर निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर की क्रम संख्या पर गोला लगाओ –

घंटे / दिन	1	2	3	4	5	6	7
सोमवार	अंग्रेजी	हिन्दी	हिन्दी	विज्ञान	कला	गणित	कार्य अनुभव
मंगलवार	हिन्दी	अंग्रेजी	सामाजिक अध्ययन	कला	गणित	विज्ञान	शारीरिक शिक्षा
बुधवार	सामाजिक अध्ययन	अंग्रेजी	हिन्दी	शारीरिक शिक्षा	विज्ञान	गणित	पुस्तकालय
बृहस्पतिवार	विज्ञान	गणित	हिन्दी	कार्य अनुभव	अंग्रेजी	सामाजिक अध्ययन	शारीरिक शिक्षा
शुक्रवार	सामाजिक अध्ययन	गणित	विज्ञान	अंग्रेजी	कला	हिन्दी	शारीरिक शिक्षा

1. बुधवार को छठे घंटे में राहित क्या पढ़ता है?
   (क) गणित
   (ख) विज्ञान
   (ग) सामाजिक अध्ययन
   (घ) हिन्दी

2. रोहित पुस्तकालय किस दिन जाता है?
   (क) सोमवार
   (ख) मंगलवार
   (ग) बुधवार
   (घ) ब   हस्पतिवार

3. रोहित कौन–सा विषय दो घंटे लगातार पढ़ता है?
   (क) अंग्रेजी
   (ख) विज्ञान
   (ग) गणित
   (घ) हिन्दी

4. पूरे सप्ताह में रोहित कौन–सा विषय ज्यादा पढ़ता है?

(क) हिन्दी

(ख) अंग्रेजी

(ग) गणित

(घ) सामाजिक अध्ययन

5. पूरे सप्ताह में रोहित की कक्षा के लिए कला के कितने घंटे होते है?

(क) दो

(ख) तीन

(ग) चार

(घ) पाँच

3. नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखो, उसके बाद खाली स्थानों को उचित शब्दों से भरो–

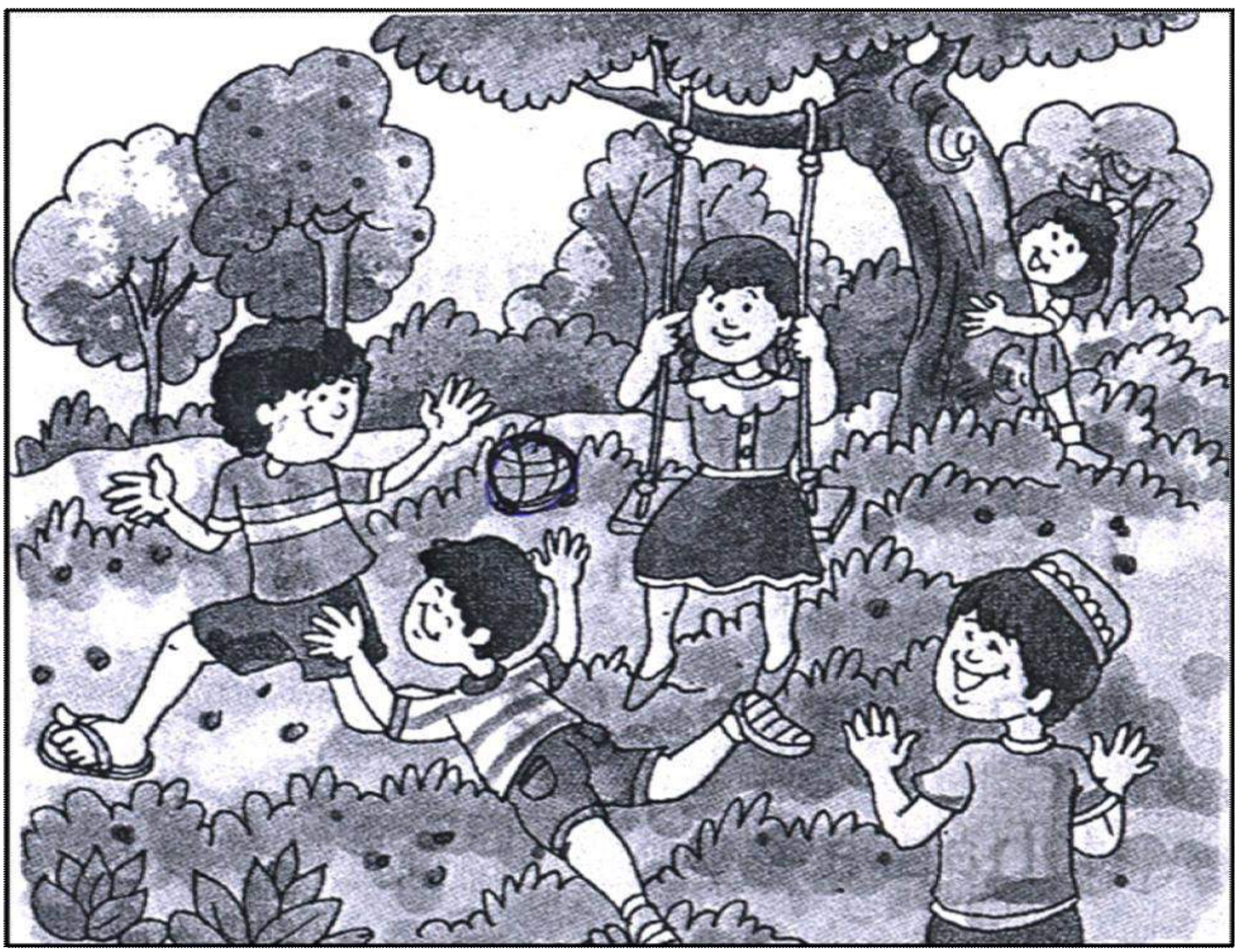

1. चित्र में पाँच .... हैं।
2. वे .... में खेल रहे हैं।
3. एक लड़की ....के पीछे छुप रही है।
4. दो लड़के बॉल के साथ ....रहे हैं।
5. बच्चे .... महसूस कर रहे हैं।

4. पढ़ो और दिए हुए प्रश्नों के सही उत्तर पर गोला लगाओ –

1. सबसे सस्ता फल कौन–सा है?
   (क) सेब
   (ख) संतरा
   (ग) केला

2. सबसे महँगी सब्जी कौन–सी है?
   (क) गोभी
   (ख) मूली
   (ग) आलू

3. किस फल की कीमत सेब से अधिक है?
   (क) केला
   (ख) अंगूर
   (ग) संतरा

4. कौन–सी दो चीजों की कीमत एक–सी है?
   (क) संतरा और केला
   (ख) गोभी और संतरा
   (ग) मूली और आलू

5. सुपर बाजार सप्ताह में कितने दिन खुला है?
   (क) पाँच दिन
   (ख) छः दिन
   (ग) सात दिन

क्रीडानां नामानि

संस्कृत		हिन्दी	चित्र
1) क्षेपकन्दुकः	–	व्हालीवॉल	
2) पादकन्दुकः	–	फुटबॉल	
3) यष्टिकंदुकः	–	हाकी	
4) शिक्यकन्दुकः	–	बॉस्केटबॉल	
5) पतंगः	–	पतंग	

संस्कृत		हिन्दी	चित्र
6) वल्लकन्दुकः (बीटा)	–	क्रिकेट	
7) कबड्डी	–	कबड्डी	
8) फुगडी (स्फूर्तिकरी)	–	फुगड़ी	
9) तरणम्	–	तैराकी	
10) लम्बकूर्दनम्	–	लम्बीकूद	
11) उच्चकूर्दनम्	–	उँचीकूद	

पक्षिणां नामानि

31A4W9

संस्कृत		हिंदी	चित्र
1) चटकः	–	गौरैया	
2) कपोतः	–	कबूतर	
3) उलूकः	–	उल्लू	
4) गृध्रः	–	गिद्ध	
5) श्येनः	–	बाज	
6) बकः	–	बगुला	
7) हंसः	–	हंस	
8) मयूरः	–	मोर	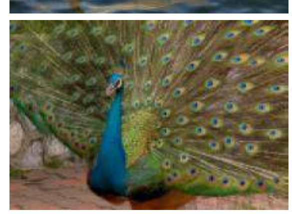

	संस्कृत		हिंदी	चित्र
9)	चातकः	–	चातक	
10)	कुक्कुटः	–	मुर्गा	
11)	कोकिलः / कोकिला	–	कोयल	
12)	शुकः	–	तोता	
13)	काकः	–	कौआ	
14)	दार्वाघाटः	–	कठफोड़वा	
15)	कादम्बः (बर्तकः)	–	बतख	

फलानां शाकानां च नामानि

संस्कृत		हिंदी	चित्र
1) कदलीफलम्	–	केला	
2) सेवम्	–	सेव	
3) दाडिमम्	–	अनार	
4) नारङ्गम्	–	नारंगी (संतरा)	
5) पिपीतकम् (मधुकर्कटी)	–	पपीता	
6) अनानसम्	–	अनानास	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
7) द्राक्षा	–	अंगूर	
8) आम्रम्	–	आम	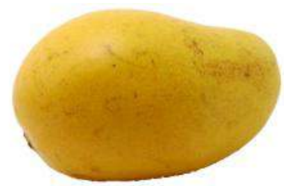
9) जम्बू (जम्बूफलम्)	–	जामुन	
10) बीजपूरम् (अमरूदः)	–	बिही, अमरूद	
11) इक्षुः	–	गन्ना	
12) चिञ्चा	–	इमली	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
13) आमलकम्	–	आँवला	
14) नारिकेलम्	–	नारियल	
15) निम्बुकम्	–	नीबू	
16) तोयफलम् (खर्बजम्)	–	खरबूज	
17) कालिन्दम्	–	कलिंदर	

शाकानि

31SVZJ

संस्कृत		हिंदी	चित्र
1) अलाबुः	–	लौकी	
2) पत्रगोभी (हरितम्)	–	पत्तागोभी	
3) फुल्लगोभी (गोजिव्हा)	–	फूलगोभी	
4) मूलकः	–	मूली	
5) आलुः (आलुकम्)	–	आलू	
6) वृन्ताकम् (भण्टाकी)	–	भटा (बैगन)	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
7) शक्रकन्दः	–	शकरकंद	
8) कारवेल्लम्	–	करेला	
9) कुष्माण्डः	–	कुम्हड़ा	
10) कर्कटिका	–	ककड़ी	
11) शकलादः (शदः)	–	सलाद	
12) पणसम्	–	कटहल	
13) कोषातकी	–	तरोई	
14) पलाण्डुः	–	प्याज	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
15) लशुनम्	–	लहसुन	
16) मरीचम्	–	मिर्च	
17) गृञ्जनकम	–	गाजर	
18) आर्द्रकम्	–	अदरक	
19) हरिद्रा	–	हल्दी	
20) भिण्डकः	–	भिण्डी	
21 त्रापुसम् (चर्भटिः)	–	खीरा	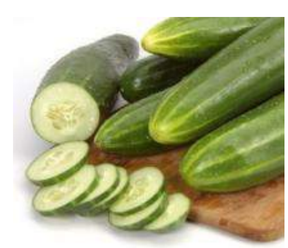

कीटानां नामानि

संस्कृत		हिंदी	चित्र
1) तैलपः 322S27	–	तिलचट्टा (कॉकरोच)	
2) मधुमक्षिका	–	मधुमक्खी	
3) मक्षिका	–	मक्खी	
4) मशकः	–	मच्छर	
5) पिपीलिका	–	चींटी	
6) लूतः	–	मकड़ी	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
7) वृश्चिकः	–	बिच्छू	
8) मकरः	–	मगर	
9) मीनः (मत्स्यः)	–	मछली	
10) गृहगोधिका	–	छिपकली	
11) कुलीरः	–	केकड़ा	
12) शतपदी (कर्णजलौका)	–	कनखजूर	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
13) तित्तिलिका	–	तितली	
14) मत्कुणः	–	खटमल	
15) भ्रमरः	–	भौंरा	
16) यूकः	–	जूँ	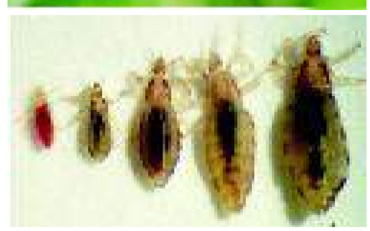
17) वरटा	–	ततैया (दतैया)	
18) सरटः (गिरगिटः)	–	गिरगिट	

jkt dh dgkuh

32BN3U

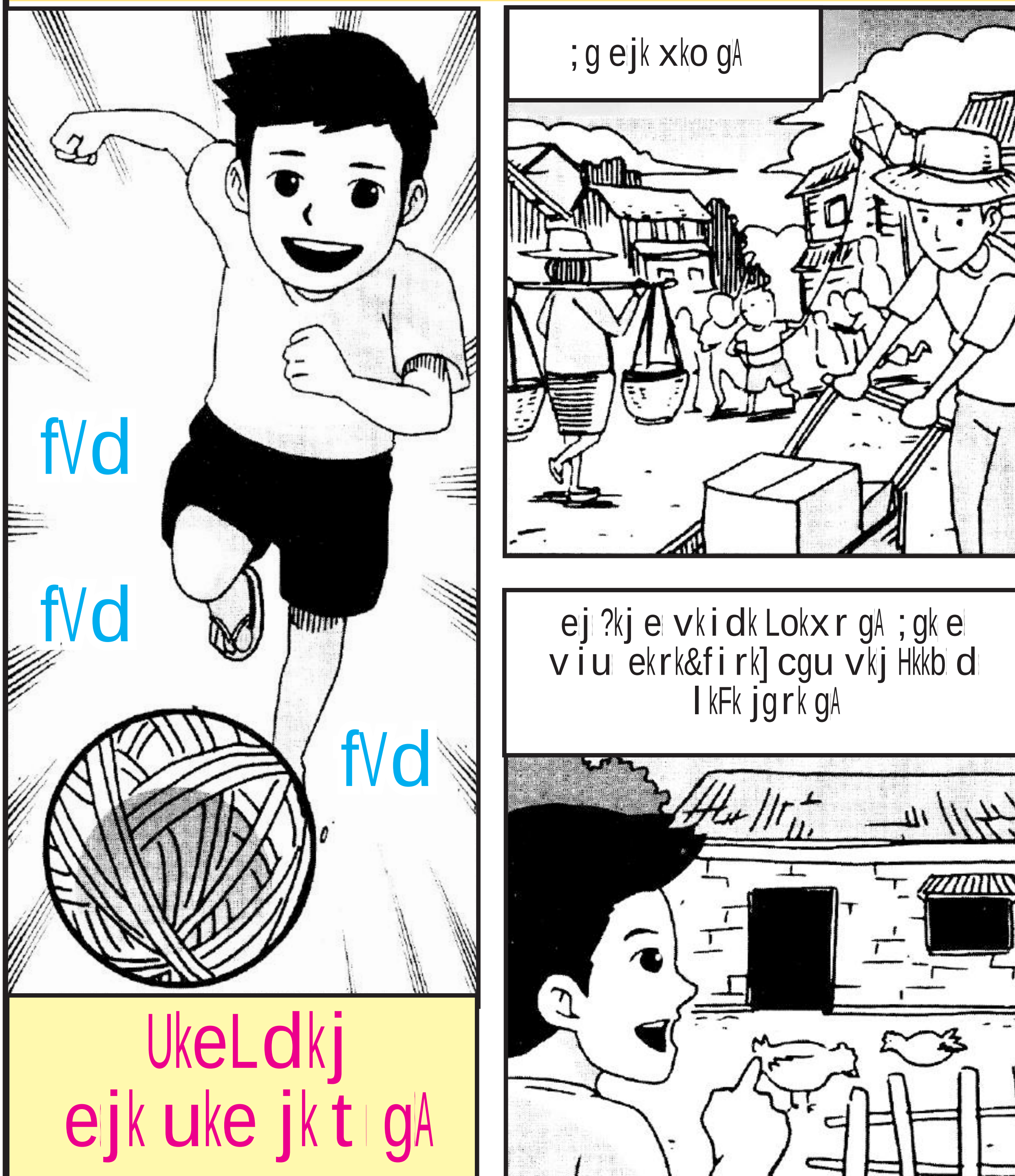

CEOP, BCCT, BRITISH COUNCIL द्वारा प्रकाशित कार्टून पुस्तिका Tam's tales का हिंदी रूपान्तरण.

Ekk] e>: ;gk jguk vPNk yxrk gA gekjk ;g NkVk lk ?kj g yfdu ge lHkh cgr [k'k gA

e>e jx Hkjk

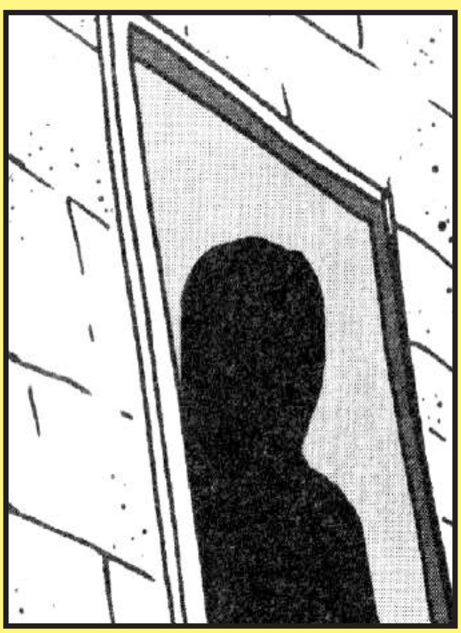

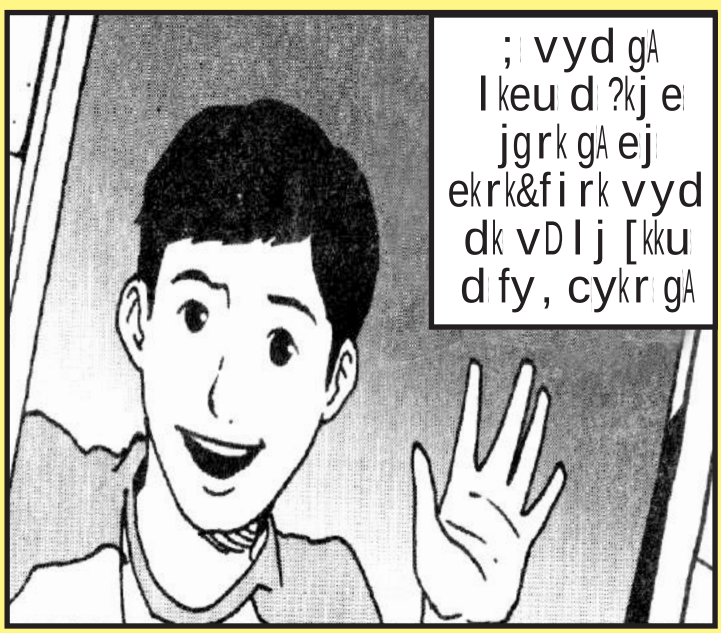
;: vyd gA lkeu d: ?kj e: jgrk gA ej: ekrk&firk vyd dk vDlj [kku d fy, cykr: gA

vyd cgr feyu lkj g yfdu dHkh&dHkh e> cgr 'ke vkrh g D;kfd og n lj k dh ryuk e e> i j T;knk / ;ku nrk gA
vyd ej lkFk vdy jguk i ln djrk gA yfdu e> m ld lkFk vdy jguk i ln ughA e viu ifjokj d lkFk jguk pkgrk gA

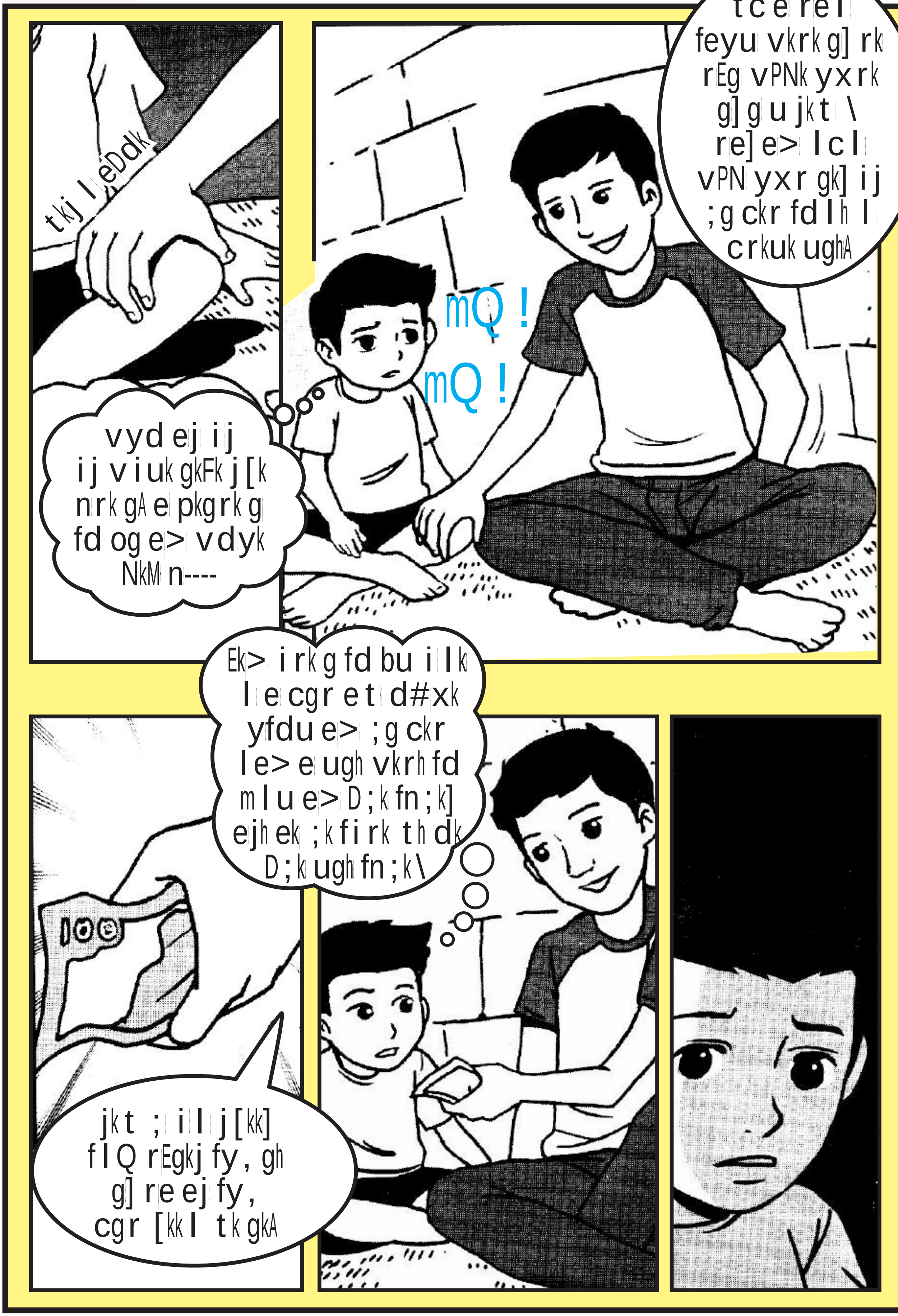
tkj lseDdk
vydej ij ij viuk gkFk j[k nrk gA e pkgrk g fd og e> vdyk NkM n----
mQ !
mQ !
tc e re l feyu vkrk g] rk rEg vPNk yxrk g] g u jkt \ re] e> lc l vPN yxr gk] ij ;g ckr fd lh l crkuk ughA
Ek> irk g fd bu i l k l e cgr e t d#xk yfdu e> ;g ckr l e> e ugh vkrh fd mlu e> D;k fn;k] ejh ek ;k firk th dk D;k ugh fn;k\
jkt ; i l j[kk] fl Q rEgkj fy, gh g] re ej fy, cgr [kk l tk gkA

jkt D;k rqe bl dgkuh d
bu 'kCnk dk 'kCndk'k e <<u e
enn dj ldr gk \

d	[k	Xk	?k	M	Pk	g
V	B	<	.k	Rk	N	{k
Lk	"k	'k	Ok	Fk	Tk	Ik
Ek	;	j	Yk	n	>	K
Ck	Q	Ek	Uk	?k	Tk	k
f		h				

D;k rqe 'kCn l ey
[kkrk pgjk cuk ldr gk \

fpfr r

i l Uu

n[kh

Hk;Hkhr

el vius ekrk&firk dk crkuk pkgrk g Ykfdu e> cgr Mj yx jgk g D;kfd mlu fdlh dk crkus l euk fd;k gA og dgrk g fd ;g ily fIQ ej fy, gA tc vyd ej ikl gkrk g rk e cMk vthc egl l djrk gA
jkr d [kku ij cyku d fy, /kU;okn! lpep cgr vPNk yxkA
re dHkh Hkh vk ldr gk vyd] re ej ifjokj dk cgr vPNk yxr gkA
xn b/kj Qdk!
[kyu e cgr etk vkrk gA

e>el jx Hkjk

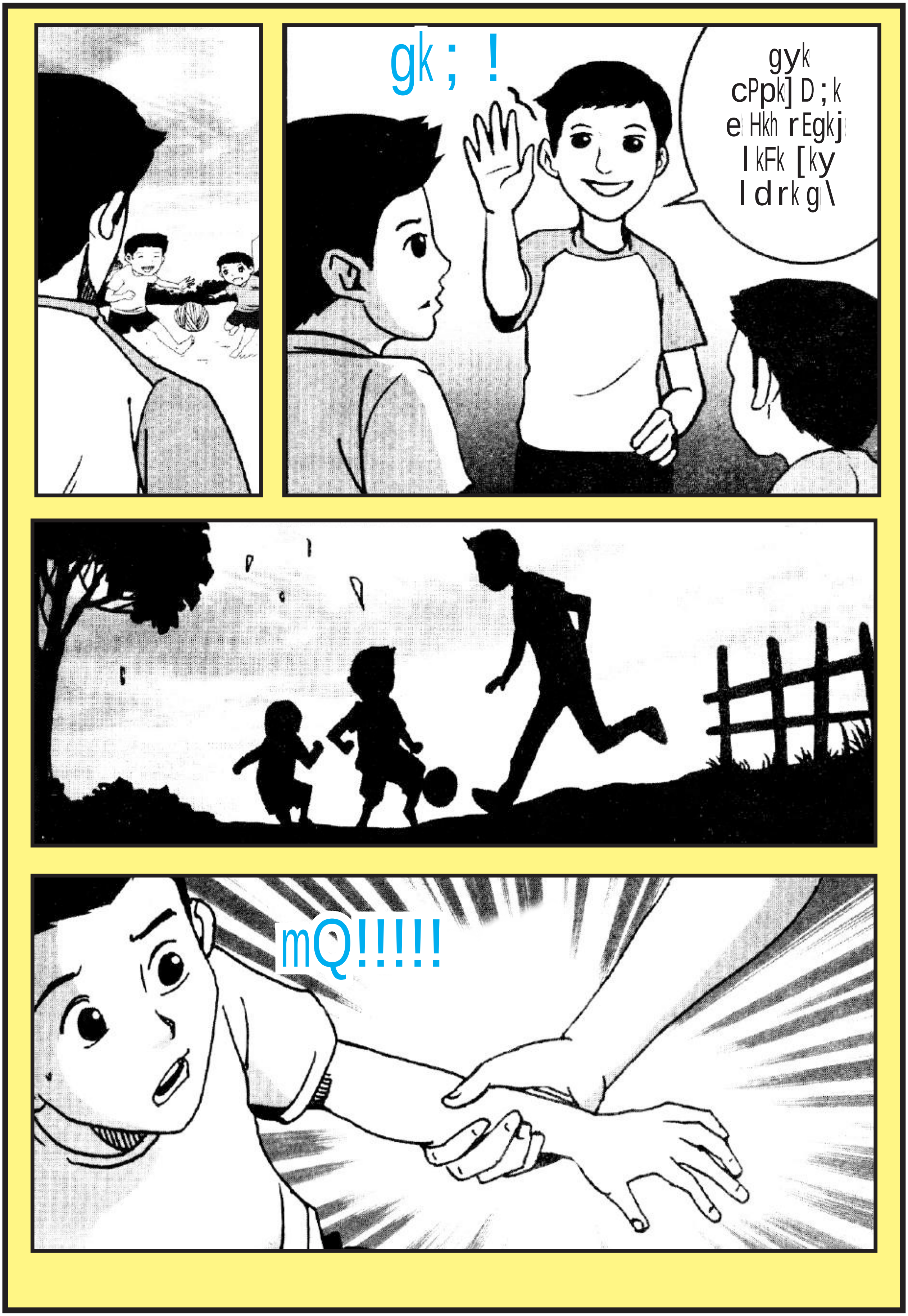
gk; !
gyk cPpk] D;k eHkh rEgkj lkFk [ky ldrk g\
mQ!!!!!

Tkc Hkh e vdyk gkrk g rk vyd vDl j e> Nrk g] tl fd vkt m lu ej gkFk dk l gyk;k tcfd bl dh dkb t :jr ugh FkhA
og ej furEc dk Hkh Nrk g vkj dkQh nj rd viu gkFk ogh j[k jgrk gA ;g cjk yxrk gA
mQ !!

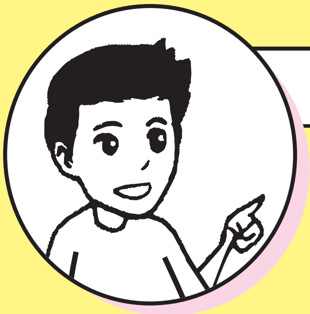

i'uk dk i<dj lgh mRrj nk&

1 vyd d lkFk jkt d lk eglql djrk g \

अ. खुश। ब. अजीब।

2 Okg viu ekrk&firk dk bl ckj e D;k ugh crkrk g \

अ. उसे यह अच्छा लगता है। ब. वह बहुत डरा हुआ है।

3 jkt dc [k'k gkrk g \

अ. जब वह अपने परिवार के साथ होता है।
ब. जब अलक उसे छूता है।

4 vki d fopkj l vyd d Nu ij jkt dk D;k djuk pkfg, Fkk \

अ. अपने किसी भरोसेमंद को यह सब बताना था।
ब. यह सब बंद होने की उम्मीद करता।

vyd d lkFk e v lgt vkj v thc& lk eglql djrk gA igy e> ;g lc le> ugh vk;k yfdu e> ge'kk fl [kk;k x;k gA

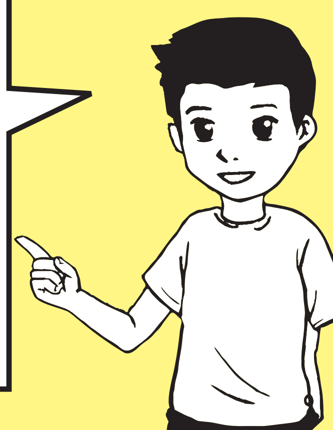

fd lh Hkh cM } kjk rEgkj 'kjhj d ikboV vxk ;k fd lh vkj txg dk Nuk Bhd ugh g ft l re cjk ;k v thc eg l l djr gkA

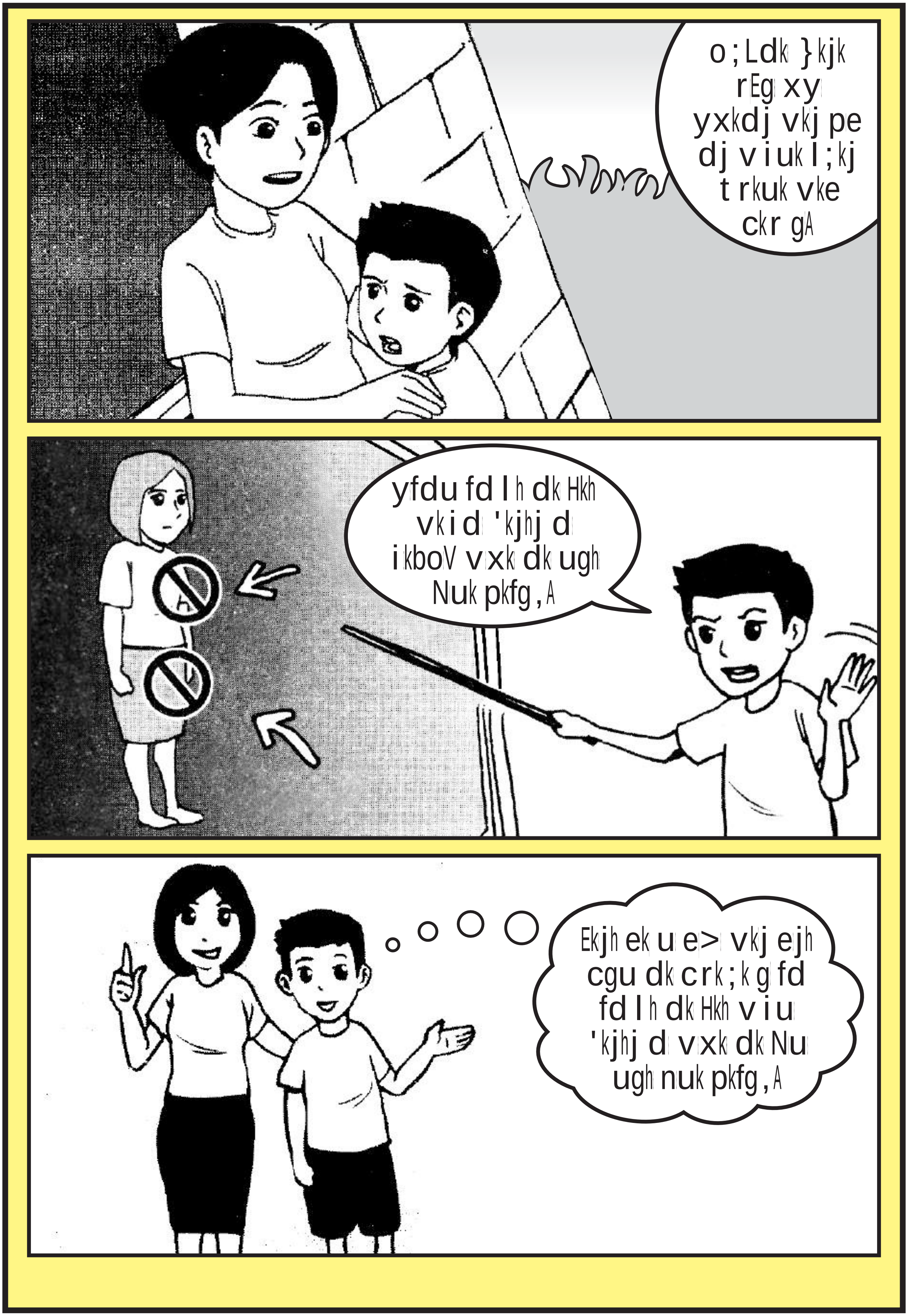
o;Ldk }kjk rEg xy yxkdj vkj pe dj viuk l;kj trkuk vke ckr gA
yfdu fd lh dk Hkh vkid 'kjhj d ikboV vxk dk ugh Nuk pkfg,A
Ekjh ek u e> vkj ejh cgu dk crk;k g fd fd lh dk Hkh viu 'kjhj d vxk dk Nu ugh nuk pkfg,A

e> ,l er Nvk vyd! e> ;g i l n ugh! RkEg bl rjg e> Nu dk dkb vf/kdkj ugh e vi uh ek dk l c dN crku tk jgk gA
vkj Okgk l Hkkx x;kA
fVd
fVd

ek] vyd e> ij'kku djrk g vkj ej ikboV vxk dk Nrk gA
jkt] re cgr cgknj gkA reu e> crk fn;k vPNk fd;kA vyd cjk vkneh gA el okn k djrh g fd og vc dHkh rEgkj lkeu ugh vk,xkA

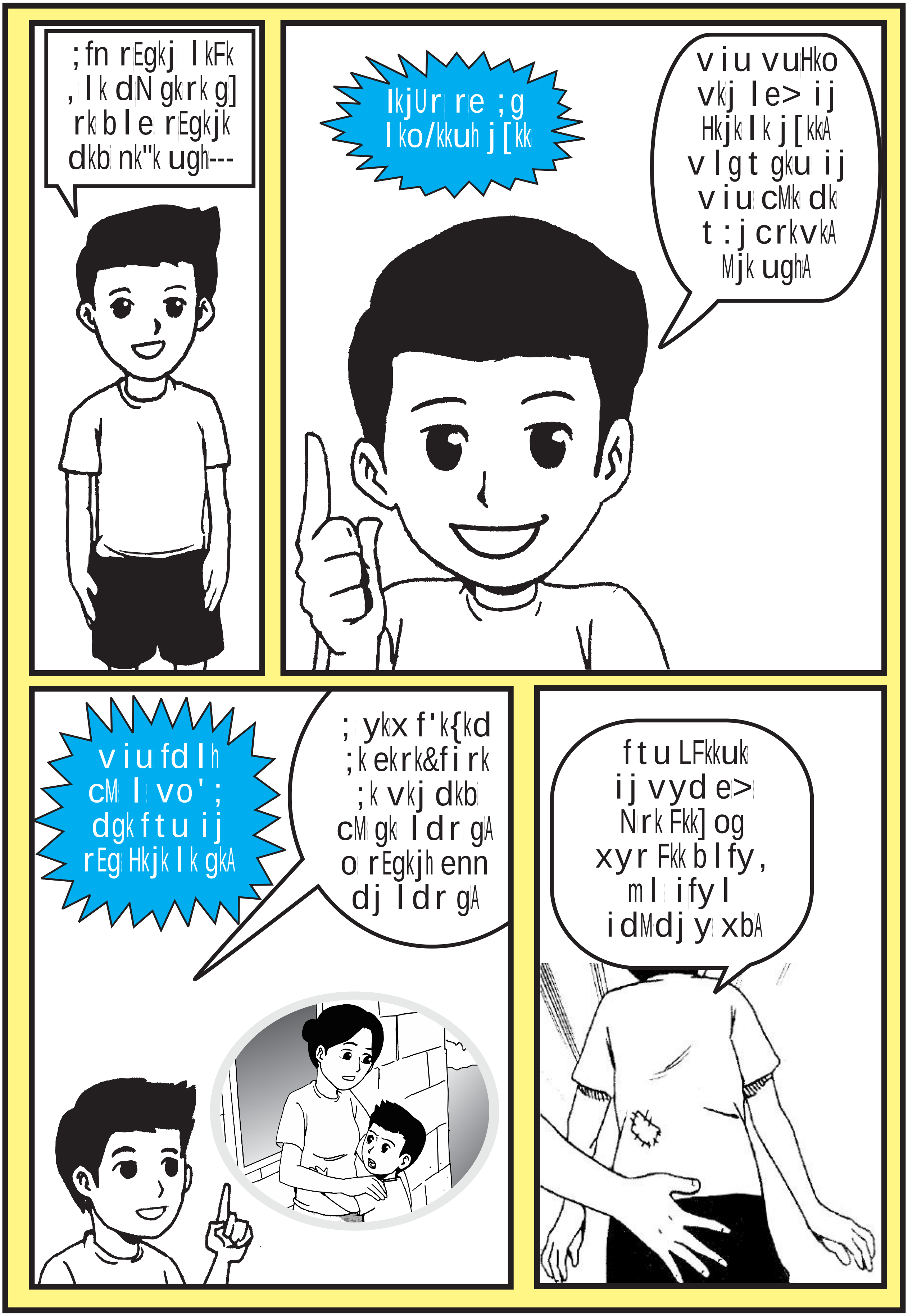
; fn rEgkj l kFk ,l k dN gkrk g] rk b l e rEgkjk dkb nk"k ugh---
lkjUr re ;g lko/kkuh j[kk
viu vuHko vkj le> ij Hkjk lk j[kkA vlgt gku ij viu cMk dk t :j crkvkA Mjk ughA
viu fdlh cM l vo';dgk ftu ij rEg Hkjk lk gkA
; ykx f'k{kd ;k ekrk&firk ;k vkj dkb cM gk ldr gA o rEgkjh enn dj ldr gA
ftu LFkkuk ij vyd e> Nrk Fkk] og xyr Fkk b lfy, ml ifyl idMdj y xbA

vc ej fy, lc dN Bhd g] D;kfd eu v iuh ek dk lkjh ckr crk nh FkhA
ejh dgkuh l rEg v iuh lj{kk djue enn fey xhA ejh 'kHkdkeuk,

;fn re viuh lj{kk dk ckj
e fpfUrr gk rk bu uEcjk
ij ckr dj ldr gk&

Hkkjr

100 & jk"Vh; ifyl
1098 & cky lgk;rk gr

¼pkbYM gYi ykbu½

viu ifjokj ;k vkl&ikl miyC/k dkb uEcj
ft l re ;gk fy[kuk pkgk&

D;k jkt dh dgkuh rEg ;kn g&